आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 1 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2010 ★ माघ 2066

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...

स्वर्णतीर्थ

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोने ◆ चांदी हिरा ◆ मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव ◆ औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा, नत्थि वा पुणो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.6

हस्तगत हैं कामभोग ये,
संदिग्ध भविष्य के भोग यहाँ।
है किसे पता परलोक रम्य,
उत्तर इसका है स्पष्ट कहाँ? ।।

जनवरी, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2536
माघ, 2066

वर्ष 67 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती की दृष्टि में नारी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	गुणरत्नाकर महापुरुष	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	11
	असीम श्रद्धा के केन्द्र : गुरु भगवन्त	-श्री मोफतराज पी मुणोत	19
हस्ती-शताब्दी-	आचार्य हस्ती : जीवन झाँकी	-श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	24
	अमरत्व का वह उपासक	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	27
	श्री हस्तिमल्ल शतक	-श्री सुमन्त भद्र	33
	हस्ती-गुणसौरभ	-श्री कस्तूरचन्द बाफना	36
शोधालेख -	भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(6)	-प्रो. सागरमल जैन	40
अध्यात्म-	देह और आत्मा की भिन्नता	- श्री कन्हैयालाल लोढा	47
युवा-स्तम्भ-	धर्म : क्या, कब, कहाँ, कैसे?	-श्री राजेन्द्र कुमार संचेती	49
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (54)	-श्री धर्मचन्द जैन	53
धारावाहिक-	धरोहर (3)	-श्रीमती पारसकंवर भंडारी	56
उपन्यास-	सुबह की धूप (11)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	60
प्रासङ्गिक-	विहार-रत संतों की सुरक्षा का प्रश्न	- डॉ. जीवराज जैन	63
नारी-स्तम्भ-	क्या खोया और क्या पाया?	-श्री पारसमल चण्डालिया	67
बाल-स्तम्भ -	कपिल मुनि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	70
स्वास्थ्य विज्ञान -	रात्रि-भोजन का निषेध स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	74
प्रतियोगिता-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (24)		79
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (1)		82
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	85
कविता/गीत-	मेरी हर श्वास में हैं सद्गुरु	-श्री जवाहरलाल बाघमार	23
	श्री हस्ती गणी के शरणों में	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	39
	अध्यात्म-चेतना वर्ष : तीन मुक्तक	- डॉ. दिलीप धींग	46
	जीवन उसका धन्य	- डॉ. राकेश ओस्तवाल	66
विचार-	सुखी जीवन के लिए संकल्प	-श्री अभयकुमार जैन	83
	जिनवाणी	- श्री नितेश नागोता जैन	51
	मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती	-श्री सुरेशचन्द धींग	52
	Apology	- *Miss Minu Jain*	62
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		84
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		86
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		121

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती की दृष्टि में नारी

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

परिवार के विकास की वास्तविक धुरी नारी है। वही बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करती है। पति की सचिव, मित्र एवं गृहिणी बनकर उसे प्रसन्न रखती है तथा घर-परिवार को शांतिपूर्ण माहौल में विकास की दृष्टि प्रदान करती है। एक ओर अग्रजों की सेवा-शुश्रूषा कर उन्हें आदर-सम्मान प्रदान करती है तथा दूसरी ओर अनुजों को स्नेह एवं सहयोग प्रदान कर उनके विकास में भागीदार बनती है। जैनाचार्य हस्ती की दृष्टि में पारिवारिक जीवन की सफलता बहुत अंशों में गृहिणी की क्षमता पर निर्भर करती है। दुर्दैव से यदि गृहिणी कर्कशा, कटुभाषिणी, कुशीला तथा अनुदार मिल जाती है तो व्यक्ति का न केवल आत्मसम्मान और गौरव घटता है, बल्कि घर की सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाती है। ऐसी नारी को गृहिणी की बजाय ग्रहणी (ग्रहण लगाने वाली) कहना अधिक संगत लगता है।

गुरुदेव हस्ती का मन्तव्य था कि योग्य स्त्री सम्पूर्ण घर को सुधार सकती है, नास्तिक पुरुष के मन में भी आस्तिकता का संचार कर सकती है। स्त्री को गृहिणी इसीलिए कहा गया है कि वह घर की आन्तरिक व्यवस्था, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, सुसंस्कार एवं उनका समुचित लालन-पालन करने के साथ आतिथ्य-सत्कार आदि में भी संलग्न रहती है। बच्चों में जो संस्कार माताएँ डाल सकती हैं वे विद्यालयों में सम्भव नहीं हैं। माताएँ बालक की प्रथम गुरु होती हैं। बालक को जिद्दी बनाना है अथवा आज्ञाकारी, इसकी दिशा माताएँ अपने व्यवहार से तय कर देती हैं। बच्चों की उचित मांग को समय पर पूरा करने एवं अनुचित मांग को उसके आग्रह करने पर भी उसको समझाकर पूरा न करने से बच्चा जिद्दी नहीं होता है।

नारी के विविध रूप है- एक बालिका के रूप में, एक बहू के रूप में, एक बहन के रूप में, एक पत्नी के रूप में, एक माता के रूप में, एक ननद के रूप में, एक देवरानी-जेठानी के रूप में आदि। आचार्य हस्ती नारी के इन विविध रूपों

को दृष्टि में रखकर चिन्तन किया करते थे तथा प्रवचनों के माध्यम से अथवा भजनों के माध्यम से उनके जीवन-व्यवहार के परिष्कार के लिए आत्मीयता के साथ संदेश दिया करते थे।

गुरुदेव ने बालिका-शिक्षा पर अधिक बल दिया। उनकी मान्यता थी कि बालिका देहली-दीपिका होती है। वह पितृगृह को भी प्रकाशित करती है तो श्वसुर गृह को भी प्रकाशित करती है। बालिका को दिए गए संस्कार भावी परिवार-व्यवस्था के सौहार्द के लिए आवश्यक हैं। वे मात्र विद्यालयीय शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, अपितु जीवन-निर्माण की शिक्षा को भी आवश्यक मानते थे। उनका चिन्तन था- "युवकों की अपेक्षा हमारी बच्चियाँ अधिक शिक्षण ले रही हैं तो आपकी भी यह जिम्मेदारी है कि उनका जीवन सदाचारी रहे और व्यावहारिक शिक्षा के साथ उनको नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा भी प्राप्त हो। यदि ऐसा नहीं होगा तो आपका जीवन संतान की ओर से यशस्वी नहीं रहेगा और आपको खतरा बना रहेगा।" गुरुदेव का यह कथन अभिभावकों को सावधान कर रहा है कि हम आजीविकोपार्जन वाली शिक्षा पर जितना बल प्रदान कर रहे हैं क्या उसका कुछ अंश भी उसके चारित्रिक-निर्माण की शिक्षा पर प्रदान कर रहे हैं? बालिका ही भावी परिवारों की नींव होती है। उसमें यदि जीवन-मूल्यों का विकास नहीं हुआ, सत्संस्कारों का बीजारोपण नहीं हुआ, चारित्रिक-विकास में उसकी दृढ़ श्रद्धा नहीं हुई तो वह जहाँ भी जाएगी उस परिवार में शान्ति, समन्वय एवं धार्मिक वातावरण की आशा नहीं की जा सकती।

आचार्य हस्ती ने अनेक बहनों के जीवन का निर्माण किया, उन्हें सत्शिक्षा प्रदान कर आत्मविश्वास के साथ स्वयं का विकास करने का मार्ग प्रशस्त किया। आज हम भगवान् महावीर की श्राविकाओं का नामोच्चारण कर प्रसन्न होते हैं एवं उनसे प्रेरणा ग्रहण करने की बात कहते हैं। उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव की संस्कारी श्राविकाओं की गणना की जाए तो उनकी संख्या शताधिक है। अनेक विधवा श्राविकाओं ने किस प्रकार अपने जीवन को परिवार, समाज एवं धर्म के लिए उपयोगी बनाया, सधवा नारियों ने किस प्रकार अपने परिवार को सत्संस्कार प्रदान कर धर्मनिष्ठ बनाया, प्रतिस्रोत में किस प्रकार अनुस्रोत की लहर बहाई, खोज करने पर अनेक उदाहरण मिल सकते हैं। ऐसी उत्कृष्ट श्राविकाओं की सूची बनाने की आवश्यकता है। गुरुदेव के प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक

नारियों एवं युवतियों ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की तथा वे आत्म-कल्याण के साथ जिनशासन की प्रभावना में संलग्न हैं।

गुरुदेव को महिलाओं से बहुत आशा थी। वे सबके लिए बहन शब्द का प्रयोग करते थे। यद्यपि महिलाएँ अंधविश्वास, माला और जप को ही धर्म का स्वरूप समझती थीं, तथापि गुरुदेव उनकी अंधी मान्यताओं को सदा दूर करने की प्रेरणा करते रहते थे तथा धर्म का सही स्वरूप प्रस्तुत किया करते थे। परम्परा एवं रूढ़ि के संचालन में महिलाओं की भूमिका अधिक होती है। उनमें श्रद्धा का भाव भी विशेष होता है। गुरुदेव के प्रति श्रद्धालु बहनों की कोई कमी नहीं रही तथा अनेक बहनों ने सच्चे मन से गुरुदेव के वचनों पर आस्था रखकर अपना विकास किया। वे सामायिक और स्वाध्याय से जुड़ी, अनेक बहिनें पर्युषण पर्व में भी स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ देने के लिए तत्पर हुईं। इसका कारण था गुरुदेव की भावपूर्ण प्रेरणा, यथा-

प्यारी बहनों! समझो धर्म-मर्म को जग फैलाना है,
भावी कुल अरु देश की तुमको धात्री बनना है।
सकल जगत् में शांति और सौजन्य बढ़ाना है,
सादा वेश सती को सुखकर, पाप घटाना है।
आरम्भ होवे अल्प, ममत्व का रोग घटाना है।।

धर्म का असली स्वरूप समझकर परिवार के माध्यम से एवं स्वाध्यायी के रूप में उसे सम्पूर्ण जग में फैलाने का कार्य धर्मश्रद्धालु बहिनें अधिक कुशलता से कर सकती हैं। इसका उदाहरण हमें प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों में दिखाई पड़ता है। नारी होकर उन्होंने जिस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में अपनी विचारधारा को फैलाया है, सम्भवतः इसी प्रकार धर्म का सही स्वरूप नारी सक्षमता पूर्वक प्रसृत कर सकती है। किन्तु इसके लिए उनका स्वयं का धर्म के सच्चे स्वरूप से परिचित होना आवश्यक है। वे अपनी शील की रक्षा करते हुए देश की धात्री बन सकती हैं। समस्त जगत् में शान्ति और सौजन्य की विधात्री हो सकती हैं। लालच और काम-वासना का त्याग करती हुई नारी जब निर्भीकता पूर्वक सत्यपथ पर अडिगता से आगे बढ़ती है, आजाद होकर भी स्वच्छन्दता से दूर रहकर विवेक का आदर करती है तो वे सम्पूर्ण जगत् के लिए वरदान सिद्ध हो सकती हैं।

माता का पद पूज्य पद होता है। पुरुष कितना भी अहंकारी हो, किन्तु

माता के समक्ष उसके मन में श्रद्धा का भाव आ ही जाता है। ऋषभदेव एवं महावीर प्रभु ने जिस प्रकार माता के गौरव में अभिवृद्धि की, उसी प्रकार हर सन्नारी गौरव की अधिकारिणी है। बाह्य आभूषण से लकदक होने में नारी की शोभा नहीं, शील का आभूषण ही उसकी शोभा है। गुरुदेव अपने भजन में कहते थे-

धारो, धारो री सौभागिन, शील की चून्दड़ी जी।
झूठे भूषण में मत राचो, शील धर्म को भूषण सांचो।।

आडम्बर एवं प्रदर्शन चाहे तपस्या में हो, चाहे धर्माराधना में हो, वह त्याज्य ही है। परिवार में नैतिकता एवं प्रामाणिकता की रक्षक नारी होती है। उसकी यदि मांग कम हो तो पति अनैतिक मार्ग की ओर कम अग्रसर होगा। यदि पति अनैतिकता पूर्वक धनार्जन करता है तो पत्नी उस पर नियन्त्रण कर सकती है। गुरुदेव ने प्रवचन में एक बार फरमाया था- "क्या किसी के घर में ऐसी धर्मपत्नी है जो अपने पति से पूछे कि आपने दस हजार रुपये इस महीने में मिलाये हैं, ये कैसे मिलाये या कहाँ से आये ? दस हजार रुपयों का आपको मुनाफा हुआ है तो कहीं आपने अन्याय से, पाप के गलत मार्ग से तो नहीं लिया ?" इस प्रकार पूछने वाली नारियाँ कितनी हैं? अधिकांश नारियाँ तो नीति-अनीति को नहीं देखतीं, उनको महंगा आभूषण लाकर दे दिया जाय तो वे प्रसन्न हो जाती हैं। किन्तु इससे धर्म एवं मूल्यों का उत्थान नहीं होता।

नर की अपेक्षा नारियाँ स्वभावतः कोमल, दयामयी और संवेदनशील होती हैं। किन्तु शिक्षा, सुविचार, सत्संगति एवं धर्म के सही स्वरूप को न समझने के कारण वे संकीर्ण विचार वाली बनकर स्वयं भी आत्म-कल्याण नहीं कर पातीं तथा परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए भी उनका योगदान सम्भव नहीं हो पाता। इसलिए अध्यात्मयोगी, महान् संत आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने फरमाया-

बहुत समय तक देह सजाया, घर-धंधा में समय बिताया।
निन्दा-विकथा ने छोड़, करो सत्कर्म को जी।।
सदाचार-सादापन धारो, ज्ञान ध्यान से तप सिणगारो।
पर उपकार ही भूषण खास, समझो मर्म को जी।।
पालो पालो री सोभागिन, बहनों धर्म को जी।।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(आचार्य गुरुदेव)

लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाण भागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरु सययमणुसासयंति, तेऽहं गुरु सययं पूययामि ॥13॥

अर्थः- कल्याणार्थी साधक के लिए चार शुद्धि के स्थान हैं- पाप कार्य के प्रति लज्जा (भय) रखना, दया का भाव, संयम और ब्रह्मचर्य। इसलिए शिष्य साधक को समझना चाहिए कि गुरु निरन्तर मुझे संयम की शिक्षा देते हैं, उन गुरुजनों की सदा मैं विनय-भक्ति करूँ।

जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासइ केवलं भारहं तु।
एवायरियो सुयसीलबुद्धिए, विरायइ सुरमज्झेव इंदो ॥14॥

अर्थः- जिस प्रकार रात्रि के व्यतीत होने पर प्रातःकाल तेज से देदीप्यमान सूर्य पूरे भारत को प्रकाशित करता है। इसी प्रकार आचार्य महाराज श्रुत-ज्ञान, चारित्र और बुद्धि से देवों में इन्द्र के समान शोभित होते हैं। वे स्व-पर के हृदयों को ज्ञान व दर्शन के प्रकाश से आलोकित करते हैं।

जहा ससी कोमुइ जोगजुत्तो, नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के, एवं गणी-सोहइ भिक्खुमज्झे ॥15॥

अर्थः- जैसे शरत्काल की पूर्णिमा के योग वाला चन्द्र ग्रह, नक्षत्र एवं तारा समूह से घिरा हुआ बादलों से रहित निर्मल आकाश में शोभा पाता है। ऐसे ही भिक्षु मण्डल में अपनी ज्ञान ज्योत्स्ना से आचार्य शोभित होते हैं।

महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए।
संपाविउकामे अणुत्तराइं, आराहए तोसए धम्मकामी ॥16॥

अर्थः- सर्वश्रेष्ठ गुणों को प्राप्त करने की इच्छा वाला धर्मकामी पुरुष समाधि योग और श्रुत, शील एवं बुद्धि के महान् आकर महर्षि आचार्य महाराज की आराधना करे तथा उन्हें प्रसन्न करे।

सुच्चाण मेहावि सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरियऽप्पमत्तो।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावइ सिद्धिमणुत्तरं ॥17॥

अर्थः- मेधावी मुनि पूर्वकथित सुभाषित वचनों को सुनकर अप्रमत्त भाव से आचार्य की सेवा करे। ऐसा मुनि गुरु चरणों में ज्ञानादि अनेक गुणों की आराधना करके सर्वश्रेष्ठ सिद्धि पद को प्राप्त करता है।

-दशवैकालिक सूत्र, नौवाँ अध्ययन, प्रथम उद्देशक-13-17

अमृत-चिन्तन

विचार-वाहिनी

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- राज्य शासन में जैसे ईमानदार अधिकारी एवं सैनिक आवश्यक हैं ठीक ऐसे ही धर्मशासन में भी आचार्य, उपाध्याय आदि सुयोग्य शासकों के साथ ईमानदार श्रावक-श्राविकाओं का सैन्य दल भी चाहिये। श्रावक-श्राविकाएँ साधु-साध्वी के व्यक्तिगत लपेटे में नहीं आएँ। वे संघ को मुख्य मानकर संयम के अनुरूप सेवा करें।
- संघ मुख्य है, व्यक्ति मुख्य नहीं। संघ सदा रहेगा, व्यक्ति सदा नहीं रहेगा। व्यक्ति चाहे साधु हो, साध्वी हो या श्रावक-श्राविका। व्यक्ति का रक्षण संघ द्वारा होता है। नन्दीसूत्र की स्थिरावली में तीर्थंकर भगवान की स्तुति रूप गाथा तो तीन बताई, पर संघ की महिमा आठ उपमाओं से पन्द्रह गाथाओं में गायी गई है- संघ मेरु है, संघ नगर है आदि।
- श्रावक रक्षक होता है और रक्षक का कर्तव्य है कि वह साधु-साध्वी के आहार-विहार, शिक्षा-दीक्षा और ज्ञान-ध्यान में निर्दोष मार्ग का सहयोगी रहे।
- हमें जो भी साधना करनी है जिनरंजन के लिए करनी है, जनरंजन के लिए नहीं। साधना के लिए जिनरंजन चाहिये, जनरंजन नहीं। जनरंजन के व्यवहार में साधक-वर्ग में साधना का लक्ष्य गौण हो जाता है, भले ही उनको अनेक भक्त मिल जायें। खयाल रखो, जनरंजन से वाहवाही हो जायेगी, कीर्ति हो जायेगी, लेकिन आत्मोत्थान नहीं होगा। जिन-रंजन में आत्मा का कहीं पतन न हो जाए इसका चिन्तन रहता है।
- जिनरंजन की रुचि वाले श्रावक अपने आत्मोत्थान के साथ संत-समुदाय को भी वीतराग भगवान और संघ की आज्ञा-पालन करवाने में सहयोगी होते हैं।
- सामान्य जनों में औरतों से अधिक बातें करने वाला या पैसा रखने वाला संत तो अपराधी रूप में नज़र आता है, पर आज्ञा का उल्लंघन करने वाला उस तरह से अपराधी के रूप में नज़र नहीं आता। आज्ञा का विराधक कम दोषी है ऐसा नहीं है, आज्ञा सभी व्रतों का मूलाधार है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

आचार्य हस्ती जन्मशती

गुणरत्नाकर महापुरुष

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

हमारे यहाँ तीन प्रकार के आचार्य कहे गये हैं- कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य। आचार्य भगवन्त कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य थे। व्यक्ति को आकर्षित करने की उनमें अद्‌भुत कला थी। उनके संसर्ग में जो भी आता, उसे वे आगे बढ़ाते। उनके पास जो कोई आया, लेकर ही गया। कहना चाहिये- वे चुम्बक थे, आकर्षित करने की उनकी कला अपने आप में अनूठी थी। आचार्य भगवन्त पारस थे- लोहे को सोना बनाना जानते थे। इधर-उधर भटकने वाले, दुर्व्यसनों के शिकार और साधारण से साधारण जिस किसी व्यक्ति ने उस महापुरुष के दर्शन किए उसके जीवन में कोई न कोई प्रभाव अवश्य हुआ।

गुरुदेव ने चातुर्मास के लिये मुझे दिल्ली भेजा। मैं नाम लेकर चला गया। दिल्ली में कई ऐसे श्रावक थे, जिन्होंने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के दर्शन नहीं किये। आचार्य भगवन्त का तीस वर्ष पहले दिल्ली में चातुर्मास हुआ था, परन्तु पुराने-पुराने श्रावक तो चले गये और बच्चे जवान हो गये। दिल्ली वासियों ने जब संतों का जीवन देखा तो उनके मन में आया- इनके गुरु कैसे होंगे? दिल्ली के श्रावक आचार्य भगवंत के दर्शनार्थ आये। आकर कहने लगे- ''महाराज! हमने तो भगवन्त देख लिये।' गुरुदेव हर व्यक्ति के जीवन को ऊँचा उठाने वाले कलाचार्य थे।

उस महापुरुष ने एक शिल्पाचार्य के रूप में भी कइयों का जीवन निर्माण किया। मेरी दीक्षा के बाद बड़ी दीक्षा महामंदिर में हुई। गुरुदेव मूथाजी के मंदिर पधारे और कहा- 'मेरे को अप्रमत्त भाव में रहकर बतलाना।' हर समय उनकी यही शिक्षा रहती थी। वे यथावसर शिक्षा देते ही रहते थे। जयपुर में रामनिवास बाग से गुजर रहे थे। उस समय शेर गरज रहा था। आचार्य भगवंत से मैंने कहा- ''बाबजी! शेर गरज रहा है।'' गुरुदेव बोले- ''मैं हूँ, मैं हूँ कह कर बता रहा है कि मैं पिंजरे में पड़ा हूँ। इसलिये मेरी शक्ति काम नहीं कर रही है। यह आत्मा भी शरीर रूपी पिंजरे में रही हुई है। आत्मा भी समय-समय पर हुंकारती है- मैं हूँ

अर्थात् मैं अनन्त ज्ञान से सम्पन्न हूँ, मैं अनन्त दर्शन से सम्पन्न हूँ आदि आदि।''

एक बार भगवंत कॉलेज में खड़े थे। पास में पत्थर गढ़ने वाले व्यक्ति पत्थर गढ़ रहे थे। पत्थर गढ़ते वह कारीगर पानी छांट रहा था। गुरुदेव ने पूछा- 'यह क्या कर रहा है?' मैंने कहा- 'काम कर रहा है।' आचार्य भगवन्त ने कहा- ''पत्थर पर पानी डालकर नरम बना रहा है, पत्थर कोमल होगा तो गढ़ा जाएगा।'' आचार्य भगवंत ने आगे फरमाया कि 'शिष्य भी कोमल होगा तो गढ़ा जाएगा।' वे हर समय जीवन-निर्माण की बात बताया करते थे। उनकी छोटी-छोटी बातों में कितनी बड़ी शिक्षाएँ होती थीं। वे शिल्पाचार्य की तरह थे।

धर्माचार्य तो वे थे ही। वर्षों तक चतुर्विध संघ को कुशलता पूर्वक संभाला और उसी का परिणाम है कि आज यह अनेक रंगों में दिखाई दे रहा है। आज चतुर्विध संघ का जो सुन्दर रूप दिखाई दे रहा है, वह उन्हीं महापुरुषों के पुण्य प्रताप से है।

आचार्य भगवंत का जीवन कैसा था, आपने देखा है, आप जानते भी हैं। उनमें थकावट का कभी काम नहीं। वे कितना पुरुषार्थ करते थे। वे सामायिक-स्वाध्याय के लिये अधिक बल देते थे। दिल्ली वाले श्रावक आचार्य भगवंत के श्री चरणों में चातुर्मास की विनति लेकर आये। उनसे भगवंत ने कहा- 'आप प्रति वर्ष विनति लेकर आते हैं तो क्यों नहीं आप सामायिक-स्वाध्याय का सिलसिला प्रारम्भ कर अपने पैरों पर खड़े होते हैं?'

आचार्य भगवन्त सदा कुछ न कुछ देते ही रहते। जब तक स्वस्थ रहे स्थान-स्थान पर भ्रमण कर ज्ञान दान दिया और अन्त समय में भी कितनी उदारता, विशालता। वे परम्परा के आचार्य होकर भी कभी बंधे नहीं रहे। वे फरमाते- 'जिनको जहाँ श्रद्धा हो वहाँ जाओ, पर कुछ न कुछ करो जरूर।'

आचार्य भगवन्त की विशालता अनूठी थी। वे श्रमण संघ में रहे, तब भी वही बात, श्रमण संघ में नहीं रहे तब भी वही बात। श्रमण संघ से बाहर निकले उस समय श्रावकों ने कहा- किसके बलबूते पर अलग हो रहे हो? आचार्य भगवंत ने कहा- 'मैं आत्मा के बलबूते पर अलग हो रहा हूँ। मैं अपनी आत्म-शांति और समाधि के लिये अलग हो रहा हूँ।' उस समय लोग सोचने लगे- 'कौन पूछेगा?', पर आपने देखा है- आचार्य भगवंत जहाँ भी पधारे, सब

जगह श्रद्धालु भक्तों से स्थानक सदा भरे रहे। चाहे प्रवचन का समय हो, चाहे विहार का, श्रावक-श्राविकाओं का निरन्तर दर्शन-वंदन के लिये आवागमन बना ही रहा। स्थानक छोटे पड़ने लग गये। उनका जबरदस्त प्रभाव था, कारण कि वे सबके थे, सब उनके थे।

वे महापुरुष गुण-कीर्तन पसन्द ही नहीं करते थे। वे स्वयं गुणानुवाद के लिए रोक लगा देते थे। मदनगंज में आचार्य पद दिवस था। उस समय संतों के बोल चुकने के बाद मेरा नम्बर था, लेकिन आचार्य भगवन्त ने उद्‌बोधन दे दिया। उसके बाद मुझसे कहा- "तुम्हें भगवान् ऋषभदेव के लिए बोलना है। मेरे बारे में बोलने की जरूरत नहीं। कैसे निस्पृही थे वे महापुरुष। वे प्रशंसा चाहते ही नहीं थे।"

प्रशंसा चाहने या कहने से नहीं मिलती। वह तो गुणों के कारण सहज मिलती है। आचार्य भगवन्त नहीं चाहते थे कि लोग इकट्ठे हों पर उनकी पुण्य प्रकृति के कारण लोगों का हर समय आना जाना बना ही रहता था। अजमेर दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर आचार्य श्री का मन नहीं था, पर श्रावकों की इच्छा थी इसलिये वहाँ दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। वे महापुरुष स्वयं की इच्छा नहीं होते हुए भी किसी का मन भी नहीं तोड़ते थे। उन्होंने त्याग-प्रत्याख्यान की बात रख कर श्रावक समाज के सामने त्याग-तप की रूपरेखा रख दी। उनके पुण्य प्रताप से कई बारह व्रतधारी श्रावक बने और व्यसनों का उस समय त्याग काफी लोगों ने किया।

आचार्य भगवन्त ने बचपन से लेकर अन्तिम समय तक हर क्षेत्र में अपना कीर्तिमान स्थापित किया। दस वर्ष की अवस्था में दीक्षित हुए। बचपन की एक ऐसी अवस्था, जब एक बच्चा अपने कपड़ों को भी अच्छी तरह से नहीं सम्हाल पाता है, ऐसे समय में उन्होंने पाँच महाव्रतों को अंगीकार किया। अपने जीवन को गुरुओं के चरणों में समर्पित किया। 15 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने उन्हें तीसरे पद के उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया। 20 वर्ष की अवस्था में चतुर्विध संघ की सार संभाल करना, कोई साधारण बात नहीं थी। पूज्य महाराज इतने आदरणीय थे कि सारा चतुर्विध संघ उनके एक-एक आदेश का तत्परता के साथ पालन करने के लिये तैयार रहता

था। वह मानता था कि पूज्य श्री ने कुछ कह दिया वह सही है। सबका यह मानना था कि उन्होंने किया, ठीक किया, सोच-विचार करके किया है।

ज्ञान एवं क्रिया के क्षेत्र में उनमें इतनी बड़ी विशेषता थी कि जिसके कारण एक परम्परा के आचार्य होते हुए भी उनकी ख्याति पूरे समाज में जबरदस्त थी। यह भी एक कारण है कि उन्होंने नये-नये क्षेत्रों में सफल चातुर्मास किये। समय-समय पर अपने साधक-बन्धुओं के साथ समाज में आती हुई विकृतियों को दूर करने का प्रयास किया।

श्रावक संघ के प्रति भी उनके मन में दुःख-दर्द था। इसी बात को लेकर वर्षों तक मंथन के बाद उन्होंने मक्खन या सार निकालकर समझाया कि संसार में प्राणी दुःखी क्यों है, पीड़ित क्यों है, उसे खेद क्यों है? उसे दुःख दर्द को दूर करने के लिये सामायिक और स्वाध्याय का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य मोह और अज्ञान के कारण दुःखी है। मोह और ममता को मिटाने के लिए तथा समता को प्राप्त करने के लिए सामायिक आवश्यक है। अज्ञान को दूर करने एवं ज्ञान के प्रकाश को जगाने के लिये उन्होंने स्वाध्याय करना बहुत जरूरी बताया।

आचार्यप्रवर का यही उपदेश था कि साधक स्वाध्याय द्वारा आगमों का अध्ययन, चिंतन-मनन कर स्व के ज्ञान द्वारा अपने आपको समझे। उसके लिए आपने विश्व को सामायिक और स्वाध्याय का फरमान दिया। आज सभी कहते हैं- **गुरु हस्ती के दो संदेश, सामायिक-स्वाध्याय विशेष।**

पूज्यश्री का कितना बड़ा उपकार है समाज और व्यक्ति पर। सामायिक और स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार में जीवन समर्पित कर आपश्री ने ज्ञान और क्रिया दोनों ही क्षेत्रों में श्रावक-श्राविकाओं को अग्रसर किया। स्वाध्याय से ज्ञान और सामायिक से समताभाव की प्राप्ति होती है। ये दोनों ज्यों-ज्यों जीवन में अधिकाधिक स्थान पायेंगे, त्यों-त्यों वीतरागभाव में वृद्धि होगी। सामायिक और स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार में पूज्य आचार्यश्री इस तरह समर्पित रहे कि अपने अंतिम वर्षों में वे सामायिक और स्वाध्याय के पर्यायवाची बन गए।

आचार्य भगवन्त तो कहते थे- सामायिक-स्वाध्याय का प्रणेता मैं नहीं हूँ, भगवान् महावीर प्रणेता हैं। मैं तो उनके बतलाये हुए संदेश को जन-जन

तक पहुँचाने की कोशिश करता हूँ। ये मेरे द्वारा प्रणीत किया हुआ है, ऐसा नहीं हैं। भगवन्त फरमा कर गये हैं, शास्त्र को जन-जन तक पहुँचाना है। कहने का आशय यह है कि स्वाध्याय एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर सन्मार्ग को प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्य प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म.सा. ने संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों के लिए स्वाध्याय का बीजारोपण किया, पूज्य आचार्य गुरुदेव ने अंकुरित स्वाध्याय-पौध की विशेष देखभाल कर उसे विकसित किया। आपने स्वाध्यायी तैयार करने की प्रवृत्ति को प्राथमिकता प्रदान करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में स्वाध्याय-संघ स्थापित करने की महती प्रेरणा की।

आज आचार्य श्री के उन्हीं सत्प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप भारतभर में स्वाध्याय-संघों की विशाल संख्या है और प्रतिवर्ष नए स्वाध्यायी तैयार होते हैं। महापर्व के प्रसंग पर ये स्वाध्यायी-बंधु आठ दिन तक बाहर रहकर प्रार्थना, प्रवचन, प्रत्याख्यान, आलोचना, प्रतिक्रमण आदि की व्यवस्था करते हैं और इस तरह धर्म की प्रभावना कर चातुर्मास से रिक्त क्षेत्रों में धर्म की गंगा बहाते हैं।

गुरुदेव फरमाते थे कि धर्म-स्थान पर आकर शांति के साथ सामायिक करें, यह धर्मस्थान की शोभा है।

आचार्य भगवान् के गुण समूह को उनकी विशेषताओं के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) चुम्बकीय गुण और (2) पारस पत्थर के सदृश गुण।

आचार्य भगवन्त के चुम्बकीय गुणों के कारण ही जो भी व्यक्ति एक बार उनके निकट आकर उनके दर्शन पा जाता, उनके चरणारविन्द को स्पर्श कर लेता, वह सदा के लिये आपका श्रद्धालु भक्त बन जाता। आपके गुणसमूह की दूसरी विशेषता पारस पत्थर के तुल्य थी। पारस पत्थर जिस प्रकार लोहे को सोना बना देता है, उसी प्रकार आचार्यप्रवर के सम्पर्क में आने वाला भोगी व्यक्ति त्यागी और विराधक आराधक बन जाता था।

जो भी आचार्य श्री के सम्पर्क में आया, उनके उपदेशों का जिसने भी अमृत पान किया, उनकी बताई हुई शिक्षाओं, उनकी दी हुई प्रेरणाओं को हृदयंगम कर उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ा तो वह आध्यात्मिक पथ पर आगे

बढ़ता चला गया। आचार्य श्री भक्त में भगवान् के दर्शन करते थे। उनका स्वयं का कथन था कि साधक को भक्त नहीं बनना है, भगवान् बनना है। आराधक से आराध्य, उपासक से उपास्य, साधक से सिद्ध बन जाने का मार्ग प्रशस्त करना उनका लक्ष्य था।

गुरुदेव के अनेक गुणों में एक गुण था- उनका अप्रमत्त जीवन। प्रमाद उनके प्रायः नजदीक नहीं आ पाया। वे यदि रात को 10 बजे सोये और 11 बजे उठ गये तो फिर पूरी रात नहीं सोते थे। माला, ध्यान आदि में ही समय व्यतीत करते थे।

वे अपने वचन के निर्वहन में भी पक्के थे। 'प्राण जाय पर वचन न जाय।', कथन का वे निर्वाह करते थे। जीवन के अंतिम समय में बड़े-बड़े नगरों एवं डॉक्टरों की सुविधाओं को त्याग कर निमाज जैसे छोटे ग्राम की ओर प्रयाण करना यही सिद्ध करता है।

एक अन्य प्रसंग है। आपने अहमदाबाद का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर जयपुर की ओर विहार किया। उस समय इतिहास-लेखन का कार्य चल रहा था। आपश्री को कुछ ही दूर स्थित एक यति जी का पुरातन ग्रंथ-भंडार देखना था। आपने यति जी को कहलवा दिया था। संतों को भी अपने भाव बता दिये थे। सूचना मिली कि यतिजी कहीं बाहर गए हुए हैं। इधर जयपुर में एक दीक्षा-प्रसंग था। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया-"भगवन्! यतिजी तो हैं नहीं। अतः सीधे ही जयपुर की ओर विहार कर लें।" आपश्री ने फरमाया-"मैंने उनको वचन दे रखा है और मैं अपनी ओर से वचन तोड़ूँगा नहीं।"

आचार्यश्री करुणा-सागर थे, उनका हृदय कमल की तरह कोमल था। वे परदुःख कातर थे। 'संत हृदय नवनीत समाना' के अनुसार उनका हृदय मक्खन की तरह मुलायम था। पर-पीड़ा से तुरंत पिघल जाते थे। विशेषता यह कि कोई भी दुःखी, त्रस्त, सन्तप्त प्राणी उनके निकट आता, उनकी चरण-शरण ग्रहण करता तो आपश्री के आशीर्वाद से उसका समस्त दुःख, संताप, कष्ट दूर हो जाता था। यह आपश्री की प्रबल पुण्यवानी का ही प्रताप था। वे स्वयं किसी को कुछ कहते या बताते नहीं, पर जिसका उन पर, उनकी भक्ति पर, उनके वचनों पर अटल विश्वास होता था, उसका कष्ट, उसकी बाधाएँ स्वतः दूर हो

जाती थीं।

आचार्य गुरुदेव से विद्वान् प्रभावित थे, विचारक प्रभावित थे, आगमज्ञ प्रभावित थे, संत प्रभावित थे। कौन प्रभावित नहीं था उनसे? जब तक श्रमण संघ में रहे, वहाँ भी अपना वर्चस्व बनाए रखा। एक तेज था आपमें, संयम का तेज, ज्ञान का तेज, क्रिया का तेज, दृढ़ता का तेज। यही कारण था कि जब तक रहे, पूरे स्थानकवासी समाज पर ही नहीं, सम्पूर्ण जैन समाज पर आपका प्रभाव रहा।

आचार्य भगवन्त आगरा पधारे। उपाध्याय कवि मुनि श्री अमरचंद जी म.सा. के साथ आपका प्रवचन हुआ। मंत्रीजी ने पहले दिन कहा-''आज हमें ज्ञान और क्रिया का समन्वय देखने को मिल रहा है।' दूसरे दिन आचार्य श्री ने प्राचीन श्रमण-संस्कृति विषय पर इतना विद्वत्तापूर्ण एवं तथ्यगत व्याख्यान दिया कि मंत्रीजी कह उठे-'' आचार्य श्री हस्ती तो स्वयं ही ज्ञान एवं क्रिया के संगम हैं।''

इतना सब होते हुए भी गुरुदेव अत्यन्त सरल एवं विनम्रता की मूर्ति थे। आपके उपदेशों का श्रोताओं पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता था। कारण स्पष्ट था। वे पहले जीवन में उतारते थे और फिर कहते थे।

गुरुदेव ने अपने संयम-काल में विषम से विषम परिस्थितियों को भी धैर्यपूर्वक सहा। कितने ही संत विदा हो गये। कितने ही संतों की समाधि में, उनके संथारे में आपने साज दिया। जिस समय मैंने दीक्षा ली थी, उस समय तक का-सम्प्रदाय में कोई भी संत आज विद्यमान नहीं है। बाबाजी श्री सुजानमल जी म.सा., स्वामीजी श्री अमरचन्द जी म.सा. आदि अनेक संत गए, पर उस वक्त भी गुरुदेव विचलित नहीं हुए। बड़े आत्म-विश्वास से संयम-जगत् में रमण करते रहे। उनके जीवन का एक-एक गुण उनके भक्तों के जीवन में मूर्तिमंत हो, तभी उनका स्मरण सफल होगा।

ज्ञान और क्रिया में समन्वय जिस महापुरुष ने किया था वह महापुरुष संसार से विदा हो गया, परन्तु अन्तिम समय में भी समाधिमरण के साथ एक कीर्तिमान स्थापित किया। जन-जन को बता दिया कि मरण हो तो ऐसा हो महोत्सव की तरह। वैशाख शुक्ला अष्टमी के दिन रवि पुष्य नक्षत्र में नश्वर देह का परित्याग कर इस संसार से विदा हो गये, परन्तु बहुत बड़ी प्रेरणा दे गये कि

आप लोग भी इस तरह का जीवन जीयें जिससे अन्तिम समय शान्तिपूर्वक पण्डित मरण के साथ यहाँ से विदा हो सकें। लंबे समय का वह अभ्यास ही उनको समाधिमरण की तरफ प्रेरित कर गया। सामायिक और स्वाध्याय का संदेश देने वाले वे स्वयं ही सामायिकमय हो गये, उनके भीतर सामायिक उतर गयी। एक तो वे हैं जो सामायिक करते हैं तथा एक वे हैं जिनके जीवन में सामायिक होती है। करने में और होने में बड़ा अन्तर है। करना तो क्रिया है, होना आत्म-साक्षात्कार है। अगर आत्मा के अन्दर सामायिक हो गयी तो फिर करना क्या बचा? उन्होंने इस तरह से केवल सामायिक ही नहीं की, अपने जीवन के अन्दर सामायिक को उतार कर लोगों की धारणा को बदल दिया। लम्बे समय के बाद में किसी आचार्य को ऐसा समाधिमरण हुआ तो लोग कहने लगे कि आचार्य को समाधि मरण होता ही नहीं है, क्योंकि वे झंझटों में फंसे रहते हैं, चतुर्विध संघ की व्यवस्था के अन्दर इतने उलझे रहते हैं कि उनके मन में चिन्ता बनी रहती है, जिसके कारण वे अन्तिम समय समाधिमरण को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। किन्तु व्यक्ति क्या नहीं कर सकता है? चाहना के अनुसार अगर आचरण है, जीवन व्यवहार है, आत्मा में इस तरह की सच्ची लगन है तो मनुष्य सब कर सकता है।

अपने 71 वर्ष के संयम काल में आचार्य भगवन्त ने आचार्य, उपाध्याय तथा संत पदों का क्रियापूर्वक निर्वहन किया। 61 वर्ष आचार्य रहते हुए भी अपने को सदा 'संघ-सेवक शोभा शिष्य हस्ती' ही माना।

गुरुदेव द्वारा रचित स्तवन-भजन आत्मा को ऊपर उठाने वाले हैं। जब आचार्य भगवन्त ने निमाज में संथारा ग्रहण कर लिया था, तब उन्हें "मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं मुझे किसी की आस" "मैं हूँ उस नगरी का भूप जहाँ नहीं होती छाया धूप"- जैसे भजन सुनाये गये। सुनाते-सुनाते ही संत भाव विभोर हो उठते थे।

वे केवल उपदेशक ही नहीं, उपदेशों को आत्मसात् करने वाले थे। हम भी कभी-कभी सोचते हैं कि हमने कभी किसी केवली को नहीं देखा। गणधरों को नहीं देखा, पर हमें संतोष है कि हमने भगवन्त को देखा, हम भाग्यशाली हैं कि हमें उनका सान्निध्य मिला।

('नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से गृहीत)

आचार्य हस्ती जन्मशती

असीम श्रद्धा के केन्द्र : गुरु भगवन्त

श्री मोफतराज पी मुणोत

मेरी असीम श्रद्धा के केन्द्र पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का जब भी स्मरण करता हूँ, मन प्रमोद एवं उत्साह से भर जाता है। पूज्य गुरुदेव के रोम-रोम में सन्तपना था। उन्होंने उच्च से उच्चकोटि के सन्त का जीवन जीया। वे अप्रमत्तता, निर्लिप्तता और असाम्प्रदायिकता की प्रतिमूर्ति थे। गुरुदेव के जीवन में कथनी एवं करनी में मैंने एक प्रतिशत भी अन्तर नहीं पाया। वे ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम थे। उनकी साधना का मेरी दृष्टि में कोई सानी नहीं।

मेरे पिता श्री पुखराज जी मुणोत गुरुदेव के पक्के श्रावक थे। मैं भी बचपन में गुरुदेव के दर्शन करने जाया करता था, किन्तु अधिक निकटता सन् 1982 के जलगाँव चातुर्मास से आयी। मैं गुरुदेव के ज्यों-ज्यों निकट आया, त्यों-त्यों श्रद्धा की अगाधता बढ़ती ही गयी। वे सद्गुणों के पुंज थे। मुझे लगा, मैं अपने जीवन को गुरुदेव के सम्पर्क से उन्नत बना सकता हूँ। मैं याद करता हूँ, तो अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का अनुभव कर हर्षित होता हूँ।

सन् 1986 ई. के पीपाड़ चातुर्मास में मुझे गुरुदेव के सान्निध्य में रहने का अधिक अवसर मिला। चातुर्मास में मेरी धर्मपत्नी शरद चन्द्रिका ने अठाई तप किया। मैं इस खुशी में भोज का आयोजन करना चाहता था। भगवन्त को इस बात का पता लगा तो फरमाया- "आप लोगों ने शादी-ब्याह महंगे कर दिए, जीवन-मरण महंगा कर दिया, तपस्या को तो महँगा मत करो।" गुरुदेव के संकेत को मैं समझ गया और अठाई तप के उपलक्ष्य में भोज का विचार छोड़ दिया। उन्होंने इस उपलक्ष्य में मुझे कुछ त्याग करने की बात कही। मैंने सिगरेट छोड़ दी। उसके बाद सिगरेट पीने की कभी इच्छा ही नहीं हुई।

पाली में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्षीय दायित्व की चर्चा चली। तत्कालीन संघाध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, संघ-संरक्षक श्री नथमल जी हीरावत, संघ-कार्याध्यक्ष श्री

रतनलाल जी बाफना आदि सुश्रावकों ने मुझसे दायित्व स्वीकार करने को कहा। मैंने उनसे कहा कि मुझे यह प्रपंच लगता है। मैं बम्बई में रहता हूँ और संघ का कार्य-क्षेत्र राजस्थान में अधिक है। मैंने अपनी स्थिति संघ-सदस्यों के समक्ष स्पष्ट करते हुए कहा कि मैं न तो नियमित सामायिक ही करता हूँ और न मुझे धार्मिक-क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी है, बम्बई जाकर तो मैं दुनिया भूल जाता हूँ। अतः मेरी बजाय संघ की रीति-नीति जानने-समझने वाले व्यक्ति का चयन करना चाहिए। संघ के सुज्ञ श्रावकों को मेरे उत्तर से सन्तोष हुआ या नहीं, वे मुझे आचार्य भगवन्त के पास ले गये। वहाँ भी चर्चा चल निकली। श्रावकों की विचार-चर्चा को सुनकर गुरुदेव ने मात्र इतना ही फरमाया-"संघ-सेवा भी कर्म-निर्जरा का बड़ा साधन है" अल्पभाषी गुरुदेव की बात मेरी समझ में तब नहीं आयी, किन्तु अब मुझे इस वचन पर पूरा विश्वास है। **निःस्वार्थ संघ-सेवा अपने आत्म-विकास में निश्चित ही सहायक है।** संघ के अध्यक्ष पद पर रहते हुए मेरे जीवन में कई परिवर्तन हुए। **किसी भी कारण से संघ का पद लज्जित न हो, इसलिए चलने, बैठने, बात करने या अन्य प्रवृत्तियों में परिवर्तन का अनुभव हुआ। क्रोध और अहंकार के भावों पर भी नियन्त्रण हुआ। मुझे यह ध्यान रहने लगा कि कोई ऐसा कार्य नहीं करना, जिससे संघ की गरिमा कम हो।** संघ के अधिकारी के रूप में कोई भी बात कहने से पूर्व सोचना पड़ता है। इस प्रकार मेरे जीवन में पूर्वापेक्षया काफी सुधार हुआ। मैं युवक संघ के सदस्यों को कहूँ कि आप प्रामाणिक बनो, तो पहले मैं अपने में प्रामाणिकता ढूँढने लगा। इस तरह सहजरूप से परिवर्तन होने लगा।

संघ का दायित्व जब सम्हाला, तब गुरुदेव ने तीन श्लोक कहे थे, जो मुझे आज भी याद हैं-

पापान् निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥

संस्कृत श्लोक का हार्द मेरी समझ के बाहर था, अतः मैंने निवेदन

किया- ''भगवन्! इसका क्या अर्थ है?'' आचार्य भगवन्त ने फरमाया- ''तत्त्व के ज्ञाता पुरुषों ने सन्मित्र के लक्षण कहे हैं कि सन्मित्र अपने मित्र को पाप कार्यों से हटाता है और हित कार्यों में लगाता है। रहस्य की बातों को छुपाकर रखता है तथा उसके गुणों को उजागर करता है, विपत्ति आने पर साथ नहीं छोड़ता, अपितु सहयोग करता है।'' गुरुदेव ने फरमाया- ''तुम संघ के मित्र हो, मित्र बने रहना।'' गुरुदेव ने आगे फरमाया-

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः॥

चलते हुए कहीं पर भी असावधानी या प्रमाद के कारण स्खलना होती ही है। दुर्जन उसे देखकर हँसते हैं तथा सज्जन सहारा देते हैं, उठाते हैं।

तीसरा पद्य था-

धन दे तन को राखिए, तन दे राखिए लाज।
धन दे तन दे लाज दे, एक धर्म रे काज॥

गुरुदेव के वे वचन मुझे आज भी आनन्दानुभूति कराते हैं। **संघ-हितैषी संघ के मित्र ही होते हैं। यदि आपसी मनमुटाव के कारण संघ को नुकसान होता है तो यह संघ-हितैषिता नहीं है।**

मैं पहले थोड़ा-थोड़ा आचार्य रजनीश के सम्पर्क में भी था, किन्तु गुरुदेव के सम्पर्क में आने के पश्चात् अन्यत्र कहीं जाने की इच्छा ही नहीं हुई। आचार्य भगवन्त की दृष्टि स्पष्ट थी। एक बार आचार्य रजनीश के लेख को लेकर विचार चल रहा था, तब गुरुदेव ने फरमाया- '' जिसकी कथनी करनी में फर्क हो, उसका प्रचार-प्रसार उचित नहीं।'' एक बार मैंने गुरुदेव से पूछा- ''तपश्चर्या करने वाले क्या काया को कष्ट नहीं देते?'' गुरुदेव ने फरमाया- ''तपस्या में कर्म-निर्जरा का लक्ष्य होता है, इसलिये तप करने वाला कष्ट का नहीं, आनन्द का अनुभव करता है। तप का आराधक तो यही अनुभव करता है कि मैं यह शरीर नहीं, वरन् इसमें स्थित आत्मा हूँ, यह मानव देह मोक्ष पाने का साधन है, तपाग्नि से पूर्व संचित कर्मों को जलाकर मैं अपना शुद्ध बुद्ध स्वरूप प्रगट कर सकूँ। इसी भावना से तप करने वाला साधक कभी कष्टानुभव नहीं करता।''

तप के उद्देश्य विषयक गुरुदेव के इस समाधान से मुझे भी तप के प्रति प्रतीति व तपाराधन की इच्छा हुई और भगवन्त की कृपा से मुझे प्रयोगात्मक रूप में यह आनन्द प्राप्त करने का अवसर भी मिला।

गुरुदेव विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। विषम परिस्थितियों में भी निर्णय लेने की गुरुदेव में अद्भुत क्षमता थी। शीतलमुनि जी के प्रकरण में उनका निर्णय संघ-अनुशासन एवं निश्चल साधना-जीवन का पक्षधर था। शीतलमुनि जी के बूँदी चातुर्मास के समय गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन करने पर गुरुदेव ने फरमाया- "मुनि जी को मैंने मौन रहने की आज्ञा प्रदान की। मुनिजी को मेरी आज्ञा पालने में कष्ट हो रहा है, इसमें मुझे हिंसा का आभास होता है। अब मैं उनको आज्ञा नहीं दूँगा।" यह गुरुदेव की साधना-निष्ठ जीवन शैली का परिचायक था।

सम्प्रदाय के संबंध में एक बार विचार प्रकट करते हुए गुरुदेव ने फरमाया-**"सम्प्रदाय एक पारिवारिक व्यवस्था है। अपने परिवार की उन्नति व प्रगति करना अपना फर्ज होता है। पर अपनी उन्नति किसी की अवनति पर नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार अपनी प्रशंसा किसी की निंदा पर एवं अपना सुख किसी के दुःख पर आश्रित नहीं होना चाहिए।"** कितने उच्च विचार थे उस महापुरुष के। **गुरुदेव के मन में किसी भी सम्प्रदाय के प्रति विद्वेष एवं विरोध नहीं था, अपितु गुणि-सन्तों को देखकर उनके चेहरे पर सदैव प्रमोद भाव की मुस्कान झलकती थी।**

गुरुदेव संकेत की भाषा में बात कहते थे। धीरे-धीरे उनके संकेतों को समझने लगा। उनके द्वारा कहे गये कथन का रहस्य समझ में आने पर मुझे प्रसन्नता का अनुभव होता था।

संथारा ग्रहण करने के पूर्व निमाज में पूज्य गुरुदेव ने जो भोलावण दी, वह मुझे प्रतिपल स्मरण रहती है। उन्होंने फरमाया था- "मैंने तो इस संघ का संचालन मात्र मामूली संकेतों से बगैर कोई टंटा लगाये कर लिया। मेरे श्रावक इतने श्रद्धालु थे कि मुझे कभी कहने का अवसर नहीं दिया। आगे भी श्रावक अपना धर्म खुद निभायेंगे और सन्तों को श्रावकों के कामों में नहीं डालेंगे तो ही संघ की गरिमा कायम रहेगी।" उनकी यह भोलावण मेरे जीवन का अंग बन

गई, उनका यह उपदेश मेरे लिये बहुत बड़ा मंत्र बन गया।

गुरुदेव के संथारे का दृश्य अद्भुत था। उनकी योजनाबद्ध साधना अनूठी थी। संथारा देखकर मुझे लगा कि मृत्यु का वरण कितनी सुन्दरता से किया जा सकता है। आचार्य भगवन्त का संथारा मृत्यु पर विजय का सफल प्रयोग था। मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ जो गुरुदेव का आशीर्वाद पा सका। मैं उस महापुरुष का जब भी स्मरण करता हूँ तो मुझे अलौकिक शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है। ऐस श्रद्धास्पद गुरुवर्य को कोटिशः वन्दन-नमन।

('नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से गृहीत)

-मुणोतविला, वेस्ट कम्पाउण्ड लेन,
63- के भूलाभाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026

मेरी हर श्वास में हैं सद्गुरु

श्री जवाहरलाल बाघमार

मेरी हर श्वास में है सार तेरे नाम का सद्गुरु,
कोई भी पा सका ना पार तेरे नाम का सद्गुरु।
जहां में हर समय तेरा, अजब दीदार होता है।
नजर होती है चरणों में, ये दिल गुलजार होता है।।
मिला मझधार में आधार तेरे नाम का सद्गुरु।।1।।
कोई भी पा सका ना.....।
जो था सब कुछ समर्पित, कर दिया जग के उसूलों से,
गँवाया जन्म अब तक था, प्रभो! अपनी ही भूलों से।
मिला उपकार का, उपकार तेरे नाम का सद्गुरु।।2।।
कोई भी पा सका ना.....।
ये जाहिर हो गया अब, आपने आकर संभाला है।
आपकी ही कृपा से आज, हर जर्रा निराला है।।
करें सुमिरण अनेकों बार तेरे नाम का सद्गुरु।।3।।
कोई भी पा सका ना.....।

-6, चन्द्रप्पा मुदली स्ट्रीट, चेन्नई (तमिलनाडु)

हस्ती जन्म-शताब्दी

आचार्य हस्ती : जीवन झाँकी

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना

आज से एक शताब्दी पूर्व मारवाड़ के पीपाड़ शहर की पुण्यधरा पर महान् साधक आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब का जन्म श्रावक श्रेष्ठ श्री केवलचन्द जी बोहरा की धर्मशीला धर्मपत्नी रूपादेवी जी की कुक्षि से हुआ था। वि.सं. 1967 पौष शुक्ला चतुर्दशी (13 जनवरी 1911) को सूर्य कर्क रेखा से मकर रेखा पर दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर संक्रमण की तैयारी के साथ मकर संक्रान्ति के शाश्वत दिवस पर 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के शाश्वत सत्य का संकेत कर रहा था। उनके जन्म के पूर्व ही पिता श्री केवलचन्द जी बोहरा के देहावसान, दादी नौज्यांबाई के स्वर्गवास, नाना गिरधारीलाल जी मुणोत एवं उनके विशाल परिवारजनों की प्लेग से अकाल मृत्यु आदि एक के बाद एक अनभ्र वज्रपातों से उन्हें गर्भ एवं शिशुवय में ही संसार की विनश्वरता का बोध हुआ तथा माता-पुत्र दोनों में ही वैराग्य संस्कारों का वपन हुआ। माता के बोध, पूज्या महासती जी श्री धनकंवर जी म.सा. का सान्निध्य एवं अप्रमत्त साधक संतरत्न स्वामी जी श्री हरखचन्द जी म.सा. की चरण-सन्निधि में ये संस्कार चिरस्थायी बन गये।

मात्र दस वर्ष की वय में बालक हस्ती ने सहज भाव से जीवन निर्माण के कुशल शिल्पी आचार्य प्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. का शिष्यत्व ग्रहण कर माँ के साथ श्रमण पथ को अंगीकार कर लिया। गुरुदेव के कृपाप्रसाद से वे किशोरवय में ही अतिशय ज्ञानी बन गये। अतः केवल पन्द्रहवर्ष की अवस्था में ही उनके गुरु ने उन्हें आचार्य पद के लिये मनोनीत कर दिया। श्रमण भगवान् महावीर के शासनकाल की यह ऐतिहासिक घटना थी। शास्त्रों के गहन अध्ययन के साथ ही उन्होंने जैनेतर शास्त्रों, व्याकरण, न्याय एवं ज्योतिष का भी तलस्पर्शी ज्ञान किया। संस्कृत और प्राकृत का उनका ज्ञान असाधारण था। यह सारी उपलब्धियाँ उन्होंने यौवन अवस्था के पूर्व ही अर्जित कर ली। कौनसा धर्मसंघ ऐसे प्रतिभा के धनी प्रज्ञापुंज, ज्ञानसूर्य का संरक्षण पाने को लालायित नहीं होगा। सवा उन्नीस वर्ष की वय में चतुविध धर्मसंघ ने उन्हें आचार्य पद पर विधिवत् प्रतिष्ठित कर दिया जो

उनकी असाधारण प्रतिभा के साथ ही उनके शुद्ध साध्वाचार का ज्वलंत उदाहरण है।

आचार्य हस्ती का सम्पूर्ण जीवन जागरण और बोध का जीवन है। वे मैत्री, करुणा, प्रमोद एवं माध्यस्थ्य भावना के जीवन्त प्रतिमान थे, उनका उद्घोष था पहले स्वयं को सुधारो फिर अन्य को। उनके प्रवचनों में हेय-ज्ञेय-उपादेय का बोध-दर्शन है। उनके संकल्पों में विवेक, विद्या में विनय एवं प्रभुत्व में भी लघुता थी। उनकी लघुकाया में एक विराट् व्यक्तित्व एवं बेमिसाल कृतित्व समाया था। उनका ध्येय आत्म-कल्याण को प्राणिमात्र के कल्याण से जोड़ना था। विद्वत्ता, प्रज्ञा और साधना की त्रिवेणी आचार्यप्रवर अप्रमत्तता, निस्पृहता, निरभिमानता, निर्भयता, मितभाषिता, करुणा आदि अनेकानेक गुणों के महासागर थे। उन्होंने अन्ध मान्यताओं का निरसन कर सत्संग एवं स्वाध्याय से ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने का सशक्त अभियान छेड़ा। तनावग्रस्त मानव के लिए समभाव की साधना पर बल दिया। शिक्षा के साथ नैतिकमूल्यों को जीवन में उतारने की प्रेरणा की, सामाजिक कुरीतियों पर करारी चोट की। उनके लोक कल्याणकारी कार्यों एवं उपदेशों से लाखों लोगों ने अपने जीवन की दशा एवं दिशा बदल दी। वे धार्मिक सहिष्णुता एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रतिमान थे। जैन मतावलम्बियों के साथ ही अन्य धर्मों के संतों एवं अनुयायियों ने भी उनके पावन दर्शन एवं मंगलमय सान्निध्य का लाभ लेकर अपने को कृतकृत्य समझा। उनके जीवन, कृतित्व एवं संदेश की महक युगों-युगों तक मानवता को सुवासित करती रहेगी। वे पद से नहीं वरन् पद उनसे सुशोभित हुए। वे भक्तजनों से नहीं वरन् भक्तजन आपका सान्निध्य पा गौरवान्वित हुए।

आचार्य श्री का अंतिम समय उनकी साधना का चरम शिखर था। वे देह में रहते हुए भी विदेही हो गये थे। भेद-विज्ञान के ज्ञाता उन महामनीषी ने आत्मा और शरीर की भिन्नता को अपनी तप संथारा की साधना से मानो साकार रूप में प्रदर्शित किया है। जिनके ज्ञान में सभी जीव आत्मवत् हो गये, उस समदर्शी के लिये मोह कैसा और शोक कैसा? स्वयं को सिन्धु में बिन्दु समझने वाले गुणों के महासागर अन्त समय में सभी उपादानों से मुक्त हो गये। सत्तर वर्ष पर्यन्त स्व-परहित में रत रहकर निष्काम निरतिचार संयम का पालन करते हुए साठ वर्ष तक धर्मसंघ के अनुशास्ता रहकर आयुष्य की पूर्णाहुति के समय सभी कामनाओं से

रहित हो विगत दो शताब्दियों में पूर्ण विधिपूर्वक एवं क्षमायाचना-आलोयणा के साथ तेरह दिवसीय तप-संथारा द्वारा महाप्रयाण करने वाले वे विरले महापुरुष थे। परम पावन गुरुदेव इस संसार में स्व-पर कल्याण के कार्य करके समय की रेती पर भी अपने अमिट हस्ताक्षर छोड़कर परमानन्द के पथ पर प्रस्थान कर गये, पर हमारे लिये तो वे आज भी अपने संदेशों में अपनी शिष्य परम्परा में एवं हमारी अविचल आस्था के रूप में सदा अजर अमर हैं। उनकी गुणस्मृति एवं पावन स्मृतियाँ युग-युग तक आने वाली पीढ़ियों का पथ आलोकित करती रहेंगी। उनके उपदेशों से प्रेरित हो भक्तजनों द्वारा देश के विभिन्न भागों में अनेक जन-कल्याणकारी संस्थाएँ स्थापित हुईं, पर वे महापुरुष न तो किसी संस्था से व्यक्तिगत रूप से जुड़े, न ही उन्होंने अपना नाम जुड़ने दिया। वे एक संघशास्ता ही नहीं वरन् कुशल प्रवचनकार, जीवन परिवर्तन करने वाले उद्‌बोधक, इतिहास अन्वेषक के साथ ही कुशल साहित्यकार भी थे। उन्होंने अनेक आगमों के अनुवाद के साथ ही जैन धर्म के मौलिक इतिहास का भी लेखन किया। वे भले ही एक परम्परा के आचार्य थे, पर उनकी उदारता, अनाग्रह एवं सभी के प्रति स्नेह की भावना ने लाखों व्यक्तियों को सहज ही भक्त बना दिया। उनके प्रति समर्पित हो प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता था। संघ ऐक्य के प्रयासों में उनकी अग्रणी भूमिका रही।

देश के विभिन्न भागों में उत्तर से दक्षिण तक सुदूर क्षेत्रों में दुर्गम पाद विहार कर उन्होंने धर्म के साथ ही नैतिक जागरण का महनीय कार्य किया। उनकी प्रेरणा से सहस्रों व्यक्ति व्यसनमुक्त हुए। जीवन के संध्याकाल में वे अप्रमत्तयोगी सदा सजग रहे। विभिन्न परम्पराओं के आचार्यों/ प्रवर्तकों से लिखित क्षमायाचना एवं स्वयं अपने द्वारा दीक्षित संतों से भी पाट से नीचे विराजकर विनत भाव से कृत क्षमायाचना से गुरु-गंभीर व्यक्तित्व और ऊर्ध्वतर बन गया। क्षमायाचना के अनन्तर जीवन भर की सजग भाव से आलोचना कर तप-संथारापूर्वक समाधिमरण प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया। गुणों के महासागर उन महामनीषी ने अपने आपसे सिंधु में बिन्दु मात्र व 'शोभाचार्य शिष्य संघ सेवक हस्ती' संबोधन से ही संबोधित किया। यह उनके गहन गुणों के प्रतिबिम्ब हैं।

-संयोजक, आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी समिति
सी-55, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राज.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक

गुण प्रशस्ति - मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

शब्द प्रस्तुति - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण अपने शब्दों में धारावाहिक रूप में कर रहे हैं- श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली।

अवतरणिका

(1)

साधना पथ के पथिक की अनुभूति
स्वप्न में आभासित हुई विरल विभूति,
देदीप्यमान मुखाकृति,
सचमुच एक द्युतिमान सुरपति,
जिनसे प्रस्फुटित है अनिवर्चनीय ज्योति।
पुरुष और प्रकृति
उनकी दिव्य महिमा से अभिभूत है।
सूर्य उनका भांमडल है,
मेघ अभिषेक कर रहे हैं,
पवन अर्घ्य चढ़ा रहा है,
दामिनी आरती उतार रही है
और नक्षत्र परिक्रमा कर रहे हैं।

पथिक को अनायास ही हो गई उनसे प्रीति।
वह चितेरा बन निहारने लगा उस अतिमानव को,
जो था एक सुधाकर,
पथिक भी बन गया उनका परिकर।

उसके चितवन में जिज्ञासा और श्रद्धा के
वातायन अनावृत हो गये,
अभिज्ञान की पिपासा तीव्र से तीव्रतर होती गई।

(2)

मुनिवर ने कहा–
"पथिक, क्या इस दिव्य ऐश्वर्य से तुम्हारे नेत्र चौंधिया गये हैं?
अभी तो तुमने उनके दर्शन किये ही कहाँ है?
पहले थोड़ा आचमन करलो,
फिर देखो उस प्रकाशमणि के पार एक प्रतिबिम्ब,
पदार्थ के आश्रय से रहित निरालंब।"

पथिक का प्रत्युत्तर–
"हाँ, हाँ, मुनिवर,
मुझे उस पार आभासित हो रही है
एक शान्त, सौम्य मुखाकृति,
कामना रहित,
चिन्ता रहित,
शोक रहित,
भय रहित, राग रहित,
द्वेष रहित,
निश्चल और अलिप्त,
मानो कोई शान्ति का देवता हो।
मैं बरबस मन्त्रमुग्ध सा
उनकी ओर आकर्षित हो रहा हूँ।
पर मुनिवर,
यह ऐश्वर्य, और नेपथ्य में शान्ति का सौन्दर्य?
कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।'

मुनि ने कहा–
"पथिक, नेपथ्य को यदि जानना चाहते हो तो
मेरे साथ चलना होगा।"

पथिक की स्वीकृति

"मुनिवर, मुझे भी अपने साथ ले चलो और बतलाओ कि
यह अनेकानेक गुणों का पूंजीभूत कथानक कौन है?
मेरा भी उस दिव्यात्मा से साक्षात्कार कराओ
ताकि मैं अपनी प्रबल पिपासा को शान्त कर सकूँ।"

(3)

मुनि का उद्‌बोधन

"पथिक,
तुम्हारी इस जिज्ञासा से मैं मुखरित हो उठा हूँ।
तुमने ठीक ही कहा कि तुमने शान्ति का देवता देखा।
मैं उस दिव्य पुरुष के अतीत का साक्षी हूँ।
जितनी तुम्हारी जानने की जिज्ञासा है
मेरी भी उसे उद्‌घाटित करने की उत्सुकता कम नहीं।
उस आप्त पुरुष ने अपनी गौरव गाथा नहीं लिखी
क्योंकि वह अलिप्त था,
अनासक्त था,
अपनी यशोकामना से उपरत था।
पर उस दिव्य पुरुष का इतिहास
मेरे अंतस पर अंकित है।
मुझमें सामर्थ्य नहीं है
उस शब्दातीत को शब्दों में कहना।
उनका अतीत अभी भी मेरे लिए कल्पनातीत है,
पर वह अत्यन्त पुनीत है,
पूर्वाचार्यों से प्रणीत है,
संयम से रेखांकित है
अनासक्ति से आचरित है,
आत्मगुणों से सुवासित है,
परहित में समर्पित है
और जिनशासन से रक्षित है।"

"वे आज इस जगत से अतीत हैं,
फिर भी मैं उनके संग हूँ,
मैं उन्हीं की एक तरंग हूँ।
क्या तरंग सागर से अलग हो सकती है?
भले ही मैं अबोध हूँ
पर मैंने उनकी संबोधि की किरणों से
अपना दीया जलाया है।
तुम्हें उनका दर्शन कराने
मैं अपनी आरती का दीपक लेकर उपस्थित हूँ।"

"पथिक, इस आरती के प्रकाश में,
मैं कभी शान्ति के उपासक को देखता हूँ,
कभी अपने आपको देखता हूँ।
सर्वलोक में मुझे ऐसी कोई वस्तु नहीं मिली
जिसे मैं उन्हें चढा सकूं।
जिस चित्त ने दीर्घकाल तक
उस क्षमानिधान के स्वरूप का चिन्तन किया है,
जिन्होंने इस अकिंचन को साधना पथ पर आरूढ किया,
दर्शन, ज्ञान और चारित्र का सम्यक् पान कराया,
उनके लिये मेरे पास कृतज्ञता एवं अहोभावों के अलावा कुछ भी नहीं है।
आज मेरे नयनों से अहोभावों का निर्झर बह रहा है।
इसकी कल-कल ध्वनि में
पथिक तुम भी अपने स्वर मिलालो।"

(4)

मुनि के अन्तर्भाव दिव्यात्मा के प्रति
"हे मेरे जीवन निर्माता गुरुवर्य!
कैसे करुँ तेरी महिमा का बखान?
शान्ति के पूर्ण आदर्श वीतराग देव तो
पूज्य हैं, वन्दनीय हैं
उनके प्रवक्ता के रूप में,

मेरे आराध्य तुम भी वैसे ही
पूज्य हो, वंदनीय हो।
देव को देव बताने वाले तुम ही हो।
तुम्हारे बिना देवत्व की प्राप्ति सम्भव नहीं।
इसीलिये तो शास्त्रों में कहा है-
गुरु ही परम ब्रह्म है,
परम विद्या है,
परम तत्त्व है
और परम आश्रय है।"

"तेरे दर्शन मात्र से मेरे विकल्प समाप्त हो जाते हैं,
कितनी समता है तुम्हारे हृदय में,
कितना प्रेम है तुम्हारी वाणी में,
कितने वरद हैं तुम्हारे हाथ।"

(5)

मुनि की प्रार्थना

"पूर्व संस्कारों को जीतकर,
महान विकल्प सागर को पार कर,
गम्भीर, प्रशान्त सागर की अथाह गुरुता को प्राप्त,
हे गुरुवर, मुझे भी अपना गुरुत्व प्रदान कर,
मेरी भी नौका उस पार लगा-
जहाँ न राग है, न द्वेष है,
न हर्ष है, न शोक है,
केवल शान्ति है, अनन्त आनन्द है।"

"हे देव!
मुझे असत् लोक की भयावह शक्तियों से बचाकर,
सत् लोक में ले चलो,
अशान्ति से शान्ति में पहुँचा दो,
अन्धकार से प्रकाश में ले आओ।"

"मुझ पामर को साधना का अतुल निधान

प्रदान कर कृत-कृत्य कर दिया।
किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करूँ।
अन्तरंग के माधुर्य से निःसृत ये उद्‌गार,
परम उपकारी के प्रति,
सहज भक्ति कुसुम के रूप में
अर्पित कर रहा हूँ।"
हे प्रभु, इन्हें स्वीकार लेना।"

(क्रमशः)

अभिमत

श्री सुरेशचन्द्र धींग

'जिनवाणी' नवम्बर 2009 का अंक कई दृष्टियों से मुझे महत्त्वपूर्ण लगा। आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी के सम्बन्ध में जो रूपरेखा बनाई गई है, वह बहुआयामी है। इसमें व्यक्ति का परिमार्जन, समाज का सुधार और विश्व का कल्याण सन्निहित है। किसी भी सन्त की जन्म शताब्दी मनाने के लिए यह रूपरेखा मार्गदर्शक बन सकती है। जन्म शताब्दी वर्ष का नामकरण "अध्यात्म-चेतना वर्ष" भी अच्छा व सर्वग्राह्य है। यह आचार्य श्री हस्ती के उदार व विराट् व्यक्तित्व के अनुरूप है। वर्ष भर में अध्यात्म चेतना के विविध आयामों पर विमर्श किया जाएगा। आपका सम्पादकीय 'दृष्टिसम्पन्न आचार्य हस्ती' बहुत अच्छा लगा। आपकी इस बात से मैं सहमत हूँ कि "आचार्य हस्ती के उपासक समूह में आज अनेक अच्छे स्वाध्यायी हैं जो आगम एवं जैन दर्शन की गहरी जानकारी रखते हैं। उनके विचार भी अपेक्षाकृत उदार एवं सुलझे हुए हैं।"

इसी अंक में डॉ. दयानन्द भार्गव के लेख "क्या जैन समाज परिग्रही हैं?" ने बहुत बड़े भ्रम का तर्क संगत तरीके से निवारण किया है। इस लेख ने एक अच्छा समाधान और सुचिन्तित व विवेकसम्मत दृष्टि दी है। श्री सम्पतराज चौधरी तथा श्रीमती मंजू भंडारी की रिपोर्ताज बहुत अच्छी लगी। श्री नवनीत मेहता का लेख 'कठिन नहीं प्रतिक्रमण का कंठस्थीकरण' अच्छा लगा, लेकिन उनके विचारों को श्री सम्पतराज चौधरी ने शब्द दिये हैं। इसके लिए चौधरी जी को धन्यवाद तथा मेहता जी को मेरा विनम्र सुझाव कि आगे से वे अपने विचारों को खुद ही शब्दों में ढ़ालने का प्रयत्न करें। युवा पीढ़ी में धार्मिक लेखकों की बहुत जरूरत है।

-बम्बोरा, जिला उदयपुर (राज.)

आचार्य हस्ती जन्म-शती

श्री हस्तिमल्ल शतक

श्री सुमन्त भद्र

पुरुषवरगन्धहस्ती अर्हत्पथी परमार्हत
महामहिम महाप्राज्ञ गरिमा गजेन्द्र हैं
पुरुषोत्तम पुरुषपुण्डरीक आर्ष लोकोत्तम
सत्कृती अनादिनिधन गणिवर शक्रेन्द्र हैं
विद्यार्णव भुवनसोम जिनशासन कौस्तुभमणि
क्षमाश्रमण निष्कषाय संवृत सर्वेन्द्र हैं
अमरवन्द्य लोकपूज्य लोकहृदय मतिधीर
आचार्य हस्तिमल्ल युगकर युगेन्द्र हैं ।।1 ।।

आध्यात्मिक योगीश्वर युगमनीषी मेधावी
सच्चारित्र्यनिष्ठ साधक अनुपमेय सन्त हैं
करुणामाध्यस्थवृत्ति मैत्रीप्रमोदगुण
वचनसिद्ध भविभावी दिव्यता दिगन्त हैं
प्रज्ञा समाधिशीलसंगम अजातशत्रु
व्युत्पन्नमतिधर गवेषक बसन्त हैं
दूरद्रष्टा सत्पात्र आत्मशक्तिसम्पन्न
आचार्य हस्तिमल्ल वाणीवरदन्त हैं ।।2 ।।

अप्रमत्त सहज सजग सरल विरल विद्यार्णव
परापश्यन्त मध्यमा वैखरीबल महान् हैं
पारमिता-हृदयसूत्र अमृतवाग्वैभवगणी
इच्छा ज्ञान क्रिया सिद्ध संविद् सुजान हैं।
दूरदर्शी गुणाकर निष्फल निरंजन शुभ
विद्यावरेण्य श्रमण आगम निधान हैं

क्रोधमानमायालोभजेता अमितविक्रम
आचार्य हस्तिमल्ल दिव्यावदान हैं ।।3 ।।

सहचिन्तन सहयोग समता सहिष्णुता में
अनुपमेय आदर्श सर्वसमाधान हैं
विनिमय विवेक वैय्यावृत्त्य विनयवार्ता में
सर्वदा समर्पित सुसर्जित सुदान हैं
आत्मार्थी आत्मदीप आत्मरथी आत्मस्वरित
परमाराध्य परमाचार्य परमशक्तिमान हैं
ज्योतिर्धर ज्योत्स्नाप्रिय ज्योतिषनयनारविन्द
आचार्य हस्तिमल्ल अक्षय वरदान हैं ।।4 ।।

सर्वोदय संवाहक सौरभ समीरतत्त्व
संस्कृतिपुरोधा सुधाधर संगीत हैं
स्वाध्याय-सामायिक प्रेरक प्रधी प्रवीण
अमृत प्रभावक मनस्वी धृतिशील हैं
इतिहास पुरुषवर इतिहासवेत्ता शुभ्र
इतिहासशोधक त्रिगुणमायातीत हैं
जिनपाद पद्मचंचरीकानाहत स्वरसंज्ञी
आचार्य हस्तिमल्ल लोकपरमप्रीत हैं ।।5 ।।

सर्वधर्मसमभावद्रष्टास्रष्टाभिषिक्त
शुभतमक्रियानिष्ठाचार सम्यक् प्रमाण हैं
कालजयी रचनाकार आत्मालोचनपरिदक्ष
महामनुजदिग्दर्शन दर्शनषट्प्राण हैं
आभ्यन्तर बाह्यमध्यसमरूपी सन्धिष्णु
जंगमतीर्थ लोकपावन सविताकल्याण हैं
अनुशास्ता अनुशासित धर्मानुशासन प्रिय
आचार्य हस्तिमल्ल शक्ति रामबाण हैं ।।6 ।।

सत्यकाम सत्यसन्ध सत्यार्थी सत्यव्रती
सत्यं-शिवं-सुन्दरं-समीर सदाकार हैं
द्रव्यक्षेत्र कालभावसंविद् सुधावधीर
न्यायनीतिषोषक प्रकर्षक - प्रसार हैं
अज्ञानतिमिरहर सुधीन्द्र सव्यसाचीतुल्य
मन्त्रद्रष्टा ऋषिपुंगव परमावतार हैं
मुक्तिमार्गनिर्देशक निर्माता नित्यानन्द
आचार्य हस्तिमल्ल रत्नाकरसार हैं ।।7 ।।

निरतिचारनिष्णात नैष्ठिक बैखानसवर
निजानन्द सन्दोह नयनाभिराम हैं
मर्यादानिकष निन्दास्तुति मुक्त नन्दनवन
चिरनवीन चिरंजीवी चारुता ललाम हैं
सुस्मित सुदाम सदाचार देह प्राणाधीश
मनभावन मृदुल अतुल सर्वात्माराम हैं
पुरुषसूक्त सहस्राक्षपदशीर्षशक्त
आचार्य हस्तिमल्ल गत्यविराम हैं ।।8 ।।

लोकोत्थान-संघोन्नति-सक्षम सुदीर्घतपी
सम्मुदार सुस्नेही सरिताप्रवाह हैं
रश्मिरथी राकापति ध्रुवतारक प्राचेतस
प्रियंवद पीयूष वर्ष सुधावारिवाह हैं
मलयजसमीरोद्गम प्राणद प्राणाचार्य
कर्मभक्तिज्ञानप्राण धर्मावगाह हैं
अद्भुत वीर शान्तरसंनिधिवर कृपानिधान
आचार्य हस्तिमल्ल सफल सार्थवाह हैं ।।9 ।।

(क्रमशः)

-चिंचवड़, पुणे (महा.)

आचार्य हस्ती जन्म-शती

हस्ती-गुणसौरभ

श्री कस्तूरचन्द बाफना

(1)

'गुरु' को नमन
गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवाधिपति महेन्द्र।
नित्य नमन तव चरणों में, अहो अहो गुरु गजेन्द्र।।

(2)

गुणों का धाम
मेरे गुरुवर हस्ती, अनंत गुणों के धाम।
निशदिन तुमको मैं जपूं, करता कोटि प्रणाम।।

(3)

लघुवय दीक्षाधारी
केवलचंद जी का सुत प्यारा, माँ रूपा का लाल था।
लघुवय में दीक्षा लेकर, किया तुमने कमाल था।।

(4)

कुल दीपक
जननी जन्मभूमि पावन हुई, तुम जैसा लाल पाकर।
बोहरा परिवार रोशन हुआ, ऐसा कुल दीपक देकर।।

(5)

उत्कृष्ट संयमी
अहो भाग्य मेरा धर्म गुरु मिला आचार्य हस्ती।
धर्म प्रति समर्पित था वो, जीवन में थी अनूठी मस्ती।।

(6)

प्रभावी संत
अंधेरे की प्रकाश किरण थी, जडता में चेतन चिनगारी।
महावीर के शासन का जबरदस्त था वो अणगारी।।

(7)

ज्ञानी महापुरुष
अंधे की आँख था, गूंगे की था वो वाणी।
लुंज पुंज को शक्ति प्रदाता, अनूठा था वो ज्ञानी।।

(8)

सतत विहारी
नंगे पैर पैदल चलता, चाहे चिलचिलाती धूप हो।
बहते पानी सम चलने वाला, चाहे कडकडाती ठंड हो।।

(9)

ओजस्वी
सदा प्रफुल्लित ओजस्वी चेहरा, सौरभमय था जीवन उनका।
बडी पैनी दृष्टि उनकी, भाव जान लेते थे अंतर्मन का।।

(10)

धर्म दिशा दर्शक
जीवन नैया का नाविक, दिशा हीन को राह बताई।
तेरे मुखारविंद से निकली हर बात, सभी के दिल को बहु भाई।।

(11)

सामायिक स्वाध्याय के प्रेरक

सामायिक स्वाध्याय महान, उद्घोष दिया जग को ऐसा।
दीर्घ द्रष्टा जीवन स्रष्टा, तुम सम गुरु कोई न ऐसा।।

(12)

अप्रमत्त जीवन

नित्य नियम के पक्के, शिथिलता न आने दी जीवनभर।
आजीवन अप्रमत्त रहे समयं गोयम मा पमायए हृदयंगम कर।।

(13)

उत्कृष्ट साधक

समयबद्ध सब कार्यक्रम था, किंचित् न उसमें हेरफेर किया।
साधना में तल्लीन था वो, उत्कृष्ट साधक बन जीवन जिया।।

(14)

ज्ञानक्रिया के संगम

ज्ञानक्रिया का संगम हस्ती, कथनी करनी में नहीं अंतर था।
अनुपम अतिशय के धारक, जग का जीवित मंतर था।।

(15)

शिल्पकार

जीवन निर्माण के शिल्पकार, पतित को पावन किया तुमने।
रज को रजत का रूप दिया, कंकर को शंकर किया तुमने।।

(16)

सामंजस्य

श्रीमंत विद्वान् कार्यकर्ता औ अधिकारी सबमें सामंजस्य किया तुमने।
समाज संघ प्रगतिशील बने, अद्भुत मेल किया तुमने।।

(17)

सूर्यचन्द्र

अज्ञान अंधेरा मिटाया जग का सूर्य बनकर।
स्नेह शीतलता दी जग को, सौम्य चंद्रमा बनकर।।

(18)

प्रदाता

देते कभी देखा नहीं तुमको, जो आया मालामाल किया।
एक-एक से बढ़कर काम तुम्हारे, सबको ही निहाल किया।।

(19)

असीमशक्ति के धारी

छोटे से दुबले तन में, असीम आत्मशक्ति थी।
मस्त था अपनी साधना में, मात्र वीतराग में भक्ति थी।।

(20)

एकता

शोभा गुरु के चित्त चढ़ा, रत्नवंश का नायक था।
परंपरा से जुड़ा हुआ पर एकता का गायक था।।

(21)

उत्कृष्ट क्रियावादी

उत्कृष्ट क्रियावादी, शास्त्रीय ज्ञान का सागर था।
ज्ञान क्रिया का अद्भुत संगम, छत्तीस गुणों का आकर था।।

(22)

वीरपुत्र — सिंह सम संयम धारा तुमने, सिंह सम पाल दिखाया था।
धन्य किया मात-पिता को तुमने, वीर पुत्र कहाया था।।

(23)

चमत्कारी — दस वर्ष में दीक्षा लीवी, बीसा में आचारी।
बुढापा में शक्ति बढाई, काम है सारा चमत्कारी।।

(24)

कृपालु — आचरण में कठोर दिल के दयालु थे।
अद्भुत महिमा गुरुवर की, सब पर बडे कृपालु थे।।

(25)

अखंड ब्रह्मचारी — तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं न केवल पढा तुमने।
अखंड रूप से धारण करके, आजीवन पाला तुमने।।

(26)

वचनसिद्धि — मौन साधना का साधक, वचन सिद्धि उन्हें प्राप्त थी।
काम सफल होते मंगल पाठ से, प्रसिद्धि ऐसी सर्वत्र व्याप्त थी।।

(27)

समिति गुप्ति के पालन कर्त्ता — समिति गुप्ति का पालन करते, मर्यादामय जीवन था उनका।
साधना में रचा पचा वो हस्ती, मनोबल मजबूत था उनका।।

(28)

मनोबल — बुढापा तन पर आया, मन पर कभी न आने पाया।
ज्यों-ज्यों तन की शक्ति क्षीण हुई, मन की शक्ति बढते पाया।।

(29)

वचन पालन कर्त्ता — इक्यासी साल की अवस्था में भी, चलकर ये निमाज आए।
पालन किया वचन अपना, ऐसे गुरु सभी को भाए।।

(30)

भाषाविद् — हित मित पिय भाषा थी, उनकी, वाणी सुहानी लगती थी।
गुरुवर बस बोलते ही जाए, ऐसी इच्छा सबकी रहती थी।।

(31)

मंगलकरण — मुखारविंद से निकला एक-एक बोल, बडा मंगलकारी होता था।
उनकी अमृतवाणी सुनने को, जन समुदाय लालायित रहता था।

(32)

दिव्य सितारे — तेजस्वी मुखारविंद उनका, दर्शन संकट नाशक थे।
विघ्न हरण मंगल करण, निज के कठोर शासक थे।।

आचार्य हस्ती जन्म-शती

श्री हस्ती गणी के शरणों में

श्री मनमोहन चन्द बाफणा

(तर्ज : नवकार मंत्र है महामंत्र)

श्रद्धा के सुमन तो अर्पित हैं, श्री हस्ती गुरु के चरणों में।
तन,मन, जीवन आनंदित है, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

पा महापुरुष का साथ हमें, पौह सुद चवदस का दिन प्यारा।
मां रूपा केवल नंदन का, पीपाड़ शहर में गुरु प्यारा।
बोहरा कुल के जगनंदन हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

लघुवय में बालक जीवन में, पा संस्कार शुभ भाव बढ़े।
पा सरस्वती का वास हिये, गज ज्ञान की ज्योति नित्य बढ़े।
गुरु शोभा अति उपकारी हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

वय बीस बरस की होनी थी, गणि पद गुरुवर श्री पाकर के।
गज ज्ञान का आकर भरा हुआ, फिर जग में रवि सम जो चमके।
सप्तम पटट्धर गुरु प्यारा हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

सामायिक का गुरु बिगुल बजा, जन-जन के मानस में छाये।
स्वाध्याय रतन बांटे गुरु ने, अद्भुत शक्ति आनंद पाये।
स्वाध्याय सामायिक पाकर हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

पच्चखान प्रतिज्ञा मुक्ति पंथ, यह बात सिखा दी गणिवर ने।
हर भक्त को भेंट, अनुपम दे, पर भव का सहारा गुरुवर दें।
धारक जीवन शुभकारी हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

कथनी करनी का साम्य योग, गुरु, ध्यान, मौन, जप, तप पाके।
कर वीतराग का भाव स्पर्श, गज महापुरुष से बोध मिले।
जीवन जीना, सिखलाया हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

युग-युग में अजर अमर हस्ती, सूरज, चंदा सम चमक रहे।
शासन सेवा कुछ करके हम, शुभ जन्म शताब्दी पा करके।
'मनमोहन' गुरु उद्धारक हो, श्री हस्ती गणी के शरणों में।।

-112/ 109, पोखरपुर, लाल बंगला, कानपुर

शोधालेख

भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(6)

प्रो. सागरमल जैन

जैन ध्यान-साधना पर तांत्रिक साधना का प्रभाव-

ध्यान-साधना श्रमण-परम्परा की अपनी विशेषता है। उसमें ध्यान साधना का मुख्य प्रयोजन आत्म-विशुद्धि अर्थात् चित्त को विकल्पों एवं विक्षोभों से मुक्त कर निर्विकल्प दशा या समाधि (समत्व) में स्थित करना रहा है। इसके विपरीत तांत्रिक साधना में ध्यान का प्रयोजन मंत्रसिद्धि और हठ योग में षट्चक्रों का भेदन कर कुण्डलिनी को जागृत करना है। यद्यपि उनमें भी ध्यान के द्वारा आत्मशांति या आत्मविशुद्धि की बात कही गई है, किन्तु यह उन पर श्रमण धारा के प्रभाव का ही परिणाम है, क्योंकि वैदिक धारा के अथर्ववेद आदि प्राचीन ग्रन्थों में मंत्रसिद्धि का प्रयोजन लौकिक उपलब्धियों हेतु विशिष्ट शक्तियों की प्राप्ति ही था। वस्तुतः हिन्दू तांत्रिक साधना वैदिक और श्रमण परम्पराओं के समन्वय का परिणाम है। उसमें मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन आदि षट्कर्मों के लिए मंत्रसिद्धि की जो चर्चा है वह वैदिक धारा का प्रभाव है, क्योंकि उसके बीज अथर्ववेद आदि में भी उपलब्ध होते हैं जबकि ध्यान, समाधि आदि के द्वारा आत्मविशुद्धि की जो चर्चा है वह निवृत्तिमार्गी श्रमण परम्परा का प्रभाव है। किन्तु यह भी सत्य है कि सामान्य रूप से श्रमण धारा और विशेष रूप से जैनधारा पर भी हिन्दू तांत्रिक साधना और विशेष रूप से कौलतंत्र का प्रभाव आया है।

वस्तुतः जैन तंत्र में सकलीकरण, आत्मरक्षा, पूजाविधान और षट्कर्मों के लिए मंत्रसिद्धि के विविध विधान हिन्दू तंत्र से प्रभावित हैं। मात्र इतना ही नहीं, जैन ध्यान साधना, जो श्रमणधारा की अपनी मौलिक साधना पद्धति है, पर भी हिन्दूतंत्र विशेष रूप से कौलतंत्र का प्रभाव आया है। विशेष रूप से यह प्रभाव ध्यान के आलम्बन या ध्येय को लेकर है।

जैन परम्परा में ध्यान-साधना के अन्तर्गत विविध आलम्बनों की चर्चा तो प्राचीन काल से थी, क्योंकि ध्यान-साधना में चित्त की एकाग्रता के लिए प्रारम्भ में किसी न किसी विषय का आलम्बन तो लेना ही पड़ता है। प्रारम्भ में जैन परम्परा में आलम्बन के आधार पर धर्म-ध्यान को निम्न चार प्रकारों में विभाजित

किया गया था- 1. आज्ञा विचय, 2. अपाय विचय, 3. विपाक विचय, 4. संस्थान विचय।

इन चारों की विस्तृत चर्चा हम पूर्व में कर चुके हैं। यह भी स्पष्ट है कि धर्म-ध्यान के ये चारों आलम्बन जैनों के अपने मौलिक हैं। किन्तु आगे चलकर इन आलम्बनों के संदर्भ में तंत्र का प्रभाव आया और लगभग ग्यारहवीं-बारहवीं शती से आलम्बन के आधार पर धर्म-ध्यान के नवीन चार भेद किये गये- 1. पिण्डस्थ, 2. पदस्थ, 3. रूपस्थ, 4. रूपातीत।

यह स्पष्ट है कि धर्मध्यान के इन आलम्बनों की चर्चा मूलतः कौलतंत्रों से प्रभावित है, क्योंकि शुभचन्द्र (ग्यारहवीं शती) और हेमचन्द्र (बारहवीं शती) के पूर्व हमें किसी भी जैन ग्रंथ में इनकी चर्चा नहीं मिलती है। सर्वप्रथम शुभचन्द्र ने अपने ज्ञानार्णव में और हेमचन्द्र ने योगशास्त्र के अन्त में ध्यान के इन चारों आलम्बनों की चर्चा की है। इनके पूर्व के किसी भी आचार्य ने इन चारों आलम्बनों की कोई चर्चा नहीं की है। मात्र यही नहीं, पिण्डस्थ ध्यान के अन्तर्गत धारणा के पाँच प्रकारों की जो चर्चा हुई है, वह हिन्दू तंत्र से प्रभावित है। ये पाँच धारणाएँ हैं- 1. पार्थिवी, 2. आग्नेयी, 3. मारुति, 4. वारुणी और 5. तत्त्ववती। वस्तुतः ध्यान के इन चार आलम्बनों में और पंच धारणाओं में ध्यान का विषय स्थूल से सूक्ष्म होता जाता है। आगे हम संक्षेप में इनकी चर्चा करेंगे। ध्यान के इन चारों आलम्बनों या ध्येयों और पाँचों धारणाओं को जैनों ने कौलतंत्र से गृहीत करके अपने ढंग से किस प्रकार समायोजित किया है, यह निम्न विवरण से स्पष्ट हो जायेगा।

1. पिण्डस्थ ध्यान- ध्यान-साधना के लिए प्रारम्भ में कोई न कोई आलम्बन लेना आवश्यक होता है। साथ ही इस क्षेत्र में प्रगति के लिए यह भी आवश्यक होता है कि इन आलम्बनों का विषय क्रमशः स्थूल से सूक्ष्म होता जाये। पिण्डस्थ ध्यान में आलम्बन का विषय सबसे स्थूल होता है, पिण्ड शब्द के दो अर्थ हैं- शरीर अथवा भौतिक वस्तु। पिण्ड शब्द का अर्थ शरीर लेने पर पिण्डस्थ ध्यान का अर्थ होगा आन्तरिक शारीरिक गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करना, जिसे हम शरीरप्रेक्षा भी कह सकते हैं, किन्तु पिण्ड का अर्थ भौतिक तत्त्व करने पर पार्थिवी आदि धारणायें भी पिण्डस्थ ध्यान के अन्तर्गत ही आ जाती हैं। ये धारणाएँ निम्नलिखित हैं-

(क) पार्थिवी धारणा- आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र के अनुसार पार्थिवी

धारणा में साधक को मध्यलोक के समान एक अतिविस्तृत क्षीरसागर का चिंतन करना चाहिए। फिर यह विचार करना चाहिए कि उस क्षीरसागर के मध्य में जम्बूद्वीप के समान एक लाख योजन का विस्तार वाला और एक हजार पंखुड़ियों वाला एक कमल है। उस कमल के मध्य में देदीप्यमान स्वर्णिम आभा से युक्त मेरु पर्वत के समान एक लाख योजन ऊँची कर्णिका है। उस कर्णिका के ऊपर एक उज्ज्वल श्वेत सिंहासन है। उस सिंहासन पर आसीन होकर मेरी आत्मा अष्टकर्मों का समूल उच्छेदन कर रही है।

(ख) आग्नेयी धारणा– ज्ञानार्णव और योगशास्त्र में इस धारणा के विषय में कहा गया है कि साधक अपने नाभि मण्डल में सोलह पंखुड़ियों वाले कमल का चिंतन करे। फिर उस कमल की कर्णिका पर अर्ह की, और प्रत्येक पंखुड़ी पर क्रमशः अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ॠ,ऌ,ॡ,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अः- इन सोलह स्वरों की स्थापना करे। इसके पश्चात् अपने हृदय भाग में अधोमुख आठ पंखुड़ियों वाले कमल का चिंतन करे और यह विचार करे कि ये आठ पंखुड़ियाँ अनुक्रम से 1. ज्ञानावरण, 2. दर्शनावरण, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयुष्य, 6. नाम, 7. गोत्र और 8. अन्तराय कर्मों की प्रतिनिधि हैं। इसके पश्चात् यह चिंतन करे कि उस अर्ह से जो अग्नि शिखाएँ निकल रही हैं उनसे अष्टदल कमल की अष्टकर्मों की प्रतिनिधि ये पंखुड़ियाँ दग्ध हो रही हैं। अंत में यह चिन्तन करे कि अर्ह के ध्यान से उत्पन्न इन प्रबल अग्नि शिखाओं ने अष्टकर्म रूपी उस अधोमुख कमल को दग्ध कर दिया है। उसके बाद तीन कोण वाले स्वस्तिक तथा अग्निबीज रेफ से युक्त वह्निपुर का चिंतन करना चाहिए और यह अनुभव करना चाहिए कि उस रेफ से निकलती हुई ज्वालाओं ने अष्टकर्मों के साथ-साथ मेरे इस शरीर को भी भस्मीभूत कर दिया है। इसके पश्चात् उस अग्नि के शांत होने की धारणा करें।

(ग) वायवीय धारणा– आग्नेयी धारणा के पश्चात् साधक यह चिंतन करे कि समग्र लोक के पर्वतों को चलायमान कर देने में और समुद्रों को भी क्षुब्ध कर देने में समर्थ प्रचण्ड पवन बह रहा है और मेरे देह और आठ कर्मों के भस्मीभूत होने से जो राख बनी थी उसे यह प्रचण्ड पवन वेग से उड़ाकर ले जा रहा है। अंत में यह चिन्तन करना चाहिये कि उस राख को उड़ाकर यह पवन भी शांत हो रहा है।

(घ) वारुणीय धारणा– वायवीय धारणा के पश्चात् साधक यह चिंतन करे कि अर्द्धचन्द्राकार कलाबिन्दु से युक्त वरुण बीज 'वं' से उत्पन्न अमृत के समान जल से

युक्त मेघमालाओं से आकाश व्याप्त है और इन मेघमालाओं से जो जल बरस रहा है उससे शरीर और कर्मों की जो भस्मी उड़ी थी उसे भी धो दिया है।

(ङ) तत्त्ववती धारणा– उपर्युक्त चारों धारणाओं के द्वारा सप्तधातुओं से बने शरीर और अष्ट कर्मों के समाप्त हो जाने पर साधक पूर्णचन्द्र के समान निर्मल एवं उज्ज्वल कांति वाले विशुद्ध आत्मतत्त्व का चिन्तन करे और यह अनुभव करे कि उस सिंहासन पर आसीन मेरी शुद्ध बुद्ध आत्मा अरहंत स्वरूप है।

इस प्रकार की ध्यान-साधना के फल की चर्चा करते हुए आचार्य हेमचन्द्र कहते हैं कि पिण्डस्थ ध्यान के रूप में इन पाँचों धारणाओं का अभ्यास करने वाले साधक का उच्चाटन, मारण, मोहन, स्तम्भन संबंधी दुष्ट विद्याएँ और मांत्रिक शक्तियाँ कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती हैं। डाकिनी-शाकिनियाँ, क्षुद्र योगिनियाँ, भूत-प्रेत, पिशाचादि दुष्ट प्राणी उसके तेज को सहन करने में समर्थ नहीं हैं। उसके तेज से वे त्रास को प्राप्त होते हैं। सिंह, सर्प आदि हिंसक जन्तु भी स्तम्भित होकर उससे दूर ही रहते हैं।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि हेमचन्द्र ने अपने योगशास्त्र (7/8-28) में तांत्रिक परम्परा की इन पाँचों धारणाओं को स्वीकार करके भी उन्हें जैन धर्मदर्शन की आत्मविशुद्धि की अवधारणा से योजित किया है। क्योंकि इन धारणाओं के माध्यम से वे अष्टकर्मों के नाश के द्वारा शुद्ध आत्मदशा में अवस्थित होने का ही निर्देश करते हैं। किन्तु जब वे इसी पिण्डस्थ ध्यान की पाँचों धारणाओं के फल की चर्चा करते हैं, तो स्पष्ट ऐसा लगता है कि वे तांत्रिक परम्परा से प्रभावित हैं, क्योंकि यहाँ उन्होंने उन्हीं भौतिक उपलब्धियों की चर्चा की है जो प्रकारान्तर से तांत्रिक साधना का उद्देश्य होती हैं।

2. पदस्थ ध्यान– जिस प्रकार पिण्डस्थ ध्यान में ध्येय भौतिक पिण्ड या शरीर होता है उसी प्रकार पदस्थ ध्यान में ध्यान का आलम्बन पवित्र मंत्राक्षर, बीजाक्षर या मातृकापद होते हैं। पदस्थ ध्यान का अर्थ है पदों अर्थात् स्वर और व्यंजनों की विशिष्ट रचनाओं को अपने ध्यान का आलम्बन या ध्येय बनाना। इस ध्यान के अन्तर्गत मातृकापदों अर्थात् स्वर-व्यंजनों पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इस पदस्थ ध्यान में शरीर के तीन केन्द्रों अर्थात् नाभिकमल, हृदयकमल तथा मुखकमल की कल्पना की जाती है। इसमें नाभिकमल के रूप में सोलह पंखुड़ियों वाले कमल की कल्पना करके उसकी उन पंखुड़ियों पर सोलह स्वरों का स्थापन

किया जाता है। हृदयकमल में कर्णिका सहित चौबीस पटल वाले कमल की कल्पना की जाती है और उसकी मध्यकर्णिका तथा चौबीस पटलों पर क्रमशः क,ख,ग,घ आदि 'क' वर्ग से 'प' वर्ग तक के पच्चीस व्यंजनों की स्थापना करके उनका ध्यान किया जाता है। इसी प्रकार अष्ट पटल युक्त मुखकमल की कल्पना करके उसके उन अष्ट पटलों पर य,र,ल,व, श, स, ष,ह- इन आठ वर्णों का ध्यान किया जाता है। चूंकि सम्पूर्ण वाङ्मय इन्हीं मातृकापदों से निर्मित है अतः इन मातृकापदों का ध्यान करने से व्यक्ति सम्पूर्ण श्रुत का ज्ञाता हो जाता है (योगशास्त्र 8/1-5)।

ज्ञानार्णव के अनुसार मंत्र एवं वर्णों (स्वर-व्यंजनों) के ध्यान में पदों का स्वामी 'अर्ह' माना गया है, जो रेफ कला एवं बिन्दु से युक्त अनाहत मंत्रराज है। इस ध्यान के विषय में कहा गया है कि साधक को एक सुवर्णमय कमल की कल्पना करके उसके मध्य में कर्णिका पर विराजमान, निष्कलंक, निर्मलचंद्र की किरणों जैसे आकाश एवं सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त 'अर्ह' मंत्र का स्मरण करना चाहिए। तत्पश्चात् उसे मुखकमल में प्रवेश करते हुए, प्रवलयों में भ्रमण करते हुए, नेत्रपालकों पर स्फुरित होते हुए, भाल मण्डल में स्थिर होते हुए, तालुरन्ध्र से बाहर निकलते हुए, अमृत की वर्षा करते हुए, उज्ज्वल चन्द्रमा के साथ स्पर्धा करते हुए, ज्योतिर्मण्डल में भ्रमण करते हुए, आकाश में संचरण करते हुए तथा मोक्ष के साथ मिलाप करते हुए कुम्भक के समान सम्पूर्ण अवयवों में व्याप्त होने का चिन्तन करना चाहिए।

इस प्रकार चित्त एवं शरीर में इसकी स्थापना द्वारा मन को क्रमशः सूक्ष्मता से 'अर्ह' मंत्र पर केन्द्रित किया जाता है। अर्ह के स्वरूप में अपने को स्थिर करने पर साधक के अन्तरंग में एक ऐसी ज्योति प्रकट होती है, जो अक्षय तथा अतीन्द्रिय होती है। इसी ज्योति का नाम ही आत्मज्योति है तथा इसी से साधक को आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

प्रणव नामक ध्यान में अर्ह के स्थान पर 'ॐ' पद का ध्यान किया जाता है। इस ध्यान का साधक योगी सर्वप्रथम हृदयकमल में स्थित कर्णिका में इस पद की स्थापना करता है तथा वचन-विलास की उत्पत्ति के अद्वितीय कारण, स्वर तथा व्यंजन से युक्त, पंच परमेष्ठी के वाचक, मूर्धा में स्थित चन्द्रकला से झरने वाले अमृत के रस से सराबोर महामंत्र प्रणव (ॐ) श्वास को निश्चल करके कुम्भक

द्वारा ध्यान करता है। इस ध्यान की विशेषता यह है कि स्तम्भन कार्य में पीत, वशीकरण में लाल, क्षोभन में मूंगे के रंग के समान, विद्वेष में कृष्ण, कर्मनाशन अवस्था में चन्द्रमा की प्रभा के समान उज्ज्वल वर्ण का ध्यान किया जाता है।

हेमचन्द्र के अनुसार पंचपरमेष्ठी नामक ध्यान में प्रथम हृदय में आठ पंखुड़ी वाले कमल की स्थापना करके कर्णिका के मध्य में सप्ताक्षर 'णमो अरहंताणं' पद का चिन्तन किया जाता है। तत्पश्चात् चारों दिशाओं के चार पत्रों पर क्रमशः 'णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं तथा णमो लोए सव्वसाहूणं' का ध्यान किया जाता है तथा चार विदिशाओं के पत्रों पर क्रमशः 'एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं तथा पढमं हवइ मंगलं' का ध्यान किया जाता है। शुभचन्द्र के मतानुसार मध्य एवं पूर्वादि चार दिशाओं में णमो अरहंताणं आदि का तथा चार विदिशाओं में क्रमशः 'सम्यग्दर्शनाय नमः, सम्यग्ज्ञानाय नमः सम्यक्चारित्राय नमः तथा सम्यक् तपसे नमः' का चिन्तन किया जाता है।

इनके अतिरिक्त इन दोनों नमस्कार मंत्र से सम्बन्धित अनेक ऐसे मंत्र या पदों का उल्लेख है जिनका ध्यान या जप करने से मनोव्याधियाँ शांत होती हैं, कष्टों का परिहार होता है तथा कर्मों का आस्रव रुक जाता है।

इस प्रकार पदस्थ ध्यान में चित्त को स्थित करने के लिए मातृका पदों, बीजाक्षरों एवं मंत्राक्षरों का आलम्बन लिया जाता है।

जैनाचार्यों ने यह तो माना है कि इस पदस्थ ध्यान से विभिन्न लब्धियाँ या अलौकिक शक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं, किन्तु वे साधक को इनसे दूर रहने का ही निर्देश करते हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य चित्त को शुद्ध और एकाग्र करना है न कि भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना।

(3) रूपस्थ ध्यान– इस ध्यान में साधक अपने मन को अर्ह पर केन्द्रित करता है अर्थात् उनके गुणों एवं आदर्शों का चिन्तन करता है। अर्हत् के स्वरूप का अवलम्बन करके जो ध्यान किया जाता है वह ध्यान रूपस्थ ध्यान कहलाता है। रूपस्थ ध्यान का साधक रागद्वेषादि विकारों से रहित समस्त गुणों, प्रतिहार्यों एवं अतिशयों से युक्त जिनेन्द्रदेव का निर्मल चित्त से ध्यान करता है। वस्तुतः यह सगुण परमात्मा का ध्यान है।

(4) रूपातीत ध्यान– रूपातीत ध्यान का अर्थ है रूप-रंग से अतीत, निरंजन,

निराकार, ज्ञान स्वरूप एवं आनन्दस्वरूप सिद्ध परमात्मा का स्मरण करना। इस अवस्था में ध्याता ध्येय के साथ एकत्व की अनुभूति करता है। अतः इस अवस्था को समरसीभाव भी कहा गया है।

इस तरह पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ तथा रूपातीत ध्यानों द्वारा क्रमशः भौतिक तत्त्वों या शरीर, मातृकापदों, सर्वज्ञदेव तथा सिद्धात्मा का चिंतन किया जाता है, क्योंकि स्थूल ध्येयों के बाद क्रमशः सूक्ष्म और सूक्ष्मतर ध्येय का ध्यान करने से मन में स्थिरता आती है और ध्याता एवं ध्येय में कोई अन्तर नहीं रह जाता है। **(क्रमशः)**

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

अध्यात्म-चेतना वर्ष : तीन मुक्तक

डॉ. दिलीप धींग

(1)

चहुँ ओर निविड़ अंधकार छाया है।
प्राची ने रोशनी का बीड़ा उठाया है।
बहुत सो लिये अब जागो जगाओ।
आध्यात्मिक चेतना का वर्ष आया है।

(2)

खुशियाँ ही खुशियाँ, हर्ष ही हर्ष है।
अध्यात्म-चेतना का हो रहा उत्कर्ष है।
सामायिक-स्वाध्याय से जीवन सजा लें,
आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष है।

(3)

आध्यात्मिक चेतना को भीतर जगाइये।
आध्यात्मिक चेतना को बाहर जगाइये।
सांसारिक झंझटों का परम समाधान,
"मैं कौन हूँ" चिरप्रश्न का जवाब पाइये।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

अध्यात्म

देह और आत्मा की भिन्नता

श्री कन्हैयालाल लोढा

देह परिवर्तनशील है। यह शिशु अवस्था में छोटा था, किशोर अवस्था में बड़ा हुआ, वृद्धावस्था में बाल श्वेत होने लगे एवं चेहरे पर झुर्रियां पड़ने लगी। इस प्रकार देह में परिवर्तन होते रहने पर भी उस देह में रहने वाला 'मैं' या 'हूँ' तत्त्व अपरिवर्तनशील रहता है। बचपन से युवा एवं वृद्ध होने पर किसी से पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि मैं वहीं हूँ जिसे पचास वर्ष पूर्व आपने बचपन में छोटा-सा देखा था। वह कहेगा कि मेरे शरीर में परिवर्तन होने से भले ही आप मुझे न पहचान सकें, परन्तु मैं हूँ वही जिसे आपने पहले देखा था। तात्पर्य यह है कि देह बदलती है, परन्तु देह में निवास करने वाला देही नहीं बदलता है। यह देही ही 'मैं' है। देह मरणधर्मा या परिवर्तनशील है और देही जीवनधर्मा है। यही कारण है कि जब तक यह जीवनधर्मा देही देह में बसता है तब तक जीवनधर्मा देही के कारण देह भी जीवित कही जाती है। देही के निकल जाने पर देहपिण्ड मुर्दा या लाश कहा जाता है।

देही जीवनधर्मा है। दोनों के धर्म या गुण भिन्न-भिन्न हैं, परस्पर विरोधी हैं अतः दोनों एक जाति के नहीं हैं- एक नहीं हैं। फिर भी देही भूल से देह के साथ तादात्म्य एवं अपनापन का भाव पैदा कर लेता है। इस भूल के परिणामस्वरूप वह अपने को देहरूप मानने लगता है। देह के गौर वर्ण होने पर अपने को गोरा, देह के वृद्ध होने पर अपने को बूढ़ा, देह के रुग्ण होने पर अपने को रोगी मानता है। वस्तुतः देही-आत्मा देह से भिन्न जाति का है। देह में परिवर्तन होने से उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। देह के हाथ, पैर आदि किसी अंग के कट जाने पर देही-आत्मा के 'मैं पने' का कुछ नहीं कटता है। देह के काला, गोरा वर्ण का होने पर देही काला-गोरा वर्ण का नहीं होता है। देह के वृद्ध, रुग्ण या मरण को प्राप्त होने पर देही वृद्ध, रुग्ण या मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है। देह का अंगभंग होने से देही का अंग-भंग या देहीपना नष्ट नहीं होता है, परन्तु देह के संग से, अपने को देह मान लेने की भूल से, अज्ञान से और मिथ्यात्व से वह देह में होने वाली अवस्थाओं को अपने पर आरोपित कर लेता है और जिस प्रकार लोहे के संग से आग घन पर पीटी जाती है उसी प्रकार देह के संग से देही को बुढापा, रोग आदि

का दुःख झेलना पड़ता है।

देह में आत्म-बुद्धि होने का यह फल होता है कि देही यानी आत्मा देह के कारण अपने को सुखी-दुःखी अनुभव करने लगता है। वह देह और इन्द्रियों के भोगों से अपने को सुखी और भोगों में व्यवधान आने या अन्तराय पड़ने से अपने को दुःखी मानता है। उसका सुख देह पर आधारित हो जाता है और देह के निमित्त से प्राप्त होने वाले सुख से उसे कभी तृप्ति नहीं होती है अतः वह सुख-प्राप्ति के लिए नई-नई कामनाएँ करता रहता है, अंत में उसके देह का अंत हो जाता है, परन्तु कामनाओं का अंत नहीं होता है। कामनाएँ शेष रह जाती हैं। कामनाओं की पूर्ति देह के बिना संभव नहीं है अतः प्राकृतिक न्याय से, शेष कामनाओं की पूर्ति के लिए उसे पुनः देह धारण करना पड़ता है- नया जन्म लेना पड़ता है। इस नए जन्म में भी पुनः वही स्थिति बनती है कि सुख-पूर्ति के लिए की गई कामनाओं का अंत नहीं होता और देहान्त हो जाता है। परिणामस्वरूप पुनः देह धारण करना पड़ता है। इस प्रकार जन्म-मरण का चक्र आवागमन का संसार चलता रहता है और उसे रोग-शोक, जरा-मरण आदि का दुःख झेलना पड़ता है। इस भूल का कारण देह को 'मैं' मानने रूप मान्यता है।

देह को देही या आत्मा या 'मैं' मानना मिथ्या-धारणा है, वास्तविकता नहीं है, कारण कि देह और देही में स्वरूप की एकता नहीं है, प्रत्युत भिन्नता है, क्योंकि देह में जानने एवं अनुभव करने की क्षमता या गुण नहीं है। किसी के देह से उसकी देह का हाथ, पैर आदि कोई अंग किसी दुर्घटना में कट जाए, उस कटे हुए अंग को कोई चीरे, जलावे तो उस अंग को चीरने, जलाने से न तो कष्ट का अनुभव होता है और न ज्ञान ही होता है। इससे स्पष्ट है कि देह में जानने व अनुभव करने की क्षमता नहीं है। उस अंग के अलग होने से कष्ट का अनुभव और ज्ञान देही को होता है। जिस तत्त्व को अनुभव और ज्ञान होता है वह चेतन या आत्मा ही जीव कही जाती है। जिस तत्त्व या पदार्थ को अनुभव या ज्ञान नहीं होता वह अचेतन या अजीव कहा जाता है। इस दृष्टि से देह अजीव है और देही या आत्मा या 'मैं' जीव है। देह अजीव है, उस अजीव को मैं या जीव मानना सबसे बड़ी भूल है, मिथ्यात्व है। यह मिथ्यात्व ही अन्य समस्त दोषों की जड़ है। सम्यग्ज्ञानी देह और देही-आत्मा का भिन्नत्व समझकर व्यवहार करे तो कर्मबंध से हल्का रह सकता है।

-82/127, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

धर्म : क्या, कब, कहाँ, कैसे?

श्री राजेन्द्र कुमार संचेती

प्रायः जब यह बात कही जाती है कि प्रत्येक व्यक्ति को धर्म करना चाहिये, तो उसका सामान्यतः अर्थ सामायिक करने, साधु-संतों के दर्शन करने, प्रवचन सुनने एवं तप आदि करने से लिया जाता है, परन्तु धर्म क्या है एवं इसे कब, कहाँ एवं कैसे किया जाना चाहिए, इस बात को भली-भांति समझना धर्मपालन के लिए आवश्यक है।

पिछले दिनों एक स्थानक में महासतीजी द्वारा धर्म-चर्चा में बताया गया कि जब जवानों से धर्म करने को कहा गया तो वे बोले कि अभी तो हमारे खाने-पीने एवं मौज मस्ती करने के दिन हैं, उम्र आयेगी तब धर्म भी कर लेंगे। बुर्जुगों से जब धर्म करने को कहा गया तो उन्होंने फरमाया कि अब तो शरीर में शक्ति नहीं रही, धर्म-तपस्या कैसे की जाये। धनवानों से जब धर्म करने को कहा गया तो उन्होंने अपनी मजबूरी बतायी कि सांस लेने का भी वक्त नहीं है, धर्म करने का वक्त कहाँ से निकालें। निर्धन लोगों से धर्म करने को कहा गया तो वे बोले-महाराज, भूखे भजन न होय गोपाला।

आखिर यह धर्म क्या है? क्या धर्म करने की कोई विशेष उम्र होती है, विशेष समय होता है, विशेष स्थान होता है एवं क्या इसे करने का कोई विशेष तरीका भी होता है। धर्म कोई कार्य या क्रिया नहीं है अपितु हर कार्य या क्रिया में धर्म होता है। आवश्यकता है, उस कार्य/क्रिया को विवेकपूर्ण ढंग से करने की एवं उस कार्य की आवश्यकता समझने की।

एक इंसान जन्म से मृत्यु तक, अपने जीवन में जीने की कई विभिन्न क्रियाओं को मन-वचन एवं काया से करता है, जैसे-खाना-पीना-चलना-बैठना-सोना-जागना-देखना-सुनना-सूंघना-बोलना-सोचना-पढ़ना-लिखना इत्यादि। प्रत्येक क्रिया दो प्रकार से की जा सकती है- विवेकपूर्ण या अविवेकपूर्ण रीति से। अविवेकपूर्ण से तात्पर्य किसी भी कार्य को असावधानी से, प्रमाद एवं लापरवाही से, बिना सोचे समझे एवं बिना उसके शुभ-अशुभ फल का विचार किये करने से होता है, जबकि विवेकपूर्ण कार्य करने का तात्पर्य प्रत्येक कार्य सजगता से, अनुशासन से, सोच-समझकर एवं शुभ-अशुभ फल का विचार करने से होता है।

जीवन जीने की सभी क्रियाओं में विवेक रखना, विवेकपूर्ण ढंग से प्रत्येक क्रिया को करना ही सही मायने में धर्म करना कहलाता है। रोजमर्रा के प्रत्येक कार्य को करते समय यह विवेक रखना चाहिए कि उस कार्य से, करने के ढ़ंग से एवं कार्य हो जाने से किसी भी प्रकार का कोई पापकर्म का बंध तो नहीं हो रहा है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कार्य घर के अंदर हो रहा है या बाहर, सुबह हो रहा है या शाम, चलते-फिरते-उठते बैठते हो रहा है या सोते समय, काया से हो रहा है या मन और वचन से, उस कार्य को बच्चा/जवान कर रहा है या बुजुर्ग, धनवान कर रहा है या गरीब। प्रत्येक क्रिया को विवेक से करने के लिए किसी भी समय-विशेष स्थान-विशेष, व्यक्ति-विशेष या क्रिया-विशेष का कोई महत्त्व नहीं रहता।

सांसारिक जीवन में, प्रत्येक इंसान को चाहे-अनचाहे कई ऐसी क्रियाएँ करनी पड़ती हैं जिनसे पाप कर्म का बंध होता है, लेकिन यदि उन क्रियाओं को विवेकपूर्ण ढंग से किया जाये तो पाप कर्म के बंध को कम किया जा सकता है। जैन धर्म में पाप के 18 भेद बताये गए हैं। प्रत्येक इंसान को अपनी सभी क्रियाएँ करते वक्त इन 18 भेदों का ध्यान रखना चाहिये एवं इनसे बचना चाहिये। इसी तरह सात कुव्यसन बताये गए जिनसे बचकर भी वह अपने पाप कर्मों के बंध से बच सकता है एवं अपनी क्रियाओं को अविवेकपूर्ण होने से बचा सकता है।

अपने मन-वचन-काया से किसी भी प्रकार का कोई अविवेकपूर्ण कार्य/क्रिया करने से किसी दूसरे जीव के मन-वचन-काया को कोई चोट पहुँचती है, उसकी किसी भी प्रकार की कोई क्षति होती है, उसकी भावनाओं को, उसके आत्मसम्मान को कोई ठेस पहुँचती है तो ऐसे कृत्यों से बचने का नाम ही धर्म है।

स्थानक में जाकर साधु-संतों के दर्शन करना, व्याख्यान सुनना, रोज या साप्ताहिक सामायिक करना, भगवान की माला फेरना, उपवास करना, प्रतिक्रमण करना इत्यादि को ही केवल धर्म करना नहीं कह सकते। यह सब तो धर्म को समझने का एक माध्यम है। यह सभी एक प्रकार की क्रियाएँ हैं जिनको करने से इंसान अपने मन-वचन काया को शुद्ध, सुविचारित एवं संस्कारित बनाता है। लेकिन इन सभी क्रियाओं में एक सांसारिक व्यक्ति अपने एक दिन के 24 घंटे पूरे नहीं लगाता। 2-3 घंटे को छोड़कर उसे बाकी का सारा समय अपने घर-गृहस्थी-व्यापार-समाज एवं अन्य क्रियाओं में लगाना ही पड़ता है। जहाँ उसे वे सभी क्रियाएँ करनी पड़ती हैं जो जीने के लिए आवश्यक होती हैं एवं जहाँ पाप कर्म

बंधने की पूरी संभावना रहती है। इंसान को अपनी रोज की क्रियाओं (शारीरिक-मानसिक, सामाजिक,आर्थिक इत्यादि) में, अपने रोज के व्यवहार में, अपने आचरण में अपने मन-वचन-काया से होने वाले प्रत्येक कार्य में विवेक अपनाकर पाप कर्म के बंध से बचना ही सही मायने में धर्म है।

अतः स्पष्ट है कि धर्म विशिष्ट क्रिया नहीं है, न ही इसे करने का कोई विशेष स्थान, विशेष समय, विशेष तरीका होता है एवं न ही धर्म करने का अधिकार किसी विशिष्ट प्राणी को होता है। बल्कि हर क्रिया में धर्म है, यह सभी जगह पर किसी भी समय, किसी भी तरीके से किया जा सकता है एवं सभी प्राणियों के द्वारा किया जा सकता है।

-चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, नसरानी सिनेमा के पास, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

सद्संस्कारों का प्रचार चहुँ दिशा में,
कर रही है 'जिनवाणी' ।।
जीवन को प्रेरक-आकर्षक बनाने की प्रेरणा,
देती है सदा 'जिनवाणी' ।।
अहिंसा-सत्य-नैतिकता का पवित्र झरना,
सदा बहा रही है 'जिनवाणी'।।
बचपन से पचपन तक सभी के लिए,
ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक रूप है 'जिनवाणी' ।।
श्रेष्ठ संकलन, प्रेरक संपादन की कलाकृति,
पढ़ने व पढ़ाने योग्य है 'जिनवाणी' ।।
डॉ. धर्मचन्द सा जैन के अनुभव, परिश्रम,
पवित्र लक्ष्य का परिणाम है 'जिनवाणी' ।।
जिनवाणी बढ़ती रहे, यही है शुभ भावना
हम सभी बनें जिनवाणी के रसिक,
यही अन्तर से कामना..... ।।

विचार

मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती (2)

संकलन : श्री सुरेशचन्द धींग

- जिनशासन की अमूल्य निधि, संयम साधना के महास्रोत, ज्ञान सूर्य महायशस्वी उपमातीत व्यक्तित्व। *-महासती यशकुँवर जी म. सा.*
- We are deeply grateful to the Acharya Shri for the valuable and inspiring contribution to Jain history and philosophy.
  -Padma Vibhshan Dr. D.S. Kothari
- निर्भीक, तेजस्वी व फक्कड़ सन्त। उनकी दृष्टि में राजा-प्रजा, अमीर-गरीब, वर्ण-जाति का कोई भेद नहीं था। *-पद्मभूषण डी. आर. मेहता*
- वे अहिंसापरक एवं अनेकान्तवादी क्षमाशील श्रमण परम्परा के प्रामाणिक एवं मानक युगपुरुष थे। *-डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंधवी*
- अप्रमत्तता, निर्लिप्तता और असाम्प्रदायिकता की प्रतिमूर्ति। उनकी कथनी और करनी में मैंने एक प्रतिशत भी अन्तर नहीं पाया।
  -मोफतराज पी. मुणोत
- उनके मुखारविन्द से निकला हर शब्द मंत्र और हर कार्य चमत्कार था।
  -रतनलाल सी. बाफना
- विराट् मेधा, प्रज्ञा व दिव्य व्यक्तित्व की तेजस्विता से पूर्ण अलौकिक सद्गुरु। धर्म के दस उत्तम लक्षणों के मूर्त रूप। *-प्रो. कल्याणमल लोढ़ा*
- वे श्रावकों में सामंजस्य एवं जैन एकता के प्रबल पक्षधर थे। उनका जीवन करुणा व प्रेम से ओतप्रोत था। *-न्यायाधिपति जसराज चौपड़ा*
- श्रद्धा के कल्पवृक्ष, भविष्यद्रष्टा और वचनसिद्ध महापुरुष। उनका मंगल पाठ भी चमत्कारी होता था। *-न्यायाधिपति श्रीकृष्णमल लोढ़ा*
- वे पंचाचार के उत्कृष्ट आराधक तथा शास्त्रार्थ में बेजोड़ थे। अनेक अपराधी मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों ने उनका सान्निध्य पाकर अपना जीवन अपराध-मुक्त व उन्नत बनाया। *-कन्हैयालाल लोढ़ा*
- वे उच्च कोटि के सिद्धपुरुष थे। आगत व्यक्ति क्या जिज्ञासा लेकर आया है, वह उन्हें सहज ही भासित हो जाता था। *-गुमानमल चोरडिया*

-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 54)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(मारणान्तिक समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– मारणान्तिक समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान– जीव द्वारा मृत्यु से अन्तर्मुहूर्त पूर्व आगामी भव के उत्पत्ति स्थान तक अपने आत्मप्रदेशों को दण्ड (डंडे) के आकार में निकालने को मारणान्तिक समुद्घात कहते हैं।

जिज्ञासा– मारणान्तिक समुद्घात एक भव में कितनी बार हो सकता है?

समाधान– भगवती सूत्र शतक 6 उद्देशक 6 में उल्लेख है कि मारणान्तिक समुद्घात एक जीव के एक भव में उत्कृष्ट दो बार हो सकता है। ये दोनों ही समुद्घात मृत्यु से अन्तर्मुहूर्त पूर्व होते हैं।

जिज्ञासा– जीव उत्कृष्ट दो बार ही मारणान्तिक समुद्घात क्यों करता है?

समाधान– एक बार कोई जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है तब उसके असंख्यात आत्मप्रदेश तो उसके मूल औदारिक अथवा वैक्रिय शरीर में रहते हैं तथा असंख्यात आत्मप्रदेश शरीर से बाहर निकलकर आगामी भव के उत्पत्ति स्थान तक जाते हैं। यदि उस समय आयु पूर्ण न हो तो वे आत्मप्रदेश वापस लौट कर मूल शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अन्तर्मुहूर्त्त बाद पुनः जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है, पुनः आत्म प्रदेश उत्पत्ति स्थान तक जाते हैं, उसी समय आयु पूर्ण हो जाने से मूल शरीर में शेष रहे असंख्यात आत्मप्रदेश भी निकलकर उत्पत्ति स्थान में चले जाते हैं, तब जीव की मृत्यु हो जाती है। अर्थात् दूसरी बार के मारणान्तिक समुद्घात में जीव की मृत्यु हो ही जाती है। इस कारण से एक भव में उत्कृष्ट दो बार ही मारणान्तिक समुद्घात होता है।

जिज्ञासा– मारणान्तिक समुद्घात में आत्मप्रदेश किस आकार में बाहर निकलते हैं?

समाधान– मारणान्तिक समुद्घात में आत्मप्रदेश अपने मूल शरीर के चौड़ाई एवं मोटाई में बाहर निकलते हैं। लम्बाई में उत्पत्ति स्थान के अनुरूप होते हैं। अर्थात् किसी जीव का आगामी भव का उत्पत्ति स्थान अंगुल के असंख्यातवें भाग दूर होता है, किसी का संख्यात योजन दूर तो किसी का असंख्यात योजन दूर होता है। दूरी के अनुपात में आत्मप्रदेशों की लम्बाई होती है।

जिज्ञासा– क्या कारण है कि असंख्यात आत्मप्रदेश मूल शरीर से बाहर निकल जाने पर भी उस जीव का मरण होना अनिवार्य नहीं होता?

समाधान– मरण का मुख्य सम्बन्ध आयुकर्म के क्षय से है। अर्थात् जब आयु कर्म समाप्त होता है, तब मृत्यु होती है। जब तक वर्तमान भव के आयु कर्म का उदय रहता है तब तक मृत्यु नहीं होती।

यह ध्यातव्य है कि आयु कर्म का सम्बन्ध एक भव विशेष से रहता है। अगले भव के लिए पुनः नये आयु कर्म का बन्ध होता है।

अनुभवियों का कथन है कि जब तक आठ रुचक प्रदेश मूल शरीर को नहीं छोड़ते तब तक मरण नहीं होता। अर्थात् केवली समुद्घात को छोड़कर अन्य समुद्घातों में जब तक रुचक प्रदेश मूल शरीर में स्थित रहते हैं, तब तक मरण होना अनिवार्य नहीं होता। जब रुचक प्रदेश मूल शरीर से बाहर निकल जाते हैं, तो उस छद्मस्थ जीव का मरण निश्चित होता है।

अतः असंख्यात आत्म-प्रदेशों का मूल शरीर से बाहर निकल जाने पर भी जीव का मरण अनिवार्य नहीं होता।

जिज्ञासा– मारणान्तिक समुद्घात कौन-कौन से जीव करते हैं?

समाधान– 1. जिन जीवों ने आगामी भव का आयुष्य बन्ध कर लिया है, वे जीव मारणान्तिक समुद्घात कर सकते हैं।

2. जो जीव अपर्याप्त अवस्था में काल कर सकते हैं, तथा उन्होंने आगामी भव का आयु भी बन्ध कर लिया है, ऐसे मनुष्य-तिर्यञ्च अपर्याप्त अवस्था में मारणान्तिक समुद्घात कर सकते हैं।

3. जो जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते, पर्याप्त होकर ही काल करते हैं, तथा जिन्होंने पर्याप्त अवस्था में अपने आगामी भव का आयुष्य बांध लिया है, वे मारणान्तिक समुद्घात कर सकते हैं। ऐसे जीव चारों गतियों के हो सकते हैं।

4. प्रमादी जीव ही मारणान्तिक समुद्घात कर सकते हैं, अप्रमादी नहीं। अर्थात् पहले से छठे गुणस्थानवर्ती जीव ही मारणान्तिक समुद्घात कर सकते हैं। आगे के गुणस्थान वाले नहीं कर सकते।

5. मनःपर्यायज्ञानी छठे गुणस्थान में होने पर भी मारणान्तिक समुद्घात नहीं कर सकते। क्योंकि प्रज्ञापना सूत्र के 5वें पद में जीव पज्जवा में उल्लेख है कि मनःपर्याय ज्ञानी की अवगाहना की अपेक्षा आपस में तुलना करने पर अवगाहना त्रिस्थान पतित ही होती है, चतुःस्थान पतित नहीं। जबकि मारणान्तिक समुद्घात मानने पर तो उसकी अवगाहना असंख्यात योजन तक की हो जाने से चतुःस्थान पतित तक हो सकती है।

जिज्ञासा– मारणान्तिक समुद्घात में किसकी क्षपणा होती है?

समाधान– मारणान्तिक समुद्घात में वैसे तो सभी कर्मो की क्षपणा होती है, किन्तु आयुष्य कर्म के दलिकों की अत्यधिक मात्रा में क्षपणा होती है।

जिज्ञासा– क्या सभी प्रमादी जीव मारणान्तिक समुद्घात करते हैं?

समाधान– नहीं। सभी प्रमादी जीवों को मारणान्तिक समुद्घात करना अनिवार्य नहीं है। क्योंकि मरण दो प्रकार से होता है–

1. समुद्घात पूर्वक मरना और 2. बिना समुद्घात के मरना। जैसा कि कहा है– समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। अर्थात् मारणान्तिक समुद्घात करके भी जीव मरते हैं तथा बिना मारणान्तिक समुद्घात के भी जीव मरते हैं।

प्रज्ञापना सूत्र के 36 वें पद में जहाँ मारणान्तिक समुद्घात की अल्पबहुत्व बतलायी है, वहाँ पर बिना मारणान्तिक समुद्घात के मरने वाले जीव चारों गतियों में सबसे अधिक बतलाये हैं।

धारावाहिक (3)

धरोहर

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

पूर्ववृत्त- सेठजी के व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही थी और पाँचों पुत्र भी शनैः शनैः बड़े हो गए। सेठजी ने पहले पुत्र का विवाह किया, और वह सुहाग रात के समय मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसी तरह उन्होंने दूसरे, तीसरे एवं चौथे पुत्र का विवाह किया और सबके साथ क्रमशः यही घटना घटी। अब आगे .....

पाँचवा पुत्र भी पढ़ लिखकर होशियार हो गया, पढ़ाई समाप्त हुई तो व्यापार में पिताजी का हाथ बंटाने लगा। वह भी यौवनवय को प्राप्त हो गया। अब सेठानी सेठजी से कहती है- "सेठ साहब! बाबू मोटो होय गयो है, इने वास्ते कोई अच्छी सी लड़की ढूंढ ने इन्हें भी परणाय दो।" सेठानी की बात सुनकर सेठजी को मानो हजारों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारे हों। सेठानी के शब्द सुनकर सेठजी कांपने लगे और सेठानी से कहा- "तुम चाहती क्या हो? क्या लड़का कुंवारा नहीं रह सकता? क्या इसे भी तुम मरवाना चाहती हो? अरे मेरे ऊपर थोड़ा तो रहम करो। क्यों जले पर नमक छिड़कती हो ? इस एक पुत्र को तो मेरे पास रहने दो। मेरा सहारा तो मत छीनो।" "सेठ साहब! आप अपने स्वार्थ की बात करते हो, पर इसकी ओर भी तो ध्यान दो। इसकी शादी नहीं करोगे तो, यह पहाड़ सी जिंदगी अकेला कैसे काटेगा? कौन इसका सहारा होगा? हम कब तक जीयेंगे? फिर इसका क्या होगा?

सेठजी विचार में पड़ गये। सोचा, सेठानी ठीक कह रही है, पर क्या करूँ? मेरे साथ चार-चार हादसे हो गये हैं, इसीलिए डरता हूँ कि कहीं इस लड़के से भी हाथ न धो बैठूँ। किन्तु अन्त में सेठानी की ज़िद के आगे सेठजी को झुकना ही पड़ा। सेठजी सेठानी से कहते हैं कि अब इसका ब्याह करना इतना आसान नहीं है। कोई अपनी पुत्री देने को तैयार नहीं होगा। जान-बूझकर कोई आग में क्यों कूदेगा? सेठजी सेठानी को आश्वासन देते हैं कि मैं कोशिश करूँगा। अब सेठजी अपने खास मुनीमजी से मन्त्रणा करते हैं और उनको लड़की ढूंढने भेज देते हैं। एक समय था जब

लड़की वाले चाहते थे कि हमारी पुत्री सेठजी के घर ब्याही जावे, पर अब कोई नहीं चाहता कि हमारी पुत्री सेठजी के घर दें। कोई अपनी पुत्री को दुःखी नहीं देखना चाहता। इसे कहते हैं- समय-समय का फेर।

मुनीम जी घूमते-घूमते एक छोटे गाँव में पहुँचे, वहाँ पर एक बिन मां की लड़की मुनीम जी को पसन्द आ गई। घरवालों से बात की। घर में सौतेली मां थी, उसको भला क्यों ऐतराज होता। हालांकि मुनीम जी ने पहले जो सेठजी के घर में घटनाएँ घटी, उनके बारे में सब बता दिया। यह सब सुनकर भी माँ को कोई फर्क नहीं पड़ा, सौतेली जो ठहरी। उसको पुत्री से कोई लगाव नहीं था। उसने सोचा, इसके बदले मुझको रुपये मिल रहे हैं, यही मेरे लिए अच्छा है, यह विधवा रहे या सधवा, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मेरे घर से तो बला टल जाएगी। मुनीम जी ने रिश्ता पक्का कर दिया। सेठ साहब को पूछ कर विवाह की तारीख भी पक्की कर दी। जब लड़की को पता चला कि मेरी सगाई ऐसे घर में हुई है, जहाँ चार-चार पुत्र पहली रात में ही मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं। मेरे साथ भी कई ऐसा हो गया तो मैं क्या करूँगी? मैं जन्म से दुःखी हूँ, बचपन में माँ का साया उठ गया। अब जवानी में अगर पति नहीं रहेंगे तो मेरा क्या होगा? कैसे मैं जिन्दगी काटूँगी? ऐसा सोच-सोचकर वह रोने लगी। परन्तु उसको कोई ढांढस बंधाने वाला नहीं था। वह बहुत उदास रहने लगी। शादी के दिन ज्यों-ज्यों नजदीक आने लगे, त्यों-त्यों उसका दिल भय से घबराने लगा।

एक दिन उदास बनी हुई, वह गाँव के बाहर चली गई और एक पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी। रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था। तभी एक सिद्ध पुरुष वहाँ से गुजरा, उसने लड़की को रोते हुए देखा तो निकट आया और पूछने लगा-"बेटी क्या बात है, तुम इस तरह क्यों रो रही हो? तुमको क्या दुःख है, मुझे बताओ, शायद मैं तुम्हारा दुःख हलका कर सकूँ। दुःख का स्मरण कर उसे अधिक रोना आया। सिद्ध पुरुष ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा-"बेटी जो भी तुम्हारे मन में दुःख है वह मुझे बता दो, मैं तुम्हारा दुःख दूर करने की कोशिश करूँगा। उसका प्यारभरा वचन सुनकर, वह बालिका संभली और अपनी जो बात थी अर्थात् मुनीम जी से

जैसा सुना था वैसा ही उस सिद्ध पुरुष को बता दिया। साथ ही कहने लगी- ''मेरे जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है, मैं क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा है।'' लड़की की सारी बात सुनकर उस सिद्ध पुरुष ने कहा-''बेटी मैं पता लगाता हूँ कि क्या बात है। ऐसा कहकर उसने वहीं पर बैठकर ध्यान लगाया। ध्यान में सेठजी के सारे कारनामें उसको चलचित्र की भांति सामने दिखने लगे। सब कुछ देख कर ध्यान खोला, और गहरा विचार किया। फिर उसने उस लड़की को सारी बात बता दी, कहने लगा कि बेटी इससे बचने का उपाय भी मैंने ढूँढ लिया है। अगर तुम हिम्मत से काम लो तो जैसा मैं कहूँ वैसा तुम करना, जिससे तुम्हारे सुहाग की रक्षा हो जाएगी और तुम्हारा जीवन सुखमय बन जायेगा।

सिद्ध पुरुष की बात सुनकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह खुशी-खुशी उसकी बात मानने के लिए तैयार हो गई। उसने कहा- ''आप जैसा कहेंगे मैं वैसा करूँगी, आप मुझे उपाय बता दीजिए, जिससे मेरे पति की मृत्यु टल जाय।'' सिद्ध पुरुष ने सारी बातें अच्छी तरह से समझा दी और कहा तुम डरना नहीं, किसी की बातों में आना नहीं। यह बात किसी को बतानी भी नहीं है, बस हिम्मत से सब काम करना। यह कह कर वह पुरुष चला गया।

युवती खुशी-खुशी घर आ गई। अब उसके मन में कोई दुःख नहीं था, बल्कि हिम्मत आ गई थी। शादी का दिन आ गया, बारात उसके गाँव पहुँच गई, बारात में खास-खास परिवार वाले ही थे। ब्याह हो गया, डोली में बैठकर वह ससुराल पहुँची। घर-परिवार वाले नई बहू के स्वागत की तैयारियाँ करने लगे। साथ-साथ डोली आने का इंतजार भी कर रहे थे।

सेठजी अन्दर ही अन्दर डर के मारे घबरा रहे थे, चारों पुत्रों की शादी का चित्र आँखों के सामने चलचित्र की भांति घूमने लगा। इतने में डोली घर के आंगन में आकर रुकी। बहू को डोली में से उतारने के लिए चार-पाँच महिलाएँ आगे बढ़ीं। पर यह क्या? बहू ने डोली में से उतरने के लिए मना कर दिया। उसने कहा- पहले ससुरजी को बुलाओ, बाद में मैं डोली से उतरूँगी। महिलाएँ सहम गईं, और कहने लगी यह तो आते ही

आदेश देने लगी है। ससुराल में अभी तक पैर नहीं रखा, और लगी हुक्म चलाने। ससुर जी को बुला रही है, क्या वे आकर इसे उतारेंगे। इसको कोई लाज और शरम नहीं, अभी से ही ऐसे तेवर। आपस में काना-फूसी चालू हो गई। ससुरजी को बुलाया गया तो सेठजी बोले- मेरा क्या काम है, अभी तो जो रश्म हों उन्हें पूरा करो। तब सेठजी से कहा गया कि नई बहू आपको बुला रही है, आपके आने के बाद ही वह डोली से नीचे उतरेगी। सेठजी को भी आश्चर्य हुआ कि क्या बात है, क्यों वह डोली से नहीं उतरती है। आखिर सेठजी डोली के पास आए, और बोले क्या बात है, डोली से क्यों नहीं उतर रही हो? बहू ने कहा- "पिताजी! मुझे आपसे बात करनी है, मैं जो भी पूछूँ उसका मुझे सही-सही जवाब चाहिए, उसके बाद ही मैं डोली से नीचे उतरूँगी।" सेठजी ने सोचा शायद पहले जो हादसा हुआ है उसके बारे में जानना चाहती होगी। सेठजी ने कहा, पूछ बेटा जो भी तुमको पूछना है, मैं सही-सही जबाब दूँगा।

तब बहू बोली-"पिताजी! आज से बहुत वर्षों पहले कोई एक व्यक्ति, अपने बहुमूल्य रत्नों की पोटली आपके पास रख कर गया और वापिस आने के बाद उसके मांगने पर आपने उसकी अमानत नहीं लौटाई। धरोहर के रूप में रखे उसके कीमती रत्न आपने देने से मना कर दिया, क्या यह बात सच है?" अब सेठजी के काटो तो खून नहीं? वे हक्के-बक्के रह गये, जैसे किसी ने आकाश में उछाल कर नीचे धरती पर पटक दिया हो। वे बहू का मुंह देखने लगे, उनकी बोलती बन्द हो गई। टुकर-टुकर देखते ही रह गये। उनको संबोधित करते हुए बहू ने कहा- "पिताजी! सच-सच बता दीजिए, इसमें आपका ही भला है, हम सब का भला है।" तब सेठजी ने डरते-डरते पूछा-"बेटी! तुझे ये सब बातें कैसे मालूम, तुमने किससे सुना? बहू ने कहा पिताजी! ये सब बातें मैं बाद में आपको बताऊँगी। पहले मेरी बात का जवाब दो।" तब सेठजी ने कहा- "हाँ बेटी! ये सब बातें सच हैं, मेरी मति मारी गई थी, मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी, मैं लोभ में आ गया, इसलिए दूसरों की धरोहर दबा कर बैठ गया। (क्रमशः)

-128, मिन्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-19

उपन्यास (11)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- हाथ कटे हुए दीपक को और स्मृति खो चुकी आरती को देखकर किशनलाल बहुत दुःखी हुआ तथा शान्ति को गहरा सदमा लगा। जैसे-तैसे हिम्मत कर उन्हें वे अपने घर ले आए। इतने में सद्भावना और सहानुभूति प्रकट करने वालों का तांता शुरु हो गया। इस तरह रात को ग्यारह बजे वे सुलाने के लिए दीपक और आरती को अन्दर ले गए। किशनलाल ने डॉक्टर चटर्जी से बातकर उन्हें देखने के लिए घर पर बुलाया। दूसरी तरफ किशनलाल का सबसे बड़ा पुत्र विश्वास और मीनाक्षी मुम्बई के लिए ट्रेन में रवाना हो चुके थे। अब आगे.....

'मीनाक्षी, इंग्लैण्ड में रहकर के भी, पूर्णतः भारतीय वातावरण के एक परिवार में पली और बढ़ी। उसकी माँ ने धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं के अनुरूप उसके जो संस्कार बनाए थे, उनसे भी उसके विचारों में भारतीयता की प्रबलता बनी हुई है। तभी तो वह प्रतिदिन सामायिक भी करती है और समय-समय पर व्रत-उपवास भी करती रहती है। उसके माता-पिता, यद्यपि ब्रिटेन के नागरिक बन चुके हैं, तथापि मीनाक्षी की प्रबल इच्छा रही कि वह किसी ऐसे भारतीय से अपना विवाह-सम्बन्ध बनायेगी, जिसके साथ भारत वापिस जाकर अपनी मातृभूमि को निकट से देखने का मौका मिल सके। यही सब कारण रहे हैं, जिससे विदेश में रहते हुए भी, वहाँ की संस्कृति मीनाक्षी को प्रभावित नहीं कर सकी।'- ट्रेन में बैठा-बैठा विश्वास, अतीत के पन्ने पलटने लगा।

'विश्वविद्यालय के उस दिन के सांस्कृतिक कार्यक्रम में, मेरा प्रथम परिचय हुआ था उससे। धीरे-धीरे, यही परिचय, कुछ ही दिनों बाद प्रणय के रूप में परिवर्तित होने लगा था। इसी प्रणय-सूत्र की परिणति बाद में, परिणय-बन्धन में बँध जाने तक पहुँची।

'जब मेरा पाठ्यक्रम पूरा हो गया, और मैंने मीनाक्षी को वापिस घर जाने के लिए खरीदे गये दोनों टिकिट उसे दिखलाये थे, तब कितनी खुश हुई थी वह।'

'सच मानो विश्वास! मैं उस दिन अपने आपको बहुत-बहुत धन्य मानूँगी, जिस दिन में अपनी मातृभूमि का प्रथम दर्शन करूँगी'- मीनाक्षी ने हवाई जहाज

के टिकिट अपने हाथ मैं लेकर अपना सिर मेरे सीने से टिकाते हुए कहा था।'- उसे याद आया।

'उसने, मेरे माता-पिता की तमाम तरह की आपत्तियों का जिक्र करके, मेरे द्वारा लिये गये निर्णय पर कई-कई प्रश्न चिह्न लगाने का प्रयास भी कई बार किया था, पर मैंने, अपने पिताजी के प्रगतिशील विचारों को कितने गर्व के साथ उसे सुनाया था, और विश्वास दिलाया था कि वे उसे अपनी बहू जैसा नहीं, बल्कि बेटी जैसा मान-सम्मान देंगे। तब, मेरे एक-एक कथन पर, कितनी गर्वान्वित हो जाया करती थी मीनाक्षी।'

'किन्तु,.....' - आगे का प्रसङ्ग स्मरण आते ही विश्वास का मन, एक दम बुझा-बुझा सा हो गया।

'मुझे कतई यह आशा नहीं थी, कि पिताजी, मुझे घर में घुसने तक से मना कर देंगे। मैं, कभी-कभी यह तो सोच लेता था कि यदि, उन्होंने ऊपरी मन से थोड़ी-बहुत कोई आपत्ति प्रकट भी की, तो मां द्वारा मेरी पक्षदारी करने पर, वे हल्का सा गुस्सा प्रकट करके रह जायेंगे। किन्तु, घर पहुँचने पर जो स्थिति सामने आई, उससे तो स्पष्ट लग रहा था कि मेरे अनुमानों के एकदम विपरीत ही वहाँ का वातावरण बना हुआ है।.....पिताजी के विचारों में इतना सारा फेर-बदल कब, कैसे आ गया?'

'इस समय क्या गुजर रही होगी इस बेचारी के दिल पर!..... क्या सोच रही होगी, मेरी उन तमाम बातों के बारे में, जिनमें मैंने अपने परिवार की प्रगतिशीलता की दुहाइयाँ दी थीं?'

एक हल्की सी साँस लेकर विश्वास ने तिरछी निगाहों से मीनाक्षी की ओर देखा।

'मीनाक्षी, ट्रेन की खिड़की में से बाहर की ओर अपलक निहारे जा रही है।'- उसकी यह निर्विकार स्थिति देखकर वह कुछ आश्वस्त हुआ और सहज ढंग से, डिब्बे में बैठे अन्य यात्रियों की ओर देखने लगा।

'कितनी उत्सुकता थी मुझे अपना देश देखने की, अपनी धरती देखने की।.... वास्तव में, इसी हरी भरी, रंग-बिरंगी धरती को देखने के लिए तो मैं तड़प रही थी इंग्लैण्ड में।' -मीनाक्षी को अपनी पिछली स्मृतियाँ ताजा हो आई थीं।

'करीब दस वर्ष बाद मैं अपने देश में आई हूँ। इस बीच, काफी कुछ बदल गया है भारत। प्रगति ने, चारों ओर लम्बी-लम्बी डगें प्रसार रखी हैं। किन्तु....नारी की स्थिति अभी भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। अब भी उसका शोषण हो रहा है। उसे आज भी क्रय-विक्रय की चीज समझा जा रहा है। लाचारी और मजबूरी की बेड़ियाँ आज भी उसके हाथ-पाँवों को जकड़े हुए हैं।'

भारतीय नारी की शोचनीय दशा का ध्यान आते ही,उसका विचार अपनी ओर मुड़ने लगा। किन्तु, उसने अपने सिर को एक हल्का सा झटका दिया, जैसे अपने वर्तमान पर विचार करने से साफ इन्कार कर दिया हो उसने।

इसी तरह के विचारों स्मृतियों में डूबते-उतरते वे दोनों, आखिर बम्बई पहुँचे। स्टेशन से बाहर आकर, वे दोनों पैदल ही चलने लगे।

सड़कों पर दौड़ रही कारों की लम्बी-लम्बी कतारें, और अपार जन समूह को देखकर मीनाक्षी को बड़ा ही अटपटा सा लगा। वह भीड़ की धक्का-मुक्की से बचने के लिए फुटपाथ के एक किनारे से चलने लगी।

अब तक विश्वास, उससे कुछ आगे निकल गया था। उसने पीछे मुड़कर मीनाक्षी को देखा, तो उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि मीनाक्षी, इतनी धीमी गति से क्यों चल रही है। वह थोड़ा रुका, और मीनाक्षी के निकट आ जाने पर बोला- 'जरा अपने पैरों को जल्दी-जल्दी बढ़ाओ। यदि साथ छूट गया, तो इस भीड़ में एक-दूसरे को ढूँढ़ पाना मुश्किल हो जायेगा।' (क्रमशः)

APOLOGY

Miss Minu Jain

1. A good Apology has 3 parts- (a) I am sorry (b) It's my fault and (c) What can I do to make it right. But most of the people miss the third part.
2. Apologizing doesn't mean that you are wrong and the other one is right. It only means that you value relationship much more than your ego.
3. Always accept the apology and treat everyone with love, even those who are rude to it, not because they are not nice, but because you are nice.

-Surana Ki Badi Pole, Nagaur-341001(Raj.)

प्रासङ्गिक

विहार-रत संतों की सुरक्षा का प्रश्न

डॉ. जीवराज जैन

सन्त-सतियों के द्वारा विचरण विहार में सावधानी से सम्बद्ध एवं लेख डॉ. जीवराज जी जैन का जिनवाणी, जून 2008 में प्रकाशित हुआ था। उसी क्रम में यह लेख प्रकाशित है।-**सम्पादक**

(अ) पद-विहार में हो रही सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार ऊपर चढ़ रहा है। चातुर्मास के बाद शुरु होने वाले 'विहार' में चार साध्वीजी का अहमदाबाद के पास, तथा पूज्य जम्बूविजय जी का बालोतरा के पास सड़क दुर्घटनाओं में निधन हो जाना, हमारी अभी तक की निष्क्रियता की ही गाथा बता रहा है। इसके अलावा कई संत गंभीर रूप से घायल भी हो गये थे। जगह-जगह पर शोक सभाएँ हुई हैं। यदि हम इसी परिप्रेक्ष्य में, इसी पत्रिका में छपे (जून-2008) लेख में जिन-जिन बिन्दुओं को विचारार्थ रखा गया था, उन पर गहन चिन्तन करें, यथा-

1. क्या इन हो रही दुर्घटनाओं को सिर्फ 'होनी' मानकर तथा शोक सभाओं द्वारा श्रद्धांजलि व्यक्त कर, हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लें? या मेहनत व प्रयास करके, उन पद-विहारियों की दुर्घटनाओं की वस्तु स्थिति की जानकारी हासिल करें तथा उन हालात का विश्लेषण कर, सही कारणों का पता लगायें। लापरवाही, नियमों की अनभिज्ञता आदि पर गहन चिन्तन कर, कुछ ऐसी व्यवस्था लागू करें कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके। जापान में इस तरीके को पोकायोके (**Pokayoke**) कहते हैं। इसमें दुर्घटना के कारणों का पता लगाकर उनका विश्लेषण किया जाता है, तथा फिर ऐसे सुस्पष्ट उपाय किये जाते हैं कि वह दुर्घटना फिर से घटित न हो सके।

उस लेख के प्रकाशन के बाद पिछले 18 महीनों में इस दिशा में ऐसा कुछ हुआ है, ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली है। यदि किसी समूह विशेष ने कुछ दुर्घटनाओं के हालात की जानकारी हासिल की हो, तो उन्हें सार्वजनिक करना ज्यादा श्रेयस्कर होगा।

2. पद-यात्रियों को राजमार्गों पर दायीं ओर चलने के नियम से सबको अवगत कराना था। लेखक को पिछले 2-3 महीनों में कुछ जगहों पर साधु-साध्वियों की सेवा करने का सुअवसर मिला था। उस दौरान यह जानकर आश्चर्य और हैरानी हुई कि उनमें से किसी को भी, ऐसे कोई नियम की जानकारी नहीं मिली थी। यानी उन पत्रिकाओं के पाठकगण को या तो फुर्सत ही नहीं है कि वे ऐसा कुछ काम कर सकें। या इस मुद्दे पर उनमें गंभीर उदासीनता है। खैर, जो भी कारण रहा हो, एक तथ्य अवश्य स्पष्ट मालूम होता है कि राजमार्गों पर चलने वाले पद-विहारियों को, नियमों की उचित जानकारी देना या उस तरह का समुचित प्रशिक्षण देना इतना सरल काम नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि हमारा जैन समाज ठीक से संगठित नहीं है, तथा दुर्घटनाओं को शून्य (**Zero**) स्तर तक लाने की अभी इच्छा शक्ति भी नहीं है।

हमारा समाज शायद प्रारब्ध पर जीना श्रेयस्कर मानने लगा है। पुरुषार्थ से समस्या का समाधान ढूंढने की मानसिकता लुप्त होती जा रही है अथवा साधुवर्ग की समस्या के प्रति हमारे समाज की संवेदनशीलता खत्म हो रही है।

यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण और दयनीय स्थिति है, उस पर सुज्ञ पाठकगण सोच सकता है। अन्यथा कोई वज़ह नहीं हो सकती है कि जागृति का बिगुल बजने के बाद भी श्रावक समाज सोता रह जाये।

केवल कुछ श्रावकों ने पत्रों द्वारा सुझाव, संवेदनाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ उस लेख पर व्यक्त की थीं। लेकिन जैसे व जिस वेग से ये दुर्घटनाएँ थमने का नाम ही नहीं ले रही हैं, उससे तो लगता है कि हम हाथ पर हाथ रखकर भाग्य का खेल ही देख रहे हैं। कुछ लोगों ने इतना अवश्य कहा है कि श्रावक समाज पूज्य साधकों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी ले। लेकिन कैसे? कोई व्यावहारिक और सार्थक कदम उठाने की पहल कहीं पर भी नज़र नहीं आ रही है।

(ब) हम देख रहे हैं कि समय के साथ-साथ राजमार्गों पर पैदल चलने वाले आम लोगों की संख्या तीव्रता से घटती जा रही है। हर एक व्यक्ति अब दुपहिया या चौपहिया वाहन का आदी होता जा रहा है, चाहे पास का गाँव कितना ही समीप क्यों न हों। कुछ वर्ष पूर्व तक ऐसा माहौल या मानसिकता थी कि गृहस्थ लोग 20-30 कि.मी. दूरस्थ गाँव तक पैदल

जाने में संकोच नहीं करते थे। अब वह सब इतिहास बनकर रह गया है। कारण निम्नलिखित हैं–

1. अब वाहनों की संख्या में बेतहासा वृद्धि हुई है। आवागमन तीव्र गति से बढ़ रहा है। युवा, विद्यार्थी, जवान व बूढ़े सभी आसपास के गाँवों में वाहनों के द्वारा ही जाने की मानसिकता रखते हैं। इसको आधुनिकता की निशानी माना जाने लगा है। समय की बचत का हवाला देकर, वे हमारी अर्थ–व्यवस्था को आयातित तेल पर खड़ा करने का पाप भी कर रहे हैं। वे यह भूल जाते हैं कि वे किस प्रकार पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। इस फैशन परस्त मानसिकता में या तीव्र गति से फैलने वाली वैश्विक अर्थ–व्यवस्था से, वे अपने आप को बिना किसी नुक्ताचीनी के, अखण्ड रूप से जुड़े रहने में गर्व महसूस करते हैं।

2. इस चल रही आँधी में, वाहन–चालकों का भी पूरा प्रशिक्षण नहीं हो पा रहा है। वे न तो सुरक्षा के पूरे नियम सीख पा रहे हैं और न चलाने की निपुणता प्राप्त कर पाते हैं। उनकी असावधानी का खामियाजा पदयात्री भुगतते हैं।

पद–यात्रियों की गिरती संख्या के कारण, उनको भी राजमार्गों पर वाहन चलाने के मूलभूत नियमों व सुरक्षा के नियमों को सिखाये जाने में पूरी सावधानी नहीं बरती जाती है। जबकि होना यह चाहिए कि पदयात्रियों की घटती संख्या के कारण, उन को नियमों की जानकारी और परिपालना की सख्त हिदायतें दी जानी चाहिए। उनके प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

3. दूसरी तरफ, पदयात्रियों की विरलता के कारण वाहन चालक राजमार्गों पर ज्यादा स्वच्छंद हो जाते हैं। एक तो उनके प्रशिक्षण की कमी खलती ही है, दूसरा उसके कारण वे चल रहे पैदल यात्रियों से बेखबर होकर, ज्यादा लापरवाही से राजमार्गों पर दौड़ते हैं, अनुशासन भंग करते हैं। पद–यात्रियों का सड़क पर कोई सम्मान उनके दिल में नहीं रहता है।

4. क्या ही अच्छा होता, यदि हमारे विभिन्न संघ, इन खामियों की गंभीरता को ठीक से समझ पाते और फिर संगठित रूप से कुछ ऐसी योजना चलाते, जिससे कि हमारा संपूर्ण साधु–समाज अधिक जागृत होकर, राजमार्ग पर चलने के अनुशासन का 100% प्रतिपालन कर सके। इसके लिए, राजमार्ग पर चलने के कुछ मूल नियम समझाकर, उनको ठीक से प्रशिक्षित करने का समयबद्ध कार्यक्रम लागू करना चाहिए। यातायात विभाग के अनुभवी शिक्षकों की सेवाएँ

ली जा सकती हैं। पेम्पलेट्स द्वारा नियमों को हर गृहस्थ एवं साधु के पास गंभीरता से पहुँचाना सुनिश्चित करना चाहिए। जैसे-कुछ नियम इस प्रकार हैं:-

(1) राजमार्ग पर विहार करते वक्त दाईं तरफ चलें।

(2) चलते वक्त एक के पीछे एक होकर चलें। कभी भी दो या अधिक की पंक्ति बनाकर न चलें।

(3) विहार के समय, 'दृश्यता' बढ़ाने के लिए, एक गृहस्थ हाथ में झंडा लेकर साथ में चले।

(4) जागरूकता रखें। चौकन्ने रहकर रक्षात्मक-गमन को अपनाना अति आवश्यक है।

(5) प्रशिक्षण में यह भी बताना चाहिए कि आधुनिक समाज में राजमार्ग के नियम किस प्रकार शहरी मार्गों के नियमों से भिन्न हैं।

-Kamani Centre,
2nd Floor, Bistapur, Jamshedpur-831001

जीवन उसका धन्य

डॉ. राकेश ओस्तवाल

(तर्ज : छू लेने दो नाजुक होठों को.....।)

मानव जो जन्म हमें मिला, कुछ और नहीं ये पुण्य है।
गुरु भक्ति गर हम कर ना सके, तो जीवन ये पशु तुल्य है।
मानव जो जन्म हमें.....।

ऐसे तो पशु भी जीते हैं, जीकर के और मर जाते हैं।
सामायिक स्वाध्याय कर ना सको, तो जीवन हमारा शून्य है।।1।।
मानव जो जन्म हमें.....।

जीवन में सम्यक्त्व ना हो तो, जीवन भी अधूरा होता है।
जिनशासन के अनुरूप जियो, वरना ये जीवन नगण्य है।।2।।
मानव जो जन्म हमें.....।

'राकेश' कहे रजमैल हटाके, आत्मा परमात्मा बनती है।
जो जिन भगवन्त को समर्पित करे, जीवन ही उसका धन्य है।।3।।
मानव जो जन्म हमें.....।

-आंगडिया गली, वार्ड नं. 6, दी बाड़मेर को-ऑपरेटिव बैंक के पास गली, बालोतरा-344022, जिला-बाड़मेर (राज.)

नारी-स्तम्भ

क्या खोया और क्या पाया?

श्री पारसमल चण्डालिया

जीवन को परिभाषित करते हुए प्रबुद्ध चिंतकों ने कहा है- What is life? Life is a book, Study it. जीवन एक डायरी है। हर दिन इसका एक पृष्ठ है और प्रत्येक अक्षर इसके कार्य हैं। ग्रन्थ तभी सुंदर और आकर्षक लगेगा जब इसके कागज स्वच्छ और सुन्दर होंगे और कागज भी तभी सुंदर दिखाई देंगे जब उसके ऊपर लिखे गए अक्षर सुंदर एवं सुडौल हों। सभी जीवात्माओं को अपने-अपने आयु कर्म के अनुसार छोटी या बड़ी जीवन-डायरी प्राप्त हुई है। हस्तगत जीवन डायरी को किस भांति संभालना? इसमें क्या लिखना? इसे बेकार समझकर दुर्व्यसनों में फंस कर काम-क्रोध-मद-लोभ के काले कारनामें छपवाना या त्याग, वैराग्य, क्षमा-शील-सौजन्य आदि सद्गुण रूपी स्वर्णाक्षरों से सजाना, यह स्वयं अपने हाथ की बात है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन ग्रन्थ को लिखने का स्वयं जिम्मेदार है। उस उत्तम डायरी को सुन्दर, सुसज्जित और आदर्श बनाएँ, जीवन के एक-एक पृष्ठ पर परमात्मा की भक्ति के पुष्प खिलाएं और सद्भावों के सप्तरंगी चित्रों से अपने जीवन-ग्रन्थ को सजाएं ताकि उस ग्रन्थ को सभी पढें और कहें-

जीवन ग्रन्थ कितना सुंदर, अक्षर कितने प्यारे हैं।
जो चाहो पढ कर देखो, अनुभव मिलते सारे हैं॥

जीवन एक सफर है। इस सफर में कहीं घाटियाँ हैं कहीं ऊबड़खाबड़ जमीन। कहीं द्वन्द्व है, कहीं विषाद। कहीं धूप है, कहीं छाया। नाना रूपों का समन्वय है जीवन। जीवन शब्द की मीसांसा अपने आप में एक संदेश है। यथा-

जी जीतो अर्थात् पांचों इन्द्रियों के विकारों को जीतो।

व अर्थात् वमन करो। राग-द्वेष कषाय का जो विष है उसका वमन करो।

न अर्थात् नए-नए सर्जनात्मक कार्य करो।

जो व्यक्ति सर्जनात्मकता में, रचनात्मकता में अपनी शक्ति को

नियोजित कर देता है वह अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करता है, किन्तु आज का मानव जीवन के अर्थ और साधना को नहीं समझ कर अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहा है, अतः दुःखी और अशान्त है।

जीवन का अर्थ क्या है? जीवन की साधना क्या है? क्या 50-60-100 वर्ष जी लेना मात्र जीवन है? जीवन का मूल्यांकन क्या इसी आधार पर होता है कि कितना लम्बा, दीर्घ जीवन गुजरा या गुजरने वाला है? नहीं, जीवन का अर्थ जीना मात्र नहीं है। हजार वर्ष जीकर भी जीवन का कोई मूल्य स्थापित नहीं हो सकता और एक दिन एवं एक घड़ी के जीवन से भी जीवन की सम्पूर्ण श्रेष्ठता और पूर्ण मूल्य प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन का अर्थ है कि वह किस तरीके से जीया जा रहा है? उसमें तेजस्विता और प्रभावशीलता कितनी है? जीवन एक साधना है। उस साधना के द्वारा जो अपने आप को परखता है, अपनी अंतरात्मा को पाता है, अपने को आगे बढ़ाता है, अंतरमलों को धोकर चेतना को शुद्ध और निर्मल बनाता है, दूसरों के लिए स्वयं समर्पित हो जाता है इसी में उसके जीवन का महत्त्व छिपा है। इसी के आधार पर उसका मूल्यांकन किया जाता है।

मानव जीवन का ध्येय- मानव अखिल संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, परन्तु जरा विचार करें कि वह श्रेष्ठता किस बात की है? मनुष्य के पास ऐसा क्या है, जिसके बल पर वह स्वयं भी अपनी श्रेष्ठता का दावा करता है और हजारों शास्त्र भी उसकी श्रेष्ठता की दुहाई देते हैं। खाने-कमाने की, मौज शोक उड़ाने की यदि मनुष्य ने कुछ चतुरता पाई है तो क्या यह उसकी अपनी कोई श्रेष्ठता है? क्या इस चातुर्य पर गर्व किया जाय? नहीं, यह मनुष्य की कोई विशेषता नहीं है।

मानव जीवन का ध्येय न धन है, न रूप है, न बल है और न सांसारिक बुद्धि ही है। यों ही कहीं से घूमता-फिरता भटकता आत्मा मानव शरीर में आया, कुछ दिन रहा, खाया-पिया, लड़ा-झगड़ा, हंसा-रोया और एक दिन मर कर काल प्रवाह में आगे के लिए बह गया। भला यह भी कोई जीवन है?

क्या मानव जीवन का ध्येय एक मात्र जन्म लेना और मर जाना ही है। क्या हम यों ही उतरते-चढ़ते, गिरते-पड़ते इस महाकाल के प्रवाह में तिनके की तरह बेबस लाचार बहते ही जायेंगे? क्या कहीं किनारा पाना, हमारे भाग्य में नहीं

लिखा है?

नहीं, हम मनुष्य हैं, विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं। हम अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करेंगे।

हमारे जीवन का ध्येय, अधर्म नहीं धर्म है, अन्याय नहीं न्याय है, दुराचार नहीं सदाचार है, भोग नहीं त्याग है। धर्म, त्याग और सदाचार ही हमें पशुता से अलग करता है। धर्म ही मनुष्य के पास ऐसा तत्त्व है जो उसकी अपनी विशेषता है। अतः जो मनुष्य धर्म से शून्य हैं वे पशु के समान ही हैं। सच्चा मनुष्य वही है जिसकी आत्मा धर्म और सदाचार की सुगंध से निशदिन महकती रहती हो।

भगवान् महावीर ने या दूसरे महापुरुषों ने मनुष्य की श्रेष्ठता के जो गीत गाए हैं- वे धर्म और सदाचार के रंग से गहरे रंगे हुए मनुष्यों के ही गाए हैं। मनुष्य के जैसे हाथ-पैर पा लेने से कोई मनुष्य नहीं बन जाता। मनुष्य बनता है, मनुष्य की आत्मा पाने से, मनुष्यता पाने से। मनुष्यता है- मनुष्य का व्यक्तिगत भोग-विलास की मनोवृत्ति से अलग रहना, त्याग-मार्ग अपनाना, धर्म और सदाचार के रंग में रंगना, जन्म-मरण के बंधनों को तोड़ कर अजर-अमर मनुष्यता का पूर्ण प्रकाश पाना, वह प्रकाश जिससे बढ़ कर कोई प्रकाश नहीं, वह ध्येय जिससे बढ़ कर कोई ध्येय नहीं।

(क्रमशः)

-नेहरू गेट के बाहर, ब्यावर-305901

सफलता के सूत्र

श्री नवरतन डागा

1. सिद्धान्तों से समझौता न हो।
2. व्यवहार में कटुता एवं वाणी में व्यंग्य न हो।
3. आचरण में शिथिलता न हो।
4. जीवन में प्रमाद न हो।
5. लक्ष्य बनाओ, कदम बढ़ाओ और मंजिल पाओ।

-संयोजक

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर(राज.)

बाल-स्तम्भ

कपिल मुनि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 फरवरी 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

कौशाम्बी नगरी में जितशत्रु नामक राजा राज्य करता था। चौदह विद्याओं में पारंगत एवं नगर-जनों द्वारा आदरणीय काश्यप ब्राह्मण उसकी राजसभा का रत्न था। काश्यप से राजा बहुत ही प्रभावित था। अचानक काश्यप की मृत्यु हो गई। उस समय काश्यप का पुत्र कपिल बहुत ही छोटा था। इसलिए राजा ने काश्यप के स्थान पर दूसरे ब्राह्मण को नियुक्त कर दिया। वह ब्राह्मण जब घोड़े पर चढ़कर, छत्र धारण किये, बड़े ठाट-बाट से राजसभा में जाता, तब काश्यप की पत्नी यशा को अपने पति का स्मरण हो आता, वह विह्वल होकर आँखों से गंगा-यमुना बरसाने लगती थी। कपिल उस समय नासमझ बालक था, इसलिए माँ की हृदय-वेदना को समझ नहीं पाता था। वह जब कुछ बड़ा हुआ तो माता से रोने का कारण पूछा। उसने अपनी अन्तर्व्यथा प्रकट की- "बेटा! एक समय था, जब तेरे पिता भी इसी ठाठ-बाट के साथ राजसभा में जाया करते थे। वे अनेक विद्याओं में पारंगत थे, इसलिए राजा और नागरिक सभी उनसे प्रभावित थे। उनके देहावसान के बाद राजा ने वह स्थान दूसरे ब्राह्मण को दे दिया है, क्योंकि तू अभी छोटा है और विद्वान् भी नहीं है। इसी अन्तर्व्यथा के कारण मेरा हृदय भर आता है तथा आँसू के रूप में अपनी वेदना व्यक्त करता है।"

बालक कपिल माँ की व्यथा को समझ गया। वह बोला-"माँ, मैं

भी विद्याएँ पढ़कर विद्वान् बनूँगा।'' उसकी माँ ने कहा- ''पुत्र! यहाँ के सभी ब्राह्मण ईर्ष्या से जलते हैं, वे तुझे अध्ययन नहीं करायेंगे। अगर तू विद्याध्ययन करना चाहता है तो श्रावस्ती में तेरे पिता के मित्र इन्द्रदत्त उपाध्याय रहते हैं। उनके पास चला जा। वे तुझे विद्याध्ययन करायेंगे।''

माता का आशीर्वाद लेकर कपिल श्रावस्ती पहुँचा। वहाँ पूछते-पूछते वह इन्द्रदत्त उपाध्याय के यहाँ जा पहुँचा। इन्द्रदत्त ने आगन्तुक से सारा परिचय पूछकर अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहा- ''वत्स! निश्चिन्त होकर पढ़ो, मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा।'' इन्द्रदत्त ने उसके भोजन की व्यवस्था श्रेष्ठी शालिभद्र के यहाँ कर दी। श्रेष्ठी ने एक दासी नियुक्त कर दी, जो कपिल को भोजन कराती थी। दासी हँसमुख स्वभाव की थी। दिन बीतते गये। धीरे-धीरे दोनों का परिचय बढ़ा और एक दिन वह प्रणय में परिणत हो गया। दासी ने अपना हृदय कपिल को समर्पित कर दिया। परन्तु दोनों निर्धन थे, इसलिए इस प्रणय को विवाह रूप में प्रकट नहीं कर सके।

एक बार श्रावस्ती में कोई विशाल जन-महोत्सव होने वाला था। इस महोत्सव में दासी को जाना था, परन्तु उसके पास महोत्सव में जाने योग्य वस्त्र, आभूषण आदि कुछ भी नहीं थे। अतः वह उदास हो गई। दासी की उदासीनता का कारण जाना तो कपिल को अपनी पौरुषहीनता पर खेद हुआ। दासी ने उसकी खिन्नता दूर करने का एक उपाय सुझाया- 'इस नगरी में एक धनकुबेर सेठ है, वह प्रातःकाल सर्वप्रथम बधाई देने वाले व्यक्ति को दो माशा सोना देता है। तुम भी उसे बधाई देकर दो माशा सोना ले आओ तो मैं भली-भाँति महोत्सव मना सकूँगी।'

कपिल की आँखों में खुशी की चमक आ गई। उसने दासी की बात मान ली और सबसे पहले पहुँचने के अभिप्राय से वह अर्द्धरात्रि में ही घर से चल पड़ा। नगर के आरक्षकों ने कपिल को भागते हुए देखकर चोर के सन्देह में उसे पकड़ा और राजा के समक्ष उपस्थित किया।

राजा ने उससे रात्रि में आवारा घूमने का कारण पूछा तो कपिल ने सरल-भाव से ज्यों की त्यों अपनी आपबीती सुना दी। कपिल की स्पष्टता, सरलता एवं चेहरे पर शान्ति से राजा बहुत प्रभावित एवं प्रसन्न हुआ। उसने कपिल से मनोवांछित वस्तु माँगने के लिए कहा। कपिल

विचार करने के लिए कुछ समय लेकर निकटवर्ती उद्यान में चला गया। वहाँ बैठते ही उसने सोचा- "दो माशा सोने से क्या होगा? क्यों नहीं मैं राजा से 100 स्वर्ण मुद्राएँ माँग लूँ।" फिर सोचा- सौ मुद्राओं से क्या होगा? उसकी चिन्तनधारा क्रमशः हजार, लाख और करोड़ स्वर्णमुद्राओं तक पहुँच गई। इस तरह काफी देर तक वह इसी उधेड़-बुन में लगा रहा। वह कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा था कि क्या और कितना माँगा जाए? हर बार सोची हुई स्वर्णमुद्राओं की संख्या उसे कम ही लग रही थी। उसे विराम और सन्तोष नहीं मिल रहा था। अन्ततोगत्वा उसके चिन्तन ने सहसा नया मोड़ लिया- मैं कितना पागल हूँ! सारे संसार का धन मिल जाए, तब भी क्या मन को सन्तुष्टि और शान्ति मिल सकती है?

उसे पश्चात्ताप हुआ कि माता से आशीर्वाद लेकर मैं यहाँ विद्याध्ययन करने आया था, किन्तु उसके प्रति उपेक्षा करके मैं लग गया विषयभोगों के गोरखधन्धे में। मैंने माता एवं गुरु से वंचना की, कुलाचार का लोप किया। धिक्कार है मुझे! धन आदि वस्तुओं से निरपेक्षता, सन्तोष, त्याग और निर्लोभता ही सच्ची शान्ति के उपाय हैं। कपिल के मन को अब समाधान मिल गया था। सन्तोष और वैराग्य से उसका मन भाव विभोर होकर अध्यात्म चिन्तन में डूब गया। चिन्तन करते-करते सहसा कपिल को जातिस्मरण ज्ञान हो गया। वह स्वयंबुद्ध हो गया। उसने स्वयं अपने मस्तक का लुंचन किया और मुनिदीक्षा ग्रहण करके मुख पर सन्तोष, त्याग और संयम का तेज लिए राजा के पास पहुँचा। राजा ने पूछा- "विप्रवर! क्या सोचा है आपने? जल्दी कहिए।" कपिल ने निःस्पृहभाव से कहा- "राजन्! अब मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। जो कुछ पाना था, वह मैंने पा लिया।" राजा ने बहुत आग्रह किया कि त्यागी का वेष छोड़ दो, मुझसे करोड़ मुद्राएँ ले लो और यथेष्ट सुखभोग करो। परन्तु कपिल ने उत्तर दिया कि निःस्पृह एवं निर्ग्रन्थ मुनि को इस अनित्य-असार द्रव्य की कोई आवश्यकता नहीं है। साथ ही कपिल मुनि ने राजा को लोभ और अलोभ वृत्ति के परिणाम समझाए और वहाँ से विहार कर गये।

कपिल मुनि की संयम साधना चलती रही। छह महीने की अवधि तक वे छद्मस्थ अवस्था में रहे और फिर केवलज्ञान प्राप्त किया।

एक बार केवली कपिल मुनि श्रावस्ती और राजगृही के बीच 18 योजन के एक महारण्य में विहार कर रहे थे। तभी बलभद्र प्रमुख इक्कड़-दासीम 500 चोरों ने उन्हें घेर लिया। उनके अनुरोध से कपिल मुनि ने उन्हें समझाया कि-सन्तोष, संयम, त्याग और अहिंसादि व्रत ही दुर्गति से बचने के मार्ग हैं। चोरों पर प्रभाव पड़ा। वे भी विरक्त एवं प्रतिबुद्ध होकर मुनिधर्म में दीक्षित हो गये। **(उत्तराध्ययन सूत्र भाग 1 से संकलित)**

प्रश्न :-

1. माँ की अन्तर्व्यथा जानकर बालक कपिल ने क्या किया?
2. कपिल की आँखों में चमक क्यों आई?
3. राजा कपिल की किस बात से प्रभावित हुआ?
4. कपिल को संसार से विरक्ति क्यों हुई?
5. अर्थ बताइये- विह्वल, पौरुषहीनता, मनोवांछित, आरक्षक जातिस्मरण ज्ञान, विप्रवर, छद्मस्थ।
6. मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिये- आँखों से गंगा यमुना बरसना।
7. संधिविच्छेद कीजिए- अन्तर्व्यथा, विद्याध्ययन, उपाध्याय, यथेष्ट, अध्यात्म, महारण्य, अहिंसादि।

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2009] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'ढंढण मुनि' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 51 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	रूपल जैन-भीलवाड़ा	29
द्वितीय पुरस्कार-200/-	नमन मेहता-पीपाड़ सिटी	28.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	संदीप जैन-बेल्लारी(कर्नाटक)	28
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	पल्लवी जैन- जोधपुर	27
	प्रीति लुंकड़-जोधपुर	27
	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	27
	अर्पित जैन-जोधपुर	27
	दीक्षा-मालेगाँव	27

स्वास्थ्य विज्ञान

रात्रि-भोजन का निषेध स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है

डॉ. चंचलमल चोरडिया

जीवन के लिये भोजन आवश्यक है उससे भी अधिक उसका पाचन आवश्यक है। अतः हमें उन सब कारणों से बचना चाहिये जो भोजन का पाचन करने में बाधक होते हैं। प्रकृति में एक निश्चित नियमानुसार दिन-रात होते हैं। व्यक्ति की दिनचर्या और रात्रिचर्या का अलग-अलग विधान होता है। शरीर के अलग-अलग अंग और अवयव भी उसी के अनुसार अधिक और कम सक्रिय होते हैं। अतः भोजन कैसे किया जाये? कितना किया जाये? कहाँ किया जाये? कब किया जाये? आदि की जानकारी भी आवश्यक है ताकि जो भोजन हम करते हैं उसका अधिकाधिक लाभ मिल सके। इन तथ्यों की उपेक्षा से अच्छे से अच्छा पौष्टिक भोजन भी लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानिकारक बन जाता है।

भोजन कब करें?

जब हमें अच्छी भूख लगे तब ही भोजन करना चाहिए। भूख का संबंध हमारी आदत पर निर्भर करता है। जैसी हम आदत डालते हैं उस समय हमें भूख लगने लगती है। अतः हमें भोजन की ऐसी आदत डालनी चाहिये जब आमाशय-पेन्क्रियाज अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय हों। प्रातःकाल सूर्योदय के लगभग एक घंटे पश्चात् से दो घंटे तक आमाशय एवं उसके लगभग दो घंटे पश्चात् आमाशय के सहयोगी पूरक अंग तिल्ली/पेन्क्रियाज में प्रकृति से अधिक प्राण ऊर्जा मिलने से अधिक सक्रिय होते हैं। मुख्य भोजन का सबसे श्रेष्ठ समय यही होना चाहिए। इसी प्रकार सूर्यास्त के बाद लगभग दो घंटे तक आमाशय और उसके दो घंटे पश्चात् तिल्ली/पेन्क्रियाज प्रकृति से निम्नतम प्राण ऊर्जा का प्रवाह होने से पूर्ण रूप से सक्रिय नहीं होते। उस समय किये गये भोजन का पाचन सरलता से नहीं होता। अतः उस समय भोजन नहीं करना चाहिए।

सूर्य के ताप का शरीर पर प्रभाव

सूर्य की रोशनी से शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। इसी कारण प्रायः

अधिकांश रोगों का प्रकोप रात में बढ़ने लगता है। प्रत्येक बीमारी अपेक्षाकृत रात में ज्यादा सताती है। इसका मुख्य कारण रात में सूर्य की गर्मी का अभाव होता है। जिस प्रकार चूल्हे पर रखी हुई वस्तु को जब अग्नि की गर्मी मिलती है तभी वह पकाती है, उसी प्रकार हमारे आमाशय में जो भोजन हम डालते हैं वह भी पेट की उष्णता (जठराग्नि) के कारण ही पचता है। इसी कारण जिसकी जठराग्नि प्रदीप्त होती है उसकी पाचन शक्ति अच्छी मानी जाती है। भोजन करते समय उन सब नियमों का पालन करने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे जब तक भोजन का पूर्ण पाचन न हो, पाचन शक्ति मन्द न पड़े, भोजन नहीं करना चाहिए। भोजन में शक्ति का माप केलोरिज की उष्णता पर आधारित होता है। पेट में नाभि का कार्य कमल जैसा है। कमल को भारतीय संस्कृति में निष्कामता, निर्मलता और निर्लिप्तता का प्रतीक कहा गया है। कमल और सूर्य का संबंध विख्यात है। कमल सूर्योदय के साथ खिलता है और सूर्यास्त के साथ सक्रियता में अन्तर आ जाता है। विशेष रूप से नाभि कमल का पाचन में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। सूर्यास्त के पश्चात् इसके सक्रिय न होने से रात्रि-भोजन का पाचन बराबर नहीं होता। इसलिए तो कहा गया है **"सुबह का खाना खुद खाओ, दोपहर का दूसरों को खिलाओ और रात्रि का खाना दुश्मन को खिलाओ।"**

रात्रि में मूल धारा, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा एवं सहस्रार आदि शरीर में स्थित ऊर्जा चक्रों एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थियों की सक्रियता कम होने लगती है, जिससे हमारी शारीरिक क्षमता भी प्रभावित होने लगती है। फलतः रात्रि भोजन का पूर्ण लाभ नहीं मिलता।

कीटाणुओं का भोजन पर प्रभाव

सूर्यास्त के पश्चात् बहुत से सूक्ष्म जीव पैदा हो जाते हैं। सूर्य का प्रकाश इन कीटाणुओं को पैदा होने से रोकता है। सूर्य के ताप में अनेक विषैले कीटाणु निष्क्रिय बन जाते हैं, जो सूर्यास्त के बाद पुनः सक्रिय होने लगते हैं। प्रायः हम अनुभव करते हैं कि दिन में 1000 वाट के बल्ब के पास भी सूक्ष्म जीव नहीं आते जबकि रात में थोड़ी सी रोशनी में बल्ब के आसपास मच्छर मंडराने लगते हैं। ये जीव आहार की गन्ध के कारण भोज्य पदार्थों की तरफ आकर्षित होते हैं। वहीं दूसरी तरफ भोजन में भी अनेक सूक्ष्म बैक्टीरिया उत्पन्न हो जाते हैं। इनका रंग

भोजन के रंग जैसा ही होने से कृत्रिम प्रकाश में हम उन्हें नहीं देख पाते हैं। कृत्रिम प्रकाश में उजाला तो है, परन्तु वह सूर्य की बराबरी नहीं कर सकता। पूर्ण शाकाहारियों के लिये रात्रिभोजन निश्चित रूप से त्याज्य होता है। रात्रि में तमस (अंधेरे) के कारण वैसे भी भोजन तामसिक बन जाता है तथा ऐसा भोजन करने से व्यक्ति की मानवीय प्रवृत्तियाँ तामसिक प्रवृत्तियों में बदलने लगती हैं। शरीर और मन में विकार उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति स्वार्थी बनने लगता है, ध्यान, आत्म-चिंतन व स्वाध्याय में बाधा उत्पन्न होने लगती है। रात्रि-भोजन से स्मरण-शक्ति कमजोर होने लगती है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पूर्ण रूपेण विकसित नहीं कर पाता।

दिन में प्राणवायु की अधिकता

सूर्य के प्रकाश में अधिकांश वृक्ष एवं पेड़-पौधे ऑक्सीजन रूपी प्राणवायु छोड़ते हैं। अतः वायुमण्डल में रात्रि की अपेक्षा दिन में ऑक्सीजन की मात्रा अपेक्षाकृत ज्यादा रहती है। सूर्य के प्रकाश में एवं प्राण वायु की अधिकता में पाचन सरलता से होता है। इसके विपरीत रात में अधिकांश वृक्ष ऑक्सीजन ग्रहण कर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक कार्बन डाई आक्साइड छोड़ते हैं, ऐसे वातावरण में भोजन से आरोग्य बिगड़ता है।

रात्रि भोजन के संबंध में विभिन्न धार्मिक मान्यताएँ

अहिंसा धर्म की कसौटी है। इस कारण रात्रि-भोजन निषेध की बात किसी न किसी रूप में विभिन्न धर्म ग्रन्थों में मिलती है। महाभारत में स्पष्ट उल्लेख है-

मद्यमांसाशनं रात्रिभोजनं कन्दभक्षणं।
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां तीर्थयात्रा जतस्तपः॥

अर्थात् रात्रि भोजन में जो हिंसा होती है इसके कारण जप, तप और तीर्थ यात्रा आदि सब व्यर्थ हो जाते हैं। उसको नरक का प्रथम द्वार बताया है। "चत्वारि नरकद्वारं, प्रथमं रात्रिभोजनम्।" चरक संहिता के अनुसार रात्रि-भोजन दूषित और अम्लीभूत होने से शरीर को बहुत क्षति पहुँचाता है।

मार्कण्डेय पुराण में तो सूर्यास्त के बाद अन्न, मांस और जल को रक्त जैसा हो जाने की बात बहुत स्पष्ट शब्दों में वर्णित है, जिसके भाव निम्न हैं -

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं मार्कण्डेयमहर्षिणा।

गीता के सतरहवें अध्ययन के दसवें श्लोक में कहा गया है-

यातयामं गतरसं पूतिपर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।।

अर्थात् रात में खाया हुआ तथा नीरस, दुर्गन्ध युक्त, बासी, किसी जीव जन्तु के द्वारा जूठा किया हुआ और अपवित्र आहार तामस मनुष्यों को ही प्रिय होता है।

योगशास्त्र में भी रात्रि-भोजन रूपी तामसिक भोजन का स्पष्ट निषेध किया गया है। जैन धर्म में तो रात्रि भोजन का पूर्ण निषेध है। कोई भी जैन साधु-साध्वी एवं श्रावकाचार का पालन करने वाला सद्-गृहस्थ रात्रि में भोजन नहीं करता।

रात्रि भोजन और निद्रा

भोजन के तुरन्त बाद पानी पीने से पाचन बिगड़ता है। भोजन के पश्चात् जितनी अधिक देर बाद पानी पीया जायेगा वह उतना अधिक लाभकारी होता है। जब रात में देर से खाना खायेंगे तो पानी भी देर से पीना पड़ेगा और देर रात निद्रा लेनी पड़ेगी। निद्रा में पेशाब हेतु बार-बार उठना पड़ेगा। अर्थात् गहरी निद्रा नहीं आयेगी।

भोजन और शयन के बीच कम से कम चार घंटे का अंतर आवश्यक है। निद्रा के समय तक भोजन का पूरा पाचन न हो तो भोजन का अंश आमाशय में ही पड़ा रहता है और पाचन संबंधी अनेक रोगों को पैदा करने का कारण बनता है। अंग्रेजी में एक कहावत है- **Early to Bed & Early to Rise makes a man Healthy, Wealthy & Wise** अर्थात् जल्दी सोने तथा जल्दी उठने से व्यक्ति स्वस्थ, सम्पन्न, समृद्धशाली और बुद्धिमान होता है। इस दृष्टि से भी जब व्यक्ति देर से भोजन करेगा तो सोएगा भी देर से और उठेगा भी देर से। ऐसे व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते। **आज मधुमेह जैसे अनेक पाचन संबंधी रोगों को पैदा करने में रात्रि-भोजन भी एक मुख्य कारण है।**

रात्रिभोजन एवं पारिवारिक व्यवस्था

मनुष्य जीवन का मुख्य ध्येय नर से नारायण बनना है, जिसके लिये आत्म-चिन्तन, ध्यान, स्वाध्याय के लिये समय आवश्यक है। जिस घर में रात्रि भोजन नहीं होता है, वहाँ महिलाओं को भोजनशाला से जल्दी छुट्टी मिल जाती है। ऐसे परिवारों को जहाँ दिन में भोजन बन जाता है, जैन संतों को भिक्षा का भी सहज

लाभ मिल सकता है। ऐसे परिवारजनों को सामाजिक कार्यों के लिये भी अधिक समय मिल सकता है। परिवार के सदस्यों के साथ आमोद-प्रमोद हेतु रात्रि में आसानी से सभी भागीदार हो सकते हैं। जल्दी खाने एवं जल्दी सोने से प्रातः जल्दी उठना सरल होता है, जो आत्म-साधना एवं स्वाध्याय के लिये सर्वोत्तम समय है।

रात्रि-भोजन क्यों?

रात्रि-भोजन के लिये एक तरफ जहाँ हमारी असजगता एवं उससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी का अभाव जिम्मेदार है, तो दूसरी तरफ हमारी सामजिक व सरकारी व्यवस्थायें भी उतनी ही जिम्मेदार हैं। कार्यालयों में भोजनावकाश का समय निर्धारित करते समय स्वास्थ्य के अनुकूल समय पर भोजन करने के समय की पूर्ण उपेक्षा की गयी है। जैसी व्यवस्था होती है, उसी के अनुरूप जन साधारण अपने आपको ढालता है। जब बच्चे प्रातःकाल जल्दी पाठशाला जायेंगे और दोपहर बाद घर पहुँचेंगे तो पारिवारिक सदस्य समय पर कैसे भोजन कर सकते हैं? दो भोजन के बीच कम से कम 7 से 8 घंटों का अन्तर होना चाहिये। अतः जब सुबह खाना देर से खायेंगे तो रात का खाना स्वतः देरी से हो जायेगा, क्योंकि बिना भूख खाना भी तो उचित नहीं।

दूसरी तरफ नाश्ते का प्रचलन बढ़ गया है जो हमारी भूख को समाप्त कर देता है। अतः जिन लोगों को समय पर खाने की अनुकूलता है वे भी समय पर खाना नहीं खाते। परिणामस्वरूप लंच और डिनर आज रोगों के मंच बनते जा रहे हैं।

व्यक्ति का भोजन के बारे में जितना संयम रहना चाहिये, उतना नहीं है। इसलिये जब चाहा, जो चाहा, जहाँ चाहा पेट में डाल देता है, जिससे सौर मण्डल की दृष्टि से पाचन के लिये जो सर्वश्रेष्ठ समय है, उस समय उसको भूख ही नहीं लगती।

रात्रि के प्रकाश के बारे में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति के संबंध में हमारी मिथ्या धारणाएँ हैं। फलस्वरूप रात्रि भोजन को आधुनिकता का प्रतीक समझने की भूल हो रही है। सोते हुए को जगाया जा सकता है, परन्तु जो जाग्रत व्यक्ति निद्रा का बहाना कर सोये उसको जगाना बहुत मुश्किल है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर- 342003 (राज.)

website: chordiahealthzone.com

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (24)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (24) का आयोजन 'जिनवाणी' के अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर-2009 के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, 5, पंचवटी, कटर मशीन की गली में, न्यू मंडी रोड, आलनपुर-322021, सवाईमाधोपुर (राज.) फोनं. 9460441351** के पते पर **5 फरवरी, 2010** तक मिल जाने चाहिए। युवा श्रेणि एवं सामान्य श्रेणि में श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को अलग-अलग क्रमशः 1001 रुपये, 501 रुपये एवं 251 रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। 100 रुपये के दस-दस प्रोत्साहन पुरस्कार भी दोनों श्रेणियों में दिए जायेंगे। युवा श्रेणि के पुरस्कार 15 से 45 वर्ष के उत्तरदाताओं को दिए जायेंगे। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।-सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

01. मुझमें घर के प्रत्येक सदस्य को धर्म से जोड़ सकने की शक्ति है।
02. मेरा नशा चढ़ जाए तो दिशा ही नहीं, दशा भी बदल जाती है।
03. मैं जीवन को अनन्त रसमय बनाने में समर्थ हूँ।
04. अनन्तानुबंधी कषाय का क्षय केवल मेरे वश में ही हो सकता है।
05. सामान्य रूप से मेरा अभिप्राय करणीय कार्य से लिया जाता है।
06. मैं जीव के लिए परम हितकारी हूँ।
07. मुझमें छह की संख्या का अन्त तक निर्वाह है।
08. सेवा के साथ मैं जुड़ जाऊँ तो सेवा का मूल्य बहुगुणित हो जाता है।
09. मैं ही आत्म-सुधार का बीज बनता हूँ।
10. मेरे से कर्म-निर्जरा का द्वार खुलता है।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

11. परीषहों में अडिग रहकर अनाचारों में प्रवृत्त न होना कौनसा पुरुषार्थ है?
12. "सोने का है तो फैंका क्यों और फैंका है तो सोने का कैसे?" क्या?
13. लोभ का क्या नहीं होता?
14. पार्श्व की परंपरा के ग्रन्थों को किस नाम से जाना जाता है?
15. साधक जीवन में काले नाग की उपमा किसे दी गई है?
16. जैन दर्शन की भाषा में मोबाइल किसकी माया है?
17. पुद्गल वर्गणाओं की कर्मरूप में परिणति क्या कहलाती है?
18. किस प्रकार का प्रदूषण आतंकवाद का जनक है?
19. दोष-अदोष का अन्वेषण-निरीक्षण या शोध क्या कहलाता है?
20. अपने को वस्तु मान लेना कौनसा मिथ्यात्व है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

21. धर्म शिक्षा एवं.....के द्वारा मन को वशीभूत किया जा सकता है।
22. इस जग की.....ने मुझको, डाला गर्भावास।
23. जैन ध्वज के बीच में.....चिह्न अति मंगलकारी है।
24. धन और जीवन जल के.....के समान है।
25. .....स्वतन्त्रता मानव अधिकारों में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

(घ) निम्न कथन किसने कहे?-

26. जो मोक्ष से जोड़ता है, वह योग है।
27. तीनों अंत में भूखे मर जायेंगे।
28. विरोध मेरे लिए विनोद है।
29. यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो भारत में हो, जैन कुल में हो।
30. भगवन्! यह नाटक दिखाने वाला कौन था?

(ड) अंकों में उत्तर दीजिये।

31. आचार्य श्री का कितने प्रांतों में पद-विहार हुआ?
32. हमारे शरीर में मस्तिष्क से इतर अन्य मार्गों में कितने सौ करोड़ स्नायु सेल्स हैं?
33. कितने भेदों में वाणी के वर्तन को रोकने से संयत की पहचान होती है?

34. संविधान का कौनसा अनुच्छेद सभी धर्मों की समानता को सुनिश्चित करता है?
35. वेदना-समुद्घात कितनें गुणस्थानों में नहीं पाया जाता है?
36. जन्म लेने से कितनें मिनट बाद देवता जवान हो जाते हैं?
37. आचार्य हस्ती की जन्मतिथि बतलाइए।
38. मनुष्य की बुद्धि में कितने खरब सेल बताए गए हैं?
39. स्वस्थ अवस्था में हमारे शरीर का तापक्रम कितने डिग्री फारहनाइट होता है?
40. एक साता के पीछे कितनी असाता लगी हुई है ?

(च) हाँ/ना में उत्तर दीजिए।

41. वाहन चलाते समय मोबाइल पर वार्ता करना अदण्डनीय अपराध है।
42. क्रोध कषाय से आत्मा तृप्त हो जाती है।
43. स्वाध्याय से विकारों का व सामायिक से विचारों का शोधन होता है।
44. हमको शुभ क्रिया से और आगे बढ़कर अक्रिय हो जाना है।
45. भगवान् से चाहने वाला भगवान् के नजदीक जाता है और भगवान् को चाहने वाला संसार बढ़ाता है।
46. गाय का घी विटामिन 'ए' से युक्त होता है।
47. मृत्यु जीवन यात्रा की समाप्ति है।
48. श्रेष्ठी से भिक्षा में प्राप्त मोदक प्रासुक एवं अकल्प्य थे।
49. समयनिष्ठ महापुरुष कभी चमत्कार नहीं दिखाते।
50. हमारी सुख शान्ति की समाप्ति, फस्ट मनोवृत्ति का नतीजा है।

शुभकामनाएँ

नववर्ष सन् 2010 के लिए समस्त सम्मान्य पाठकों एवं लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएँ। जिनवाणी आप सबकी है, आप-हम सबके कल्याण के लिए है। आपकी भावनाएँ एवं सकारात्मक विचार सदैव आमन्त्रित हैं। यह वर्ष आचार्य हस्ती की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में अध्यात्म-चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। अतः आध्यात्मिक-चेतना जागृत करने वाली रचनाएँ विशेषतः आमन्त्रित हैं। श्रेष्ठ रचनाओं को पूर्ववत् पुरस्कृत किया जायेगा।-**सम्पादक**

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (1)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रत्येक माह 25 प्रश्न प्रकाशित किये जायेंगे। प्रतियोगी को अपने उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते, (अंग्रेजी में) दूरभाष न. सहित Smt. Vaijayanti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 5th main, 5th cross, Tyagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 093144-66039 के पते पर प्रत्येक माह की 25 तारीख पर प्रेषित करने हैं। उसके पश्चात् प्राप्त होने वाले उत्तर प्रतियोगिता के लिये मान्य नहीं होंगे।

प्रत्येक माह सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(प्रारम्भ से पृष्ठ 50 तक से प्रश्न)

(अ) एक शब्द में उत्तर दीजिए।

1. कर्म का उपदेश देते हुए भगवान् ने सर्वप्रथम कौनसा कर्म सिखाया?
2. क्रमबद्ध-शृंखलाबद्ध संकलन- आलेखन का नाम क्या है?
3. जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने किसकी रचना की?
4. शान्त, स्वस्थ एवं स्वतन्त्र जीवन जीने वाले पुरुष कौन थे?
5. सेठ ने आचार्य से क्या ग्रहण करने की प्रार्थना की?
6. प्रभु ने किसका पान किया?

(आ) अंकों में उत्तर दीजिये।

7. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में.....कुलकरों का उल्लेख है।

8. जीवानन्द के.....अन्तरंग मित्र थे।
9. कल्पसूत्र में भगवान् ऋषभदेव के.....नामों का उल्लेख है।
10. एक कालचक्र.....क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का होता है?
11. आचार्य भद्रबाहु ने दशवैकालिक, आवश्यक आदि.....सूत्रों पर निर्युक्ति की रचना की।
12. सुमंगला ने कालान्तर में पुनः गर्भ धारण कर.....पुत्र युगलों को जन्म दिया।

(इ) शब्दों के अर्थ लिखिये।

13. सरगयं 14. मागहियं 15. वाइयं
16. घणुवेयं 17. पडिचारे 18. ईसत्थं

(ई) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।

19. मरुदेवी ने प्रथम स्वप्न में..... को मुख में प्रवेश करते हुए देखा।
20. इतिहास अतीत के.....का चक्षु है।
21. युगलिक.....को देखकर सहम उठे।
22. आचार्य ने सार्थवाह को.....की मर्यादा समझाई।
23. भरत क्षेत्र से.....प्रयाण कर चुका है।
24. शताब्दियों से भगवान् ऋषभदेव प्रायः.....के नाम से विख्यात हैं।
25. सम्पूर्ण जगत् के.....धर्मतीर्थ को प्रकट कीजिये।

नव वर्ष पर सुखी जीवन के लिए संकल्प

1. मैं दूसरों के साथ स्वयं की तुलना नहीं करूँगा।
2. मैं किसी से सेवा और सुख-सुविधाओं की मांग नहीं करूँगा।
3. मैं सादगी को अपना आदर्श मानूँगा। 'सादा जीवन उच्च विचार' जीवन का उद्देश्य होगा।
4. मैं सदैव सुझाव व अनुरोध की भाषा बोलूँगा, आदेशात्मक नहीं।
5. प्रतिकूल परिस्थिति में ठीक है, इस शब्द का प्रयोग करूँगा तथा आज कल से बेहतर है। यह मानूँगा।
6. मैं खाने-पीने एवं बोलने में संयम रखूँगा।
7. दिनचर्या नियमित रखूँगा। प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन करूँगा, काम टालू प्रवृत्ति का पूरी तरह त्याग करूँगा।

-प्रेषक : अभयकुमार जैन, भवानी मण्डी,

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

मुक्ति का राही- सम्पतराज चौधरी, ***प्रकाशक*** - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003, दूरभाषः 0141-2575997, 0141-2570753, ***पृष्ठ***-16+232 (आर्ट पेपर), ***मूल्य***- 100 रुपये, ***आवृत्ति***- प्रथम संस्करण सन् 2009

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज इस युग की एक महान् विभूति थे। उनका अप्रमत्त सन्त-जीवन निर्भयता के साथ मुक्तिमार्ग पर दृढ़ता एवं आत्मविश्वास से बढ़ते कदमों का निदर्शन था। कविहृदय श्री सम्पतराज चौधरी ने आचार्य हस्ती के जीवन, सन्देशों एवं प्रेरक प्रसंगों को 'मुक्ति के राही' कृति में काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। दोहा सदृश गेय छन्दों एवं गीतों में भाव गाम्भीर्य के साथ निबद्ध यह काव्यकृति हृदयस्पर्शी एवं भक्तिरस से परिपूर्ण है। शब्दों एवं भावों का माधुर्य कृति की विशेषता है। साहित्यिक दृष्टि से यह एक प्रकार का खण्डकाव्य है, जिसमें 839 पद्यों एवं चार गीतों में श्रद्धेय आचार्य श्री हस्ती का जीवन एवं दर्शन निरूपित हुआ है। चिकने कागज पर भावपूर्ण चित्राकृतियों एवं रंगों की आभा के साथ मुद्रित यह ग्रन्थ उत्कृष्ट भावों से सराबोर है। कवि में विनय, श्रद्धा, समर्पण आदि गुण स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में आचार्यदेव को सम्बोधित करते हुए कवि ने लिखा है-

इस चित्त रूपी चित्रकार ने तुम्हारे दिव्य स्वरूप को,
प्रीति रूपी भित्ति पर चित्रित करने का बाल प्रयास किया है,
उसमें कुछ रंग भी भरे हैं।
यद्यपि यह चित्रण समुद्र की एक बूँद है, फिर भी
यह बूँद समुद्र का प्रतिनिधित्व तो करती ही है।

कवि का यह विनम्र कथन उनकी सम्पूर्ण कृति की उत्कृष्टता का आधार बना है। बाल्यकाल, वैराग्य, प्रव्रज्या, मुनि-जीवन, आचार्यपद, जीवन के

अध्यवसाय, हृदयस्पर्शी प्रसंग, अस्ताचल की ओर एवं महाप्रयाण अध्यायों में सम्पूर्ण कृति जगमगा रही है। लेखक ने कृति में प्रयुक्त विभिन्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ तृतीय परिशिष्ट में देकर इसे जनसाधारण के लिए हृदयग्राही बना दिया है।

उल्लेखनीय है कि 'मुक्ति का राही' की संगीतमय मधुर प्रस्तुति की सी.डी. भी पुस्तक के साथ उपलब्ध करायी गई है। इस प्रस्तुति को निर्देशन डॉ. सुनील चौधरी ने, संगीत श्री राजेन्द्र शर्मा ने एवं स्वर अनुपमा श्रीवास्तव ने दिए हैं। सी.डी. का श्रवण हृदय को गद्‌गद् कर देता है।

भ्रूण हत्या : महापाप- संकलन- डॉ. मंजुला बम्ब, ***सम्पादन***- राजेश कुमार जैन, ***प्रकाशक***- अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) दूरभाषः 0291-2636763, ***पृष्ठ***-8+160, ***मूल्य***- 10 रुपये मात्र, ***प्रथम संस्करण***, 2009

भ्रूण हत्या मानवता पर कलंक है। इसका एक कारण सामाजिक वातावरण है, किन्तु मूल कारण तो माता-पिता एवं परिवारजनों की असंवेदन शीलता है, जो क्रूरता के रूप में अभिव्यक्त होती है। जन्म लेने वाली सन्तान क्या पता समाज एवं संसार के लिए वरदान होती, किन्तु गला घोंटने वाली माता क्यों नहीं पहचानती उस अजात की संवेदना को? अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने डॉ. मंजुला जी बम्ब की अध्यक्षता में भ्रूणहत्या विषयक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया था। उन्हीं निबन्धों का संकलित-सम्पादित रूप इस पुस्तक में भ्रूण हत्या की नृशंसता प्रतिपादित करने के साथ उसे रोकने के उपाय को भी प्रस्तुत करता है। पुस्तक 51 निबन्धों के माध्यम से जहाँ एक ओर बेटी की महिमा का गान करती है, वहाँ नारी की क्रूरता एवं भ्रूण हत्या को जघन्य कर्म के रूप में भी प्रस्तुत करती है।

संतोषामृत- स्व. श्रीमती सन्तोष जैन, ***सम्पादन***- श्री हुकमचन्द जैन 'मेघ', ***प्रकाशक***- आकृति कन्सलटेण्ट्स इण्डिया प्रा. लि., के.डी. 286, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, ***पृष्ठ***-96, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं, ***सन्***-2009

कवयित्री श्रीमती सन्तोष जैन की यह पुस्तक उनके पति श्री मनोहरलाल जैन ने प्रकाशित की है। संघशास्ता श्री सुदर्शनलाल जी महाराज के प्रति समर्पित कवयित्री की इस कृति में सत्य, करुणा, श्रद्धा, गुरु-भक्ति, प्रभु महावीर, पर्युषण आदि अनेक विषयों पर 61 कविताएँ है। कविताएँ निर्मल हृदय से प्रस्तुत हुई हैं।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 जनवरी, 2010)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	सिद्धपुर, जगाणा होते हुए 20 दिसम्बर को पालनपुर पधारे, यहाँ पौष शुक्ला चतुर्दशी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। आगे घाणेराव होते हुए अग्र विहार सांचोर की ओर संभावित है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	सोजत, जाडन होते हुए 21 दिसम्बर को पाली पधारे। आचार्य भगवन्त का 100वाँ जन्म-दिवस साधना-आराधना के साथ मनाया गया।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 10	:	दो सिंघाड़ों में कांकरिया बिल्डिंग, शास्त्रीनगर, हा. बोर्ड, सरदारपुरा होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी के अवसर पर घोड़ों का चौक, जोधपुर पधारे।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पीह से थांवला, तिलोरा, पुष्कर होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी पर महावीर कॉलोनी, अजमेर पधारे।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	:	नागपुर के विभिन्न उपनगरों में धर्म-प्रभावना कर पौष शुक्ला चतुर्दशी पर कच्छी वीसा भवन, नागपुर पधारे।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	वापी, अतुल, चिखली होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी पर जैन स्थानक नवसारी पधारे। अग्र विहार सूरत की

ओर संभावित है।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	इन्द्रगढ़, जरखोदा, कुशतला, बजरिया होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी के अवसर पर महावीर भवन, सवाई माधोपुर पधारे। दीक्षा-दिवस 17 जनवरी को बजरिया सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	सुमेरपुर, पाली होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु सोजत सिटी पधारे। पुनः पाली पधारना संभावित है।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	जयपुर के लाल भवन में पौष शुक्ला चतुर्दशी पर महती धर्मप्रभावना की। विभिन्न उपनगर फरसना संभावित है।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	सुमेरपुर, पाली आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसकर पौष शुक्ला चतुर्दशी पर पीपाड़ पधारे। भोपालगढ़ की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	करजन, अंकलेश्वर, अमरोली होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु धनेरा स्थानक, सूरत पधारे।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलुरू के विभिन्न उपनगरों में विचरण कर रहे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर हनवन्त नगर, बैंगलुरू में धर्मप्रभावना की। अग्र विहार टुमकुर की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	जोधपुर, बावड़ी, धनारी होते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु नागौर पधारे।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	सिरोही, शिवगंज, सुमेरपुर आदि क्षेत्रों को फरसकर पौष शुक्ला

चतुर्दशी हेतु पाली पधारे।

महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 : विदर्भ के ग्राम-नगरों को फरसकर पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु हिंगणघाट पधारे। अग्र विहार यवतमाल की ओर संभावित है।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष प्रारम्भ

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्य भगवन्त का 100वाँ जन्म-दिवस देश-विदेश में व्रत-प्रत्याख्यान पूर्वक मनाया

आजीवन शीलव्रत, नियमित सामायिक-स्वाध्याय आदि के संकल्प ग्रहण किए गए

सम्पूर्ण भारतवर्ष में तथा हांगकांग आदि देशों में अध्यात्मयोगी, प्रज्ञापुरुष, आगमनिधान, इतिहास मार्तण्ड, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अप्रमत्त साधक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वाँ जन्म-दिवस अत्यन्त उत्साह एवं उमंगपूर्वक सामायिक, दयाव्रत, एकाशन, उपवास, तेला एवं विभिन्न प्रत्याख्यानों की आराधना के साथ मनाया गया। जहाँ रत्नसंघ के संत-सती विराजमान थे वहाँ त्रि-दिवसीय अथवा उससे अधिक दिनों तक धर्माराधना के सफल कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पालनपुर, पाली, जोधपुर आदि स्थानों से प्राप्त समाचार यहाँ संक्षेप में दिए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि गुरुदेव के जीवन एवं दर्शन पर न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा की वाणी में संस्कार टी.वी. चैनल से 30 दिसम्बर एवं 1 जनवरी को विशेष कार्यक्रम प्रसारित हुआ है।

पालनपुर में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में तप-त्याग की आराधना

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 अहमदाबाद चातुर्मास सम्पन्न कर मार्गवर्ती ग्राम-नगरों को पावन करते हुए तथा आचार्य हस्ती के शताब्दी वर्ष पर तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान की प्रेरणा करते हुए 20 दिसम्बर को

पालनपुर पधारे। यहाँ **आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ता छात्रों का 26 से 31 दिसम्बर तक धार्मिक शिविर आयोजित हुआ,** जिसमें प्रतिभावान छात्रों को नियमित रूप से आचार्यप्रवर एवं संतवृन्द के दर्शन-वन्दन, गुण-महिमा और प्रवचन-श्रवण का दुर्लभ लाभ मिला। पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रतिदिन धर्मसभा में पधारकर अमृतमयी वाणी का वर्षण कर सभी को लाभान्वित किया।

अध्यात्म-चेतना वर्ष के त्रिदिवसीय साधना-आराधना का **प्रथम दिन 28 दिसम्बर** को सामूहिक **एकासना-दिवस** के रूप में मनाया गया। इस दिन पालनपुर में 251 एकासन, 55 उपवास तथा तेला, चोला एवं पचोला तपस्याएँ भी हुईं। अनेक भाई-बहिनों ने पौषध एवं संवर की आराधना की। पूज्य आचार्यप्रवर ने मार्मिक एवं संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया कि तीर्थंकर भगवान् के नाम, उनकी अवगाहना, आयु, वर्ण, जन्म-स्थल एवं माता-पिता आदि के नाम में भेद हो सकता है, किन्तु वीतराग वाणी जो तिरने-तिराने वाली है उसमें कोई भेद नहीं होता। यह रूप-यौवन बिजली की चमक की तरह चंचल एवं क्षणिक है। यदि आत्म-विकास चाहते हो तो धर्म का अवलम्बन लीजिए। पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती ने जो कथन किया, उसको पहले अपने जीवन में अपनाया। उन्होंने जीवन के निर्माण एवं विकास का रास्ता बताया तथा लाखों समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिए स्वाध्याय और सामायिक पर बल दिया।

29 दिसम्बर सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें प्रत्येक भाई-बहिन द्वारा कम से कम 5 सामायिक की गई। इस दिन 125 एकासन, 21 उपवास, बेला, पचोला एवं छः की तपस्याएँ हुई। शिविर में आए हुई शिविरार्थियों ने पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से सम्यक्त्व का स्वरूप समझा एवं उसको जीवन में अंगीकार करने का संकल्प लिया। **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** ने चिन्तन-परक उद्बोधन में फरमाया कि पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती ने हमें दिया ही दिया है। उन महापुरुष के जीवन में क्षणमात्र का भी प्रमाद नहीं था। आत्म-विकास के लिए जीते-जागते गुरु की शरण आवश्यक है, उनके दर्शन एवं गुणों से प्रेरणा पाकर सार ग्रहण किया जा सकता है। संघशास्ता आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. कौथून से निवाई के रास्ते में स्वयं कांटे-भाटों वाले मार्ग में चले, लेकिन गुरुदेव को रेल की पटरी के नीचे बिछे सलीपटों पर चलाया। मुनिश्री ने कहा कि बारह महीनों का संयम पालने वाला साधक 5 अनुत्तर विमानों के सुख

को लांघ जाता है।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव ने "मनस्येकं, वचस्येकं, कर्मण्येकं महात्मनाम्" उक्ति को मन, वचन एवं कर्म में एकरूपता रखकर सार्थक किया। उन्होंने समता का सही स्वरूप संसार के समक्ष प्रस्तुत किया, वे जहाँ भी गये वहाँ समस्या का समाधान कर शान्ति का साम्राज्य स्थापित किया। **सिवांची पट्टी में 144 गाँवों का वर्षों पुराना कलह समाप्त हुआ** एवं समरसता का अजस्र स्रोत बहने लगा। जब मैं 14 वर्ष का था तब संवत् 2009 में नागौर में सामायिक पर गुरुदेव के भजन से मैंने यह पंक्तियाँ नोट की थी- "विषय कषाय को दूर निवारो, काम-क्रोध से करो किनारो, शांति साधना यों हो, सब मिल शांति कहो" इन पंक्तियों से हमें सामायिक के उद्देश्य से परिचय मिल जाता है। गुरुदेव जैसे भीतर थे वैसा ही उनका जीवन बाहर था। आपने अनेक अस्थिरों को स्थिर किया। **शोरापुर में भयंकर प्लेग** का प्रकोप था, ऐसे समय गुरुदेव के पदार्पण से वहाँ **महामारी समाप्त हो गई।** संघ-समाज में वही शांति स्थापित कर सकता है जो संघहित के लिए समर्पित रहे, संघ एवं समूह में एकरूपता आवश्यक है। पूज्य गुरुदेव अनेक गुणों के पुंज थे। उन साधक-शिरोमणी के जन्म-दिवस के पावन-प्रसंग पर आप संकल्प के साथ कोई न कोई गुण अवश्य ग्रहण करें।

30 दिसम्बर 2009 को प्रातःकाल प्रार्थना के पश्चात् से ही नवकार मंत्र का सामूहिक जाप का क्रम 9 बजे तक धर्मसभा में चलता रहा। ठीक 9 बजे प्रवचन प्रारम्भ हो गया। **श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि मानव विषयों में उलझ जाता है तो मानव भव का कोई महत्त्व नहीं। आज से 99 वर्ष पूर्व जन्मे गुरुदेव के संयमी-जीवन में प्रमाद कतई नहीं था। प्रमाद से उनकी दुश्मनी थी एवं सद्गुणों से उनकी दोस्ती थी। जिसे योग्य देखा, उसे उसकी क्षमता के अनुसार धर्म से जोड़ दिया। संयम के चोले पर दाग नहीं लगने दिया। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि आचार्य हस्ती के विराट् व्यक्तित्व में भगवान् महावीर की अहिंसा, महात्मा बुद्ध की करुणा, पतंजलि ऋषि का यौगिक चमत्कार, महाराज जनक की निर्लिप्तता, वासुदेव श्रीकृष्ण का कर्मयोग, कणाद का अकाट्य तर्क एवं महात्मा गांधी की विश्वमैत्री झलकती थी।

आचार्य हस्ती करुणा के निर्झर, मैत्री के मंदिर, प्रेम के प्रतीक, अध्यात्म के उत्कर्ष एवं पुरुषार्थ प्रतिबिम्ब थे। अहिंसा के उपदेष्टा, दया के प्रस्तोता, विश्वविख्याता आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. जीवन की हर श्वास में, भक्तों के विश्वास में, पापों के विनाश में, देश के विकास में, बच्चों के उल्लास में, अनुशासन की श्वास में इस तरह समाये हुए हैं जैसे सूर्य में उज्ज्वलता, चांदनी में धवलता, पृथ्वी में अचलता एवं संतों के मन में सरलता समायी हुई रहती है। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन्त जिनशासन के कौस्तुभ मणि एवं वर्द्धमान महावीर के चमकते नक्षत्र थे। हमें आज उनके शताब्दी जन्म-दिवस पर अपनी चेतना का जागरण करना है। चेतना दो प्रकार की है- सक्रिय एवं निष्क्रिय। निष्क्रिय चेतना वाला मात्र पल्ला पकड़ता है, जबकि सक्रिय चेतना वाला अध्यात्म में पुरुषार्थ करता है।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रतिकूलता में परेशान होकर अनुकूलता की चाह करने वाला ज्ञानियों की दृष्टि में मिथ्यादृष्टि है। जरा सी प्रतिकूलता उपस्थित होती है कि घबराहट से व्यक्ति व्रत-नियम तोड़ देता है। अनुकूलता में जो प्रतिकूलता खोजते हैं वे ही सच्चे साधक हैं। भगवान् महावीर अनार्य देश में जानबूझ कर गये, क्योंकि उन्हें वहाँ जागरूक रहकर उदीरणा करके कर्मों को खपाना था। जिनका शताब्दी जन्म-दिवस है, उन महापुरुष की सौरभ आज भी महक रही है। आत्म-जागृति के लिए दिन के समान वे रात्रि में भी साधना के लिए सजग रहते थे। कंकर रखकर शयन करते ताकि करवट लेते ही नींद खुल जाए। हर जगह प्रतिकूलता को अनुकूलता में ढाला। जो अंतर में उतरता है वही आगे बढ़ सकता है। पंचाचार के पालन में दृढ़ प्रतिज्ञ आचार्यप्रवर का ज्ञानाचार निर्मल था। **उन्होंने अध्यनार्थ पाँच वर्ष का समय चाहा था, किन्तु साढ़े तीन वर्ष में ही वे परिपक्व हो गये।** पं. दुःखमोचन झा ने कहा था अब ये सर्वथा योग्य हैं, आचार्य पद पर आरोहण किया जा सकता है। उन्होंने जिनशासन का आधार स्वाध्याय को बतलाया। दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार में भी उनका पुरुषार्थ गजब का था। ऐसे महापुरुष की महिमा, गरिमा में मैं जीने का निरन्तर अभ्यास करूँ।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अपनी भावांजलि में फरमाया कि यह अनुभूत सत्य है कि आँख सबको देखती है, आँख को सब देखते

हैं, किन्तु आँख को आँख से देखने के लिए दर्पण चाहिए। बिना दर्पण के आँख को आँख से नहीं देख सकते। यही दुर्बलता मानव मन की है। वह दूसरों को देखता है, अपने से अपनों को देखने के लिए गुरु आवश्यक है। **गुरु पुण्य का निलय, पाप का विनाशक, जीव-अजीव की पहचान कराने वाला, संवर का संविधान और निर्जरा का निधान है। वह सारणा के द्वारा बंध की स्मृति कराता है, वारणा के द्वारा विकृति को नष्ट करता है, धारणा से शास्त्रों में उपदिष्ट तथ्यों की भाषा से पुष्टि करता है।** उन महापुरुष के चरणों में 16 वर्ष रहकर जीवन बनाने का अवसर मिला। मेरे जीवन का काया-पलट हो गया। वे शोभा के द्वारा प्रतिष्ठित थे, ज्ञान गुणों से शोभित थे, उनके दर्शन की दीप्ति अकथनीय है। उदारता, निस्पृहता, सहजता सभी का सम्मिलित स्वरूप आपमें विद्यमान था। इन्दौर चातुर्मास में तीन किलोमीटर दूर जाकर पाँचवी समिति का पालन करते। आज यहाँ आचार्य हीरा के पावन सान्निध्य में समवसरण लगा हुआ है। यह कुशल वंश के संवाहक, रत्नगणि के उत्तम रत्न, हस्तीवन के हस्ती द्वारा प्रतिष्ठित सफल संचालक ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना से हस्ती उपवन को सुशोभित करने वाले आचार्य भगवन्त है।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने गुणगान करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि जीवन निर्माण में गुण-दर्शन और गुण-वर्धन ये दो बातें आवश्यक हैं। कदाचित् हमारी बाहर की श्रद्धा प्रकट हो रही है, अंतर की श्रद्धा जागृत होगी तो हम विषय-कषाय के कीचड़ में नहीं बैठेंगे। वाणी की वागरणा होती है तभी तीर्थ की स्थापना होती है, बिना बोले नहीं होती। हरेक अपनी-अपनी शैली में श्रद्धा के भाव प्रकट कर रहा है, कई भक्त बोलने को आतुर भी हैं। **प्रकटीकरण के साथ अन्तर से जगने का प्रथम चरण बालोतरा के जागीरदार परिवार ने महाव्रती बनने वालों को अनुज्ञा प्रदान करके किया है।** हनुमान जी जागीरदार ने आगे बढ़कर शासन प्रभावना में सहयोग की भावना प्रदर्शित की है। गुरुदेव ने जन्म से लेकर अवसान तक विकास के अनेक कार्यक्रम रखे। आपकी प्रेरणा से उत्तर से दक्षिण भारत तक बच्चों में श्रद्धा जगाने के लिए धार्मिक पाठशालाएँ प्रारम्भ हुई। सम्प्रति आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा का कार्यक्रम चल रहा है। इन परीक्षाओं में सभी वर्ग के भाई-बहिन बैठकर ज्ञानवृद्धि का क्रमबद्ध लक्ष्य रखें। श्रद्धा रखने वाला एक भी श्रावक इससे वंचित न रहे, क्योंकि अज्ञानी करोड़ों वर्षों में जो कर्म खपाता है, ज्ञानी उसे अन्तर्मुहूर्त में खपा लेता है। मासखमण का तप करने वाला अज्ञानी जितना कर्मक्षय करोड़ों वर्षों में

नहीं कर पाता उतना नवकारसी करने वाला ज्ञानी अन्तर्मुहूर्त में खपा लेता है। जो भी क्रिया करे उसे पहले समझें। गुण अनंत है, गुण ग्रहण करना चाहे तो हम एक-एक कर घट भर सकते हैं। सौहार्द, अप्रमत्तता, आचार में दृढ़ता एवं श्रद्धा का गुण अपनी क्षमता एवं पुरुषार्थ से ग्रहण करें। समुद्र में अनंत जलराशि है, किन्तु जो जैसा पात्र लेकर जाएगा वह उतना ही जल ले सकेगा। इसी तरह हर व्यक्ति अपनी पात्रता के अनुसार गुण-ग्रहण कर सकता है। मैं भी उन आचार्य भगवन्त की अडिगता से, निरतिचार संयम से, प्राणिमित्र के प्रति आत्म-भावना से आप्लावित होकर आगे बढ़ूँ, आप भी जगें। अपने आपमें उतरना, जगना, चेतना वाला होना, यही अध्यात्म-चेतना वर्ष का लक्ष्य रहे।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफत्राज जी मुणोत ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, गुरु हस्ती की बगिया के सौभाग्यवान श्रावक-श्राविकाओं को सम्बोधित कर कहा- नारे, पोस्टर, विज्ञापन आदि प्रचार के साधन अलार्म के साधन हो सकते हैं, किन्तु उठना तो आपको, हमको ही होगा। हमारी विचारधारा आचार प्रधान है। गुरुदेव के गुणों का वर्णन संभव नहीं, मैं मुख्य बातें निवेदन कर रहा हूँ- 1. उनकी कथनी करणी एक थी 2. वे सरलता के महोदधि थे। आज प्रश्न हमारे सामने हैं, उनके अनुयायी होकर हम अपने आपको टटोलें, क्या हम सरल हैं? क्या हमारी कथनी-करणी एक हैं? हम वर्षों से सामायिक कर रहे हैं लगता है मैकेनिकल कार्य कर रहे हैं। 95 प्रतिशत भाई इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी तक का अर्थ नहीं जानते। प्रतिक्रमण कर रहे हैं लेकिन 99 अतिचारों एवं 18 पापों के बारे में नहीं जानते। विचार करें, क्या भगवन्त का सामायिक-स्वाध्याय का उद्घोष सार्थक हो रहा है? मेरा कहना है हम पहले जाने फिर करें। हम जिज्ञासु बनें, गहराई से जानें, लाभ सौ गुना होगा। गुणों को आत्मसात् करें, दिनचर्या में उनको ढालें। जंगल में आग लगने पर एक चिड़िया चोंच से पानी लाकर डाल रही थी, इस पर जब उससे पूछा गया कि तेरे द्वारा इतना सा पानी डालने से क्या होने वाला है? तो उसने कहा- जब सब प्रयत्न कर रहे थे, उस समय मुझे डरपोक की भूमिका नहीं निभानी थी। पालनपुर संघ ने, विशेष रूप से भाई कांतिलाल बाफना ने जो सुन्दर व्यवस्था के साथ स्वधर्मी वात्सल्य भावना प्रदर्शित की है, उसके लिए मैं संघ की ओर से तथा व्यक्तिशः मेरी ओर से धन्यवाद देते हुए मंगल-कामना करता हूँ।

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समिति के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी

बाफना ने कहा कि बड़े ही हर्ष एवं प्रमोद का विषय है कि श्री हनुमान जी जागीरदार, बालोतरा ने अपने 2 रत्न इस संघ में समर्पित करने की आज्ञा प्रदान कर दी है। विरक्ता वर्षा जी का आज्ञापत्र पूर्व में ही दिया हुआ है, आपने विरक्ता बहिन ट्विंकल के लिये भी सहमति प्रदान कर शासन की दीप्ति बढ़ाने में महनीय योगदान किया है। अध्यात्म-चेतना वर्ष की यह आध्यात्मिक शुरुआत एक शुभ संकेत है।

प्रवचन के अनन्तर 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ पर आयोज्य खुली किताब प्रतियोगिता की प्रश्नपुस्तिका लोकार्पित की गई। उल्लेखनीय है कि प्रवचन के पूर्व आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समिति के संयोजक **श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना** ने आचार्य भगवन्त की जीवनी 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित काव्यमय रचना **'मुक्ति का राही'** तथा **संघ कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल** ने अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'भ्रूण हत्या : महापाप'** पुस्तक संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत को समर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन **श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल-जलगांव** ने ओजस्वी मधुर शब्दों में किया।

अपराह्न दो बजे विगत तीन दिनों में हुए प्रवचनों पर आधारित लिखित प्रश्न-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें शिविरार्थियों के साथ अनेक श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की। सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् परमपूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन पर रचित एवं महापुरुषद्वय द्वारा रचित भजनों की प्रतियोगिता में सैकड़ों शिविरार्थियों एवं भक्तजनों ने भाग लिया।

इस अवसर पर 350 एकासन, 150 उपवास तथा बेला, तेला, छः, सात आदि तपस्याएँ हुई। दया-संवर एवं पौषध भी हुए। शिविरार्थियों ने संवर-साधना के साथ 11 सामायिक की साधना की। धर्मसभा-स्थल पर सभी भाई-बहिन सामायिक वेश में थे। अधिकतर भाई-बहिनों ने पाँच एवं उससे अधिक सामायिक का भी लक्ष्य रखा। इस पावन पर्व पर श्रद्धालु गुरुभक्तों ने तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान एवं नूतन संकल्प ग्रहण किए। अहमदाबाद के पालड़ी एवं मणिनगर के अतिरिक्त दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बेंगलुरू, जलगाँव, बीजापुर, रायपुर, शोलापुर, उमरगांव, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, बाड़मेर, बालोतरा, सिवाना, सवाईमाधोपुर,

कोटा, हिण्डौन सिटी, ब्यावर, पीपाड़, सैलाना, इन्दौर, रतलाम, धुलिया आदि अनेक स्थानों से श्रीचरणों में भक्तजन उपस्थित हुए। विशाल सभा स्थल में उपस्थिति का सुन्दर नजारा देखते ही बनता था।

श्री कांतिलाल जी बाफना परिवार ने इस आयोजन के आतिथ्य लाभ का बीड़ा उठाकर अपनी अनन्य श्रद्धाभक्ति एवं उदारता का परिचय दिया। उनका समूचा परिवार एवं सम्बन्धीजन अहर्निश आगतों की सेवा में तत्पर रहे। छात्रवृत्ति शिविर के छः दिवसीय आयोजन में लगभग 160 शिविरार्थियों एवं शिक्षकों की सार-संभाल तथा सम्पूर्ण व्यवस्था प्रमोदजन्य थी। आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के विचरण-विहार में उनकी श्रद्धाभक्ति एवं सेवाभावना अभिनन्दनीय रही। ऐसे समर्पणशील श्रावकरत्नों पर यह संघ गौरवान्वित है। उनकी धर्मपत्नी एवं सुपुत्री ने गुरुदेव के पदार्पण पर तपस्या प्रारम्भ की एवं अठाई का लक्ष्य रखा।

पाली में उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में गुणानुवाद, धर्माराधन एवं समाजसेवा के कार्यक्रम

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में आचार्य हस्ती का 100वाँ जन्म-दिवस अत्यन्त उत्साह एवं उमंग के वातावरण में मनाया गया। उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा यहाँ 21 दिसम्बर को पधार गये थे। अतः यहाँ श्रद्धेय बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि पौष शुक्ला दशमी 27 दिसम्बर 2009 से श्रद्धेय छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि पौष शुक्ला पूनम 31 दिसम्बर 2009 तक तीन पचरंगियाँ हुईं। 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक सात दिन का नवकार मंत्र का अखंड जाप चला। 30 दिसम्बर को पूज्य आचार्य भगवन्त की 100वीं जन्म-जयन्ती पर सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट में **उपाध्यायप्रवर** ने गुरुदेव के जीवन से अवगत कराते हुए उनका गुणगान किया। **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि माँ चाहे तो गर्भकाल से ही माता रुपादेवी की तरह संयम के संस्कार भरकर अपनी संतान को हस्ती बना सकती है। उन्होंने कहा कि एक सामायिक ऐसी करलो, जिसको करके भव से पार हुआ जा सकता है। श्री यशवन्तमुनि जी ने फरमाया कि पर्व तिथियाँ भूलों को सुधारने के लिए आती है। भूल सुधार कर धर्म एवं संयम पर अग्रसर होना चाहिए। **श्री लोकचन्द्रमुनि जी,**

श्री दर्शन मुनि जी एवं श्री जितेन्द्रमुनि जी ने भी प्रवचन फरमाते हुए कहा कि आचार्यश्री के जीवन संस्मरणों का विश्लेषण कर यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि हमारा भी ऐसा जीवन ऐसा क्यों नहीं बन सकता? **महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.** ने फरमाया कि पूत के लक्षण पालने में ही नजर आ जाते हैं। माता रुपादेवी ने पालने में ही इतने बड़े महापुरुष को तैयार किया था। **पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा** ने अपने सम्बोधन में कहा कि आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. जैसे संत दुनिया में विरले ही होते हैं जो धर्म के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दे। आचार्य श्री ने हमें धर्म की सही परिभाषा से अवगत कराया। इस अवसर पर **डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, श्री संदीप जी भाण्डावत** एवं **श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली** ने भी गुणानुवाद किया। खचाखच भरे हॉल में उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से भाई-बहिनों ने उपवास, बेला, तेला, दया, एकासन, सामायिक-स्वाध्याय एवं रात्रि-भोजन त्याग के नियम ग्रहण किए। लगभग 250 संकल्प-प्रपत्र भरे जा रहे हैं। जीवदया की दृष्टि से यहाँ 500 बकरों को अभयदान देने का संकल्प व्यक्त किया गया जिसमें ब्यावर संघ द्वारा घोषित 111 जीव सम्मिलित हैं। श्री पिंजरा पोल गौशाला के समस्त गो-वंश (लगभग 2800) को एक वर्ष के लिए गोद लिया गया, जिसमें अनुमानित व्यय पच्चीस लाख रुपये की राशि श्री लाभचन्द जी ललितकुमार जी गोलेछा, पाली के सौजन्य से दी जायेगी। इसी परिवार ने पौष शुक्ला चतुर्दशी के दिन गोशाला संचालन के व्यय तिहत्तर हजार रुपये का भी सौजन्य लिया। श्री केशव गौशाला में 250-250 गायों को एक वर्ष के लिए गोद लेने हेतु श्रीमती अनछीदेवी मिश्रीमल जी संकलेचा की पावन स्मृति में श्री हुकमीचन्द जी भागचन्द जी संकलेचा हेमावास वालों ने तथा श्रीमती अंछीबाई माणकचन्द जी गुलेछा, पाली ने ढाई-ढाई लाख रुपये की राशि देने की भावना व्यक्त की। इसी गुलेछा परिवार ने श्री पिंजरापोल गौशाला, धाणा के एक वर्ष के गौशाला संचालन के व्यय चार लाख पचास हजार रुपये का दायित्व भी लिया। श्री पन्नालाल गौशला, जोधपुर में लूली-लंगड़ी, अपंग एवं अशक्त गायों के लिए पच्चीस हजार रुपये की राशि श्री रविकुमार हर्ष कुमार गुलेछा, पाली ने भेंट की। इस अवसर पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली, श्री जैन रत्न युवक परिषद्-पाली, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-पाली की ओर से 11-11 हजार रुपये की राशि श्री वर्द्धमान अस्पताल,

जोधपुर को प्रदान की गई। वृद्धाश्रम, कोढ़ी आश्रम एवं अंधता निवारण केन्द्र के लिए श्री लाभचन्द जी गोलेछा, पाली की ओर से अध्यात्म-चेतना वर्ष के भोजन का व्यय उठाने का जिम्मा लिया गया। लवकुश आश्रम, जोधपुर को संघ सदस्यों द्वारा सहयोग किया गया तथा 27 विकलांगों को ट्राई साइकिल का वितरण सुश्री लब्धि गोलेछा, पाली के सौजन्य से किया गया। आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में गोलेछा परिवार ने एक लाख रुपये का योगदान दिया।

उल्लेखनीय है कि आचार्य हस्ती जन्म-दिवस के दिन पाली शहर में मांस-विक्रय पूर्णतया बंद रखने की सहमति प्राप्त करने में संघ के सुश्रावक तथा नगर परिषद् पाली के नव सभापति श्री केवलचन्द जी गुलेछा का विशेष सहयोग रहा तथा अधिकांश श्रावकों ने अपनी फैक्ट्रियाँ एवं प्रतिष्ठान बंद रखे। वरिष्ठ नागरिक समिति, पाली के तत्त्वावधान में साहित्य गोष्ठी एवं आचार्य हस्ती की जीवनी पर 31 दिसम्बर को चर्चा का आयोजन किया गया।

महासती-मण्डल के सान्निध्य में विभिन्न स्थानों पर धर्माराधना, तपाराधना एवं ज्ञानाराधना सम्पन्न

जोधपुर- **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10** के सान्निध्य में घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पौष शुक्ला चतुर्दशी का दिन मानो पर्युषण पर्व की भाँति उमंग एवं उल्लास का दिन बन गया। प्रवचन में उपस्थिति से सभागार खचाखच भरा था। इस अवसर पर धर्मसभा में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. का ओजस्वी एवं प्रेरक प्रवचन हुआ, जिसमें उन्होंने गुरुदेव हस्ती के जीवन की विशेषताओं एवं अनेक घटना-प्रसंगों का उल्लेख किया। महासती जी ने कहा कि गुरुदेव का आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा., आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा., आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा., आचार्य श्री नानालाल जी म.सा., बहुश्रुत श्री समर्थमल जी म.सा., श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि संतों से प्रेम-संबंध रहा। तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. एवं महासती-मण्डल ने पूज्य गुरुदेव के जीवन-दर्शन एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं को रेखांकित किया। उल्लेखनीय है कि सभा में लगभग ढाई घंटे तक सभी ने शांति से प्रवचन-श्रवण किया एवं श्रावक-श्राविकाओं को उस समय बोलने का अवसर न देकर

महासती-मण्डल के प्रवचनों का सबको लाभ दिया गया। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने दोपहर में 2 बजे आयोजित गुणानुवाद सभा में गद्य एवं पद्य में अपनी भावांजलि अभिव्यक्त की। **इस अवसर पर आठ दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया-** 1.श्री राजेन्द्र जी चोरडिया गीजगढ़ वाले, जयपुर 2. श्री बिरदराज जी सुराणा, जयपुर 3. श्री माणकचन्द जी श्रीश्रीमाल, जोधपुर 4. श्री रणजीत सिंह जी वैद, जोधपुर 5. श्री पदमरूपचन्द जी भंडारी, जोधपुर 6. श्री अमृतराज जी कुम्भट, जोधपुर 7. श्री गणपत जी लोढ़ा, जोधपुर एवं 8. श्री प्रकाशचन्द जी सिंघवी, जोधपुर। 28 एवं 29 दिसम्बर को क्रमशः एकासन एवं दयाव्रत की आराधना हुई। लगभग 150 दया, एकाशन एवं आयंबिल आदि के तेले हुए। 30 दिसम्बर को लगभग 250 दया, एकाशन आदि हुए। उपवास के 21 तेले तथा 1 घंटे का जाप प्रतिदिन हुआ। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में धार्मिक प्रश्नोत्तरी के अन्तर्गत 25 बोल, बड़ी साधु वन्दना एवं आचार्य श्री पर भजन प्रस्तुति आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। एक सप्तरंगी तथा एक पचरंगी का आयोजन भी हुआ।

अजमेर- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त का शताब्दी जन्म-दिवस साधना-आराधना के साथ श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पुष्कर रोड एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में महावीर कॉलोनी में मनाया गया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रारम्भ में 28 दिसम्बर को 165 एकासन हुए। 29 दिसम्बर को 365 श्रावक-श्राविकाओं ने जाप में भाग लिया। 30 दिसम्बर को उपवास, एकासन, दयाव्रत आदि अच्छी संख्या में हुए। लगभग 550 श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच एवं इससे अधिक सामायिक की। इस अवसर पर नेमीचन्द जी कटारिया, बलवीर जी पीपाड़ा, सुशीला पोखरणा, वैशाली नगर महिला मण्डल ने गद्य-पद्य के द्वारा अपने श्रद्धासुमन प्रस्तुत किए। प्रश्नमंच का भी आयोजन हुआ। स्थानीय मीडिया में समाचार प्रसारित हुए।

नागपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त का शताब्दी जन्म-दिवस मनाने हेतु नागपुर के श्रावक-श्राविका कई दिनों पूर्व से जुट गये। 26 दिसम्बर को लकड़गंज स्थित अनाथ विद्यार्थी गृह में श्रीमती पद्मादेवी मोहनलाल कटारिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा बच्चों को भोजन तथा सर्दी से बचाव हेतु कान पट्टी का वितरण किया गया। बच्चों

को मार्गदर्शन करने हेतु महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा. भी पधारी तथा सभी विद्यार्थियों को बीड़ी, सिगरेट, तंबाखू, गुटखा तथा मांसाहार नहीं करने की प्रेरणा के साथ ही झूठ नहीं बोलने, चोरी नहीं करने आदि की भी हित-शिक्षाएँ दी। 27 दिसम्बर को कच्छी बीसा ओसवाल भवन में सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम रखा गया। 28 दिसम्बर को सामायिक धर्मचक्र का आयोजन किया गया। 29 दिसम्बर को प्रातः दम्पती नवकार महामंत्र का जाप रखा गया। 30 दिसम्बर को नागपुर के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ पूर्ण श्रद्धा-समर्पण के साथ महासती-मण्डल के सान्निध्य में पूरे दिन साधना-आराधना में रत रहे। 31 दिसम्बर को जीवदया प्रेमी समाज बंधुओं के सहयोग से गौरक्षण ट्रस्ट, बहादुरा गांव, उमरेड रोड में गौचारे हेतु अनुदान दिया गया। कटारिया ट्रस्ट के साथ ही पारसदास जी, रमेशकुमार, राजेशकुमार, जितेन्द्र, पंकज अग्रवाल, राजेन्द्र कुमार, अशोक कुमार शर्मा ने भी सहयोग प्रदान किया।

नवसारी- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी मनाने का सुयोग नवसारी संघ को प्राप्त हुआ। 27 दिसम्बर को नवसारी में महासती मण्डल के प्रवेश के साथ ही श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह एवं उमंग का वातावरण छा गया। 28 दिसम्बर को 150 एकासन हुए, मध्याह्न में बालक-बालिकाओं का शिक्षण-शिविर भी आयोजित हुआ। 29 दिसम्बर का दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें कम से कम पाँच-पाँच सामायिक का लक्ष्य रखा गया। साथ ही वर्ष भर में 1500, 1100, 700 एवं 500 सामायिक करने का संकल्प भी कई भाई-बहिनों ने ग्रहण किया। 30 दिसम्बर को नवकार मंत्र का चौबीस घंटे का जाप रखा गया। इस दिन 30 उपवास, दया-संवर, एकासन, अष्टप्रहरी व दशप्रहरी पौषध तथा 11-11 सामायिकें हुई। लगभग 100 भाई-बहिनों ने एक दिन के लिए 100-100 प्रत्याख्यान फार्म भरकर संकल्प लिये। मध्याह्न में प्रश्नमंच प्रतियोगिता में अच्छा उत्साह देखने को मिला। महासती जी की सेवा में कार्यरत रविन्द्र सिंह ने 24 घंटे मौन के साथ चौविहार उपवास किया तथा गुरु हस्ती की 108 माला जप कर अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया। गुरु हस्ती के गुणगान सती मंडल के साथ ही छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं ने गीत एवं अष्टक के माध्यम से किये तथा सामायिक का सही स्वरूप बताने वाली नाटिका भी बहिनों ने प्रस्तुत की।

सवाईमाधोपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

4 के सान्निध्य में महावीर भवन में त्रि-दिवसीय कार्यक्रम रखा गया। 28 दिसम्बर को 200 से अधिक एकासन व्रत की आराधना के साथ सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, दया-संवर आदि की आराधना उत्साहपूर्वक हुई। 29 दिसम्बर को 200 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं एवं बालक-बालिकाओं ने कम से कम पाँच सामायिक कर प्रवचन सभा का लाभ लिया। 30 दिसम्बर को प्रवचन सभा में महासती मण्डल के साथ **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा** तथा श्राविकारत्न **श्रीमती लीलावती जी सुराणा** का सुखद सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रातःकाल 7.15 बजे सामूहिक प्रार्थना, 8 बजे "मित्ती मे सव्व भूएसु वेरं मज्झं ण केणइ" की भावना के साथ संघ के प्रत्येक सदस्य के उत्थान की मंगल कामना की गई। उसके अनन्तर आधा घंटे सामूहिक नवकार मंत्र का जाप किया गया। प्रातः 9 बजे से 10.30 बजे तक पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित काव्य पर प्रतियोगिता का कार्यक्रम हुआ, जिसमें 42 प्रतियोगियों ने कण्ठस्थ काव्य को 2 मिनट की समयावधि में प्रस्तुत किया। धर्मसभा में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में आचार्यप्रवर के गुणों का स्मरण कर उपस्थित श्रद्धालु भक्तों को अभिभूत कर दिया। **वरिष्ठ श्रावक श्री पृथ्वीराज जी सौंप वाले ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया।** महासती श्री सुश्रीप्रभा जी, महासती श्री शारदा जी एवं महासती श्री लीलावती जी ने भी अपने प्रचनामृत में गुरुदेव हस्ती का गुणानुवाद किया। सभा को पद्मावती पोरवाल संघ के पूर्व महामंत्री श्री रतनलाल जी जैन-आलनपुर, श्री गोपाललाल जी वैद्य-अलीगढ़, सौभाग्यमल जी जैन वकील, श्री मनोज जी मुणोत-कोटा एवं पोरवाल संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन कोटा द्वारा गुरु-गुणगान करते हुए अधिकाधिक त्याग-प्रत्याख्यान एवं संकल्प ग्रहण करने हेतु आह्वान किया गया। सुमेरगंजमण्डी संघ ने पूज्या महासती जी के चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। माननीय श्री पी.एस. सुराणा ने पोरवाल क्षेत्र के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं एवं युवा वर्ग को उद्बोधन देते हुए सारगर्भित शब्दों में कहा कि युवावर्ग को अपने जीवन में अध्यात्म एवं व्यक्तित्व विकास के उच्चतम लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने हेतु दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाने चाहिए। **आचार्यप्रवर के सन् 1974 एवं 1988 के चातुर्मासों से पोरवाल क्षेत्र की दशा और दिशा दोनों ही बदल गई।** पोरवाल क्षेत्र स्वावलम्बी बने तथा परस्पर

स्नेह, सहयोग एवं धर्मभावना बढ़ती रहें। इस वर्ष प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने वाले 27 बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किया गया। अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला ने सभा का संचालन किया। प्रवचन सभा के अनन्तर गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रश्नोत्तर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दोपहर में 3 बजे 422 जरूरतमंद दीन-हीन-असहाय जनों को कम्बल वितरित किए गए। कम्बल ग्रहण करने वाले लोगों को महासतीवर्या ने सप्त-कुव्यसन के दुष्परिणामों से अवगत कराया तथा उनसे मुक्त रहने का संकल्प कराया। कम्बल वितरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री अलाउद्दीन जी आजाद ने गुरुदेव के संदेशों का स्मरण किया। सायंकाल प्रतिक्रमण में 150 श्रद्धालुओं ने तथा 100 से अधिक ने पौषध-संवर की आराधना की। पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्र के विभिन्न ग्राम-नगरों से इस अवसर पर लगभग 2500 श्रद्धालु उपस्थित थे।

जयपुर- महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में जयपुर के लालभवन में आचार्य हस्ती के जन्म-दिवस के प्रसंग से चातुर्मास सा माहौल बना रहा। 28 दिसम्बर को सामूहिक एकासना दिवस में 150 एकासन हुए तथा श्राविका मण्डल द्वारा भजन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। 29 दिसम्बर को पाँच-पाँच सामायिक कर सामायिक-दिवस मनाया गया। लगभग 1500 सामायिक हुई तथा अन्त्याक्षरी का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। 30 दिसम्बर को आयोजित धर्मसभा में व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी, महासती श्री मुदितप्रभा जी एवं महासती देवांगना जी ने गुरुदेव के जीवन एवं व्यक्तित्व के प्रेरणाप्रद प्रसंगों को प्रभावी रीति से प्रस्तुत किया। आचार्य हस्ती ज्ञान, मौन, संघ अनुशासन आदि में अग्रणी थे। वे आसक्ति से दूर सच्चे जागरूक साधक थे। आयोजित मुख्य कार्यक्रम में 102 तेले, 127 पौषध, 125 एकासन, 145 उपवास, 100 दया तथा 200 संवर हुए। **अध्यात्म-चेतना वर्ष के लिए साढ़े तीन लाख सामायिक का लक्ष्य रखा गया। इस अवसर पर ग्यारह आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए**- 1. श्री नरेन्द्र जी जैन 2. श्री जयन्त जी जैन 3. श्री रंगूलाल जी जैन 4. श्री ज्ञानचन्द जी पालावत 5. श्री धर्मीचन्द जी जैन 6. श्री सज्जनसिंह जी खटोड़ 7. श्री पन्नालाल जी सिंगी 8. श्री ज्ञानचन्द जी जैन 9. श्री धर्मचन्द जी नाहर 10. श्री कैलाश जी जैन एवं 11. श्री घनश्याम जी जैन।

उपस्थित लगभग 1500 श्रावक-श्राविकाओं ने जुआ एवं पैसे से ताशपत्ती आदि न खेलने के नियम किए। महासती जी ने सभी को प्रतिदिन प्रातः 8 बजे ''मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ'' बोलने का संकल्प कराया। बच्चों, युवकों एवं बड़ों से लगभग 2000 संकल्प-पत्र भरवाए जा रहे हैं। सभा का संचालन संघमंत्री श्री विमलचन्द जी डागा ने आचार्य हस्ती के जीवन के संस्मरण सुनाते हुए मार्मिक तरीके से किया।

पीपाड़- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पीपाड़ शहर में आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस त्याग-तप के साथ मनाया गया। महासती-मण्डल का पीपाड़ में प्रवेश 24 दिसम्बर को हुआ। जन्म-दिवस के पूर्व महासती-मण्डल की प्रेरणा से तथा युवक परिषद् के पुरुषार्थ से 28 दिसम्बर को 150 एकासन तथा 25 दया-संवर व्रत हुए। 29 दिसम्बर को भी लगभग 30 दया-संवर, 100 से अधिक पाँच-पाँच सामायिक हुई। 30 दिसम्बर को प्रातः 7 बजे से राता उपासरा स्थानक में श्रावक-श्राविकाओं का आगमन प्रारम्भ हो गया। लगभग सौ श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच सामायिक ग्रहण की। 13 तेले, 100 से अधिक एकासन, 100 से अधिक उपवास तथा कई दया-संवर व्रत हुए। सभा में समीपवर्ती बारनी, कोसाना, साथीन, अरटिया, चोड़ा, रणसीगाँव के भी श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। सामूहिक जाप के कार्यक्रम के साथ ही प्रश्नमंच प्रतियोगिता भी आयोजित हुई।

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में 27 से 31 दिसम्बर तक पांच दिवसीय कार्यक्रम गुरु हस्ती जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित हुए। महासती-मण्डल की महती प्रेरणा से लगभग 350 संकल्प पत्र भरवाये गये एवं जीवदया में 125 जीवों की दया पालना की गई। जन्म-दिवस के अवसर पर 250 एकासन, उपवास-पौषध, दया-संवर की आराधना हुई। आध्यात्मिक चेतना वर्ष में एकासन की दो लड़ी तथा उपवास की दो लड़ी प्रारम्भ हुई। महासती जी की प्रेरणा से 15 श्रावक-श्राविकाओं ने एक वर्ष तक होटल में नहीं खाने का व्रत लिया। गुरु हस्ती के व्यक्तित्व पर निबंध प्रतियोगिता एवं प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। श्री जैन रत्न युवक परिषद् का पुनर्गठन किया गया, जिसमें शांतिलाल जी बाफना को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। श्राविका मण्डल की नई कार्यकारिणी गठित हुई और श्रीमती अर्चना जी चौपड़ा को अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

बेंगलुरू– व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में जन्म-शताब्दी दिवस के पूर्व 25 से 27 दिसम्बर को त्रिदिवसीय 'अध्यात्म साधना आयाम' शिविर आयोजित हुआ, जिसमें प्रथम दिन 340, द्वितीय दिन 280 एवं तृतीय दिन 450 जिज्ञासुओं ने भाग लिया। शिविर में दिन में तीन बार ध्यान, दोपहर में 20 मिनट लोगस्स का जाप, 12 व्रत की कक्षाएँ, तत्त्व व आगम के विषयों पर कक्षाएँ हुई। आचार्य हस्ती की जीवनी को नाटिका रूप में प्रदर्शित करने की प्रतियोगिता भी हुई। 30 दिसम्बर को जन्म-दिवस पर प्रातः 8 से 8.30 बजे तक गुरु के भजन हुए, 8.30 से 9 बजे तक सामूहिक जाप का कार्यक्रम रखा गया। 9 बजे महासती-मण्डल का प्रवचन हुआ, जिसमें महासती-मण्डल ने तो गुरु-गुणगान किये ही साथ ही श्रावक-श्राविकाओं ने भी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। दोपहर में प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। जन्म-शताब्दी दिवस के अवसर पर लगभग 60 से अधिक उपवास के तेले, 70 एकासन के तेले, उपवास, आयंबिल, एकासन अच्छी संख्या में हुए। 40 पौषध तथा 15 दया-संवर भी हुए। हनुमंत नगर एवं विजयनगर मित्र मंडल ने 1100 कंबल गरीबों में बांटे। श्री मोहनलाल जी-कमलाबाई रांका-श्रीरामपुरम्, श्री मोतीलाल जी बरमट एवं उनकी धर्मपत्नी, शांतिनगर, श्री पारसमल जी-कमलाबाई श्रीश्रीमाल, श्री तेजराज जी-चंचलबाई लोढ़ा, वश्वेश्वर नगर इन चार दम्पत्तियों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण कर श्रद्धा समर्पित की। एक बर्ष के लिए लगभग 15 युगल ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिये। विशाल प्रवचन हॉल में 1200 से 1300 की उपस्थिति रही।

नागौर– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी पर त्रि-दिवसीय कार्यक्रम नागौर में आयोजित हुए, जिसमें काफी संख्या में एकासन, दया, उपवास, आयम्बिल एवं अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। महासती-मण्डल की प्रभावी प्रेरणा से **श्रीमती ताराबाई-शिखरचन्द जी कोठारी ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।** कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाशचन्द जी पारख-धनारीकलां ने किया।

देश-विदेश के अन्य स्थानों पर आचार्य हस्ती के जन्म-दिवस पर गुणानुवाद एवं धर्माराधन

हांगकांग– परमपूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वाँ जन्म-दिवस

यहाँ हर्षोल्लास के साथ श्रावक-श्राविकाओं ने तप-त्याग पूर्वक मनाया। सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया, जिसमें गुरुदेव के संयमी जीवन एवं उपकारों पर प्रकाश डाला गया। भजनसंध्या भी रखी गई तथा वर्षभर के लिए सभी श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-स्वाध्याय करने के नियम ग्रहण किए। सम्पूर्ण कार्यक्रम सौम्य एवं मधुर वातावरण में सम्पन्न हुआ।

चेन्नई- पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वाँ जन्म-दिवस एवं मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का 26वाँ पुण्य-स्मृति दिवस श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के तत्त्वावधान में सी.यू.शाह भवन के सभागार में ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तपाराधना के साथ मनाया गया। विशाल उपस्थिति एवं उल्लास के वातावरण में संघाध्यक्ष श्री झूमरमल जी बाघमार ने सबका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। मंत्री श्री उगमचन्द जी कांकरिया ने दोनों महापुरुषों के जीवन-दर्शन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने के साथ आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के सामायिक-स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा से जुड़ने का आह्वान किया। श्री गौतम जी लोढ़ा, श्री चम्पालाल जी बोथरा, अ.भा. जैन कॉन्फ्रेंस-तमिलनाडु के महामंत्री श्री सुदर्शन जी छल्लाणी, साधुमार्गी जैन संघ-चेन्नई के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी रांका, श्री जवाहरलाल जी बाघमार, श्री कैलाशमल जी दुगड़ आदि ने गुणानुवाद किए। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के विजयमल जी मेहता ने कहा कि आचार्यप्रवर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र रूप गुणों के पुंज थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने कहा कि दोनों महापुरुषों के जीवन से हमें जन्म और मृत्यु इन दो सत्यों का साक्षात्कार होता है। अनुशासन एवं मर्यादा में रहकर हमें अध्यात्म-चेतना वर्ष मनाना है। सुधर्म संघ के उपाध्यक्ष श्री चम्पालाल जी कोठारी ने कहा कि आचार्य भगवन्त वचन के पक्के थे। उल्लेखनीय है कि बिना संत-सती के सान्निध्य के सहस्राधिक लोगों की उपस्थिति रही। 24 घंटे नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप, 100 से अधिक पौषध एवं संवर, प्रश्नमंच का निर्मल जी संकलेचा व विमला जी चोरडिया द्वारा आयोजन, ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिता, आचार्य श्री के जीवन पर नाट्य प्रस्तुति आदि कार्यक्रम आयोजित हुए। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध कराया गया। श्री विनोद जी जैन ने संवर-पौषध की विशुद्ध प्रतिपालना की विधि समझाई एवं रात्रि में सम्यग्दर्शन पर चर्चा हुई। इस अवसर पर 21 अठाई, 2 तेला, 100 से अधिक उपवास, 100 से अधिक एकासन एवं आयम्बिल तप

की आराधना हुई। आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के सह संयोजक श्री सुधीर जी सुराणा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। सैल्युर, पनरुटी, पल्लीपेट, गुडियातम, कुंबकोणम, तिरुवन्नामलै आदि स्थानों पर भी तप-त्याग का उत्साह रहा।

मुम्बई- गोरेगांव-पश्चिम तथा विरार-पश्चिम के जैन स्थानकों में परमपूज्य आचार्य भगवन्त की 100वीं जन्म-जयन्ती को आध्यात्मिक चेतना वर्ष के शुभारम्भ के रूप में जप, तप, त्याग, तपस्या, संकल्प ग्रहण, गुरु गुणगान, उनके जीवन व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश आदि अनेक धार्मिक प्रवृत्तियों के साथ मनाई गई। विरार में श्री प्रवीण जी कर्नावट, श्री बसन्त जी जैन एवं श्री केवलचन्द जी जैन ने एवं गोरेगांव में श्री दिलखुशराज जी जैन ने सभी उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संकल्प-पत्र भराये। व्रत-प्रत्याख्यान एवं धार्मिक प्रश्नोत्तर आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता करवाई। भाई-बहिनों ने 3-5 एवं 10 सामायिक, उपवास एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण कर आचार्यप्रवर को श्रद्धासुमन अर्पित किये। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री आनन्दराज जी तलेसरा, श्री बाबुलाल जी जैन 'उज्जवल' एवं श्री दिलखुशराज जी जैन ने आचार्यप्रवर के जीवन एवं संथारे पर विशेष प्रकाश डाला। श्री रतनराज जी भण्डारी, श्री मांगीलाल जी, श्री बसंत जी जैन, श्री कपूरचन्द जी जैन, श्रीमती शान्ता जी लुनावत, श्रीमती चेतना जी बोथरा, श्रीमती कुसुम जी कटारिया एवं श्रीमती हेमलता जी सांखला ने गुणगान में भजन, गजेन्द्र चालीसा प्रस्तुत की।

जलगाँव- प्रखर व्याख्यात्री महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा 3, मरुधर ज्योति महासती श्री मणिप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में स्वाध्याय भवन के प्रांगण में पूज्य गुरुदेव का जन्म-दिवस सामूहिक दया दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें 210 दया तथा एकासन, उपवास, आयंबिल एवं बड़ी संख्या में सामायिक-साधना की गई। खानदेश के फत्तेपुर, भड़गांव, जामनेर, भुसावल, धुलिया, बोंदवड़, वरणगांव, मुक्ताई नगर, कजगांव, चालीसगांव, नागद, पारोला, धरणगांव, वाकोद, शेन्दुर्णी, वरखेड़ी, तोंडापुर, मांडल, अमलनेर आदि स्थानों से लगभग 450 श्रावक-श्राविका तथा जलगाँव के गुरुभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे। महासती मण्डल एवं सुशील बहुमण्डल, स्वाध्यायी महिला मण्डल, भाऊ मण्डल, महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ, युवक परिषद् एवं ग्राम-नगर से पधारे हुए महानुभावों तथा श्री रतनलाल जी बाफना, श्री दलीचन्द जी चोरडिया, श्री कस्तूरचन्द जी बाफना आदि गुरुदेव के अनन्य भक्तों ने अपने श्रद्धाभाव अर्पित

किए। दोपहर को आचार्य श्री के जीवन पर आधारित भजन स्पर्धा का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन ने किया। 28-29 दिसम्बर को भी महासती जी के सान्निध्य में कार्यक्रम रखे गये जिसमें लगभग 200 बहिनों ने तीन-तीन सामायिक की आराधना की। अनेक श्रद्धालुओं ने महासती जी के मुखारविन्द से कई त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार किये। संकल्प-पत्र भराये गये। **इस वर्ष 100 स्वाध्यायी, 100 पक्खी-पौषध करने वाले, 100 अनुत्तरोववाई सूत्र कंठस्थ करने वाले तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है।** यहाँ निबन्ध प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, गाँव-गाँव में दया के कार्यक्रम, वक्तृत्व स्पर्धा के भावी कार्यक्रम भी तय किये गये है।

सिकन्द्राबाद- पं.रत्न श्री गौतममुनि जी 'प्रथम' के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त का 100वाँ जन्म-दिवस एवं श्री मिश्रीमल जी म.सा. का 26वाँ पुण्य-दिवस सामायिक-स्वाध्याय, एकासन एवं उपवास दिवस के रूप में मनाया गया। श्री गौतममुनि जी ने उद्‌बोधन में कहा कि दोनों महापुरुषों ने समाज एवं जिनशासन के उत्थान हेतु जीवनपर्यन्त प्रयास किया। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का सभी सम्प्रदायों के प्रति मैत्रीभाव था। श्रमणसंघ में एकता एवं शिथिलाचार पर अंकुश हेतु वे जिनशासन के सजग प्रहरी बनकर खड़े रहे। श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष ने कहा कि आचार्य भगवन्त जैसे महापुरुष विरले ही दिखाई देते है। संघपति श्री हस्तीमल जी मुणोत ने पुरानी स्मृतियों को याद करते हुए बताया कि सन् 1980 में आचार्य हस्ती का हैदराबाद के उपनगरों में 27 दिन प्रवास रहा। जन्म-जयंती के दो दिन पूर्व विहार करने पर मैंने संकल्प ले लिया कि जन्म-जयंती सिकन्द्राबाद में नहीं मनायेंगे तो मैं पारणा नहीं करूँगा। गुरुदेव आचार्य हस्ती का कोमल हृदय पिघल गया। हम लाभान्वित हुए, किन्तु चातुर्मास प्राप्ति में रायचूर संघ की पुण्यवानी प्रबल रही। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान एवं आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के सचिव श्री श्रीपाल जी देशलहरा ने आचार्य हस्ती के जन्म से महाप्रयाण पर्यन्त के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की। तेरापंथ समाज के प्रमुख समाजसेवी श्री प्रसन्न जी भण्डारी ने आचार्य हस्ती एवं आचार्य तुलसी को शताब्दी के समकालीन महापुरुष बताया एवं हर्ष प्रकट किया कि शताब्दी वर्ष पर चारों सम्प्रदाय सामूहिक रूप से आचार्य श्री के गुणगान प्रकट कर रहे है, यह हैदराबाद

की एकता एवं आचार्य श्री के पुण्य उपकारों का फल है। मंदिरमार्गी समाज के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी लुणिया ने प्रमोद प्रकट किया कि महापुरुषों के पुण्य प्रताप से सभी समस्याओं का हल स्वतः हो जाता है। श्री सज्जनराज जी कटारिया, कल्पना सुराणा , लीला वशिष्ठ, डायचंद डंक, श्री जैन श्रावक संघ-कोरा के अध्यक्ष जीतमल जी बेताला ने भी अपने भाव व्यक्त किये। इस अवसर पर लगभग 500 एकासन एवं व्रत-प्रत्याख्यान हुए। इस शुभ अवसर पर सिकन्द्राबाद श्री संघ की ओर से **50 लाख की लागत से क्लिनिक एवं कबूतरखाना हेतु 21 हजार की अमर मिति 60 दानदाताओं ने देने की घोषणा की। गुणानुवाद सभा में चारों सम्प्रदायों के गणमान्य व्यक्ति एवं 900 से 1000 के बीच श्रद्धालु उपस्थित थे।**

दूदू- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, दूदू द्वारा 28-29 एवं 30 दिसम्बर को एकासन दिवस, सामायिक दिवस तथा तप-दिवस के रूप में कार्यक्रम आयोजित किए गए। तीनों दिन सभी श्रावक-श्राविकाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। 30 दिसम्बर को **खरतरगच्छीय मुनि महारत्नसागर जी का प्रवचन हुआ तथा जयपुर से पधारे वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा** ने आचार्य श्री के जीवन-दर्शन एवं प्रसंगों पर मर्मस्पर्शी व्याख्यान दिया। सभी को सामूहिक प्रत्याख्यान कराए गए। **श्री लादूलाल जी कोठारी ने आजीवन शीलव्रत का संकल्प ग्रहण किया।** संघ अध्यक्ष श्री विनोद जी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

किशनगढ़- ज्ञानगच्छ के संत श्रद्धेय श्री प्रदीपमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी का त्रि-दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 28 दिसम्बर को 51 एकासन, 29 दिसम्बर को 300 सामायिक तथा 30 दिसम्बर को 100 आयंबिल, 21 पौषध एवं अनेक दया-संवर, उपवास के साथ सामायिक-साधना की गई। **अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत दो लाख सामायिक करने के प्रत्याख्यान लिये गये।** इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राजेन्द्र जी डांगी का प्रयास सराहनीय रहा।

मेड़ता सिटी- वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हस्तीमल जी डोसी, मेड़ता सिटी के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त का 100वाँ जन्म-दिवस साधना-आराधना के साथ मनाया गया। प्रातः सामायिक के साथ ही गुरुदेव के भजनों का कार्यक्रम हुआ। दोपहर 2 से 4 बजे तक आचार्य श्री के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गुणगान किया गया। श्रीमान् डोसी जी के अतिरिक्त श्री मंगलचन्द जी बागमार, निलेश मेहता,

खुशबू, वर्षा डोसी ने भी भजन प्रस्तुत किए। अन्त में हस्ती चालीसा के साथ सभा सम्पन्न हुई। उपवास, एकासन, आयम्बिल, बियासना आदि प्रत्याख्यान भी हुए।

भोपाल- पूज्य आचार्य भगवन्त का 100वाँ जन्म-दिवस यहाँ महामंत्र नवकार के जाप के साथ मनाया गया। प्रातः 8.30 से 9 बजे तक विभिन्न उपनगरों में श्रद्धानिष्ठ श्रावकों के निवास पर नवकार मंत्र का जाप हुआ। स्थानक भवन में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई, जिसमें संघ अध्यक्ष श्री यशवंत सिंह जी बांठिया, श्री फतेहचन्द जी बाफना एवं श्री प्रेमचन्द जी नाहर ने अपनी भावांजलि व्यक्त की एवं यह **निर्णय लिया गया कि प्रत्येक रविवार को प्रातः 9 बजे स्थानक भवन में सामूहिक प्रार्थना की जायेगी।**

विनम्र अनुरोध

माघशुक्ला द्वितीया दिनांक 17 जनवरी, 2010 को पूज्य आचार्य श्री हस्ती के 90 वें दीक्षादिवस को सामायिक दिवस के रूप में मनायें, उस दिन कम से कम पाँच सामायिक का संकल्प ग्रहण कर गुरुहस्ती के फरमान 'सामायिक स्वाध्याय महान्' को साकार करें।

-ज्ञानेन्द्र बाफना

संयोजक-आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति

'मानवीय आहार-शाकाहार' पर निबंध प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष में स्थानीय समिति एवं करुणा क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मानवीय आहार-शाकाहार' पर निबंध प्रतियोगिता का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। इस निबंध प्रतियोगिता में सभी आयु जाति-वर्ग के लोग भाग ले सकते हैं। निबन्ध की सीमा 2500 शब्द रहेगी। निबंध हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में मौलिक व प्रामाणिक होना चाहिए। निर्णायक समिति का निर्णय मान्य होगा। प्रतिभागी निबंध के साथ पासपोर्ट साइज का फोटो संलग्न करें। निबंध भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2010 है। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार- 3000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-1500 रुपये, तृतीय पुरस्कार 1000 रुपये एवं 10 सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक 500 रुपये प्रदान किये जायेंगे। निबंध भेजने का पता- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (आ.प्र.) पी. शांतिलाल गुन्देचा, 2-2-1075/20/A/7, तिलक नगर X Road, हैदराबाद-500013 (आ.प्र.), फोनः9247199931, 93911-

00974

'भ्रूण हत्या- एक जघन्य अपराध' निबंध हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

जैनाचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल(आ.प्र.) शाखा द्वारा 'भ्रूण हत्या-एक जघन्य अपराध' विषयक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है। इस निबंध प्रतियोगिता में सभी आयु जाति वर्ग के लोग भाग ले सकते हैं। निबन्ध की सीमा 2000 शब्द है। निबंध मौलिक, प्रामाणिक, वर्तमान में बढती इस समस्या के कारण एवं निवारण के बारे में लिखना होगा। प्रतिभागी अपने निबंध के साथ पासपोर्ट साइज का फोटो संलग्न करें। निबंध हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में लिख सकते हैं। निर्णायक समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा। विजेताओं को प्रथम पुरस्कार- 3000 रुपये, द्वितीय- 1500 रुपये, तृतीय- 1000 रुपये एवं 10 सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक 500 रुपये प्रदान किये जायेंगे। प्रतियोगिता का परिणाम आचार्य हस्ती आचार्यपद आरोहण वैशाख शुक्ला तृतीया गुरुवार दिनांक 18 मार्च 2010 को घोषित किये जायेंगे। निबंध भेजने का पता- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (आ.प्र.) मोनिका देशलहरा, प्लॉट न. 20, कार्तिक इन्कलिव, डाइमंड पाइंट के पास, सिखविलेज- सिकन्द्राबाद-09 (आ.प्र.), फोन : 093945-88300, 09440576314 *-श्रीपाल देशलहरा*

पालनपुर में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति शिविर का सफल आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा संचालित 'आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना' के अन्तर्गत छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों का 26 से 30 दिसम्बर 2009 तक धार्मिक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें सवाईमाधोपुर, जोधपुर, जलगाँव, चेन्नई, पांडिचेरी, पचाला, कुण्डेरा, कोटा, जयपुर, अलीगढ़, खेरली, नवसारी, भरतपुर, अलवर, पीपाड़, चोरू, भोपालगढ़, गंगापुर आदि अनेक क्षेत्रों से समागत 182 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रार्थना-ध्यान, प्रवचन, कालांश, प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम नित्य संचालित हुए एवं विशेष रूप से गुरु भगवन्तों के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ। संयम का महत्त्व, ब्रह्मचर्य का स्वरूप, विषय-भोगों से विरक्ति आदि विषयों पर

प्रवचन के माध्यम से गुरु भगवन्तों ने प्रभावी प्रेरणा की। फलस्वरूप सभी छात्रों ने गुरु-धारणा की। माला, रात्रि-भोजन त्याग, सप्त-कुव्यसन त्याग, ब्रह्मचर्य-पालन, जमीकंद त्याग आदि अनेक प्रत्याख्यान किये। शिविर के दौरान 30 उपवास, 2 बेले, 2 तेले, 120 एकासन हुए। सामायिक संवर की साधना नियमित रूप से हुई एवं शिविरार्थियों ने बड़ी स्नान का त्याग किया। शिविर में अध्यापन श्री मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्रीमती मोहिनीदेवी जैन-आलनपुर, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री सुन्दरलाल जी जैन-जोधपुर, श्री जिनेन्द्र जी जैन-जयपुर, श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन-जोधपुर ने किया।

विनम्र निवेदन

सूर्यनगरी-जोधपुर के हृदय स्थल नेहरू पार्क क्षेत्र में 55' x 120' भूखण्ड पर चार मंजिले सामायिक-स्वाध्याय भवन का द्रुतगति से निर्माण चल रहा है, उसी के पास में लगभग 50' x 115' का भूखण्ड क्रय किया जा रहा है। जिस पर संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यालय, सुविधायुक्त बीस कमरों का अतिथिगृह, श्राविकाओं की साधना हेतु अलग व्यवस्था, भोजनशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, ग्रन्थालय जैसी आधारभूत सुविधाओं के लिए पाँच मंजिले भवन का निर्माण प्रस्तावित है।

हम-सब संघ की प्रवृत्तियों के पोषण में अपनी सहभागिता एवं सहयोग की भावना के साथ आयें, ऐसी विनम्र अपेक्षा है। पूरे भवन पर नामकरण व अन्य चार मंजिलों पर अलग-अलग नामकरण, सहयोगी संस्थाओं के कार्यालयों पर नामकरण किया जाएगा।

इन विभिन्न सोपानों में आप अपने सहयोग की भावना रखते हैं तो निम्नांकित पते पर शीघ्र सूचित कर संघ-सेवा एवं संघ व्यवस्था में अपना महनीय योगदान करें, ऐसा विनम्र निवेदन है।- **मोफतराज मुणोत,** संयोजक, संघ संरक्षक मण्डल "मुणोत विला", वेस्ट कम्पाउण्ड फील्ड लेन, 63-के, भूलाभाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026 (महा.) फोन- 022-30645000 (का.), 23648004 (नि.), 022-23648419 (फैक्स)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा मनोनीत पदाधिकारी

कोषाध्यक्ष- श्री विमलचन्द जी चौपडा, जयपुर

संयोजिका, वीतराग ध्यान साधना केन्द्र- श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर

संयोजक, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान- श्री विनयचन्द जी डागा, जयपुर

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के नव पदाधिकारी

कार्याध्यक्ष- श्रीमती मंजू जी भंडारी-बैंगलोर

जयपुर के कत्लखाने के आधुनिकीकरण पर व्यय अनावश्यक

जयपुर नगर निगम द्वारा चैनपुरा स्थित बूचड़खाने को अत्यन्त आधुनिक बनाए जाने पर 100 करोड़ रुपये खर्च किए जाने की योजना है। इससे पशुओं के कत्ल की संख्या बढ़ेगी। यह राशि यदि कुछ उत्पादन एवं चारा जुटाने के लिए व्यय की जाए तो अधिक उपयुक्त होगा। -*घेवरचन्द गोदीका, जयपुर*

साधु-साध्वियों की सड़क-दुर्घटनाओं से समाज को चिन्ता

इन वर्षों में सड़क पर विहार करते साधु-साध्वियों की दर्दनाक मृत्यु की अनेक घटनाएँ हुई हैं। इन घटनाओं ने जैन समाज को चिन्तित बना दिया है। इन घटनाओं में वाहन चालकों की असावधानी तो कारण है ही, मारवाड़, गोड़वाड़, गुजरात से सटे इलाकों में हुई दुर्घटनाएँ यह आशंका भी उत्पन्न कर रही हैं कि कहीं यह कोई जानबूझ कर कराया जा रहा दुष्कृत्य तो नहीं। गुजरात सरकार ने विगत 3 वर्षों में सड़क-हादसों में साधु-साध्वियों की मौत के मामलों की जाँच के आदेश दिए हैं। जैन कॉन्फ्रेन्स सदस्य श्री भंवर सिंह चौधरी, भीलवाड़ा ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को इन सड़क-दुर्घटनाओं को रोकने एवं जांच हेतु पत्र लिखा है।

करुणा की कथाएँ भाग-2 पर वार्षिक प्रतियोगिता

चेन्नई- करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्थान विद्यालयों में करुणा क्लबों के माध्यम से अहिंसा, शाकाहार एवं करुणाभाव का प्रचार-प्रसार करता है। इस संस्था के द्वारा अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में करुणा की कथाएँ भाग-दो पुस्तक पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 3,00,000 रुपये के पुरस्कार दिए जायेंगे। 28 नवम्बर को तमिलनाडु का क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालयों के 500 प्राचार्य/शिक्षक एवं पशु कल्याण के क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। -*पदम टाटिया, महासचिव, चेन्नई- फोनः 25231714, 42061663*

संक्षिप्त समाचार

जयपुर- महासती सुमतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती मुदितप्रभा जी म.सा आदि ठाणा ने 25 दिसम्बर, 2009 को दोपहर 2 से 3 बजे जयपुर के केन्द्रीय कारागार में उद्‌बोधन दिया। महासती मुदित प्रभा जी ने अपने एक घण्टे के प्रवचन में मनुष्य-जीवन में कर्मों की महत्ता बताई कि बुरे कर्म के कारण कारागृह में बन्द होना पड़ता है। भविष्य में धर्म के मर्म को समझकर कषाय में न्यूनता लायेंगे तो बन्दी होते हुए भी कर्म काट सकते हैं। इस अवसर पर 400 कैदियों ने आजीवन पान, गुटखा, जर्दा, तम्बाखू, बीड़ी, सिगरेट एवं शराब के त्याग किए। यह कार्यक्रम मानव अधिकार आयोग में कार्यरत पुलिस अधिकारी सुश्री दीपा जी नाहर के प्रयत्नों से आयोजित हो सका। -*सुरेशचन्द कोठारी, सहसंयोजक*

जरखोदा (जिला-बून्दी)- कोटा चातुर्मास सम्पन्न कर महासती सौभाग्यवती जी म.सा. ठाणा-4 बून्दी, देई के मार्ग से विहार कर दिनांक 6.12.2009 को ग्राम जरखोदा पधारे। 11.12.2009 को स्थानीय महावीर भवन जरखोदा में दया संवर, एकाशन, आयम्बिल, उपवास, पंचरंगी, व्रत-नियम एवं 4 सामायिक के साथ भगवान् पार्श्वनाथ का जन्मदिवस मनाया गया। धर्मसभा में महासती सौभाग्यवती जी म.सा. ने प्रभु पार्श्वनाथ के नामकरण एवं भव वर्णन कर फरमाया कि पारस लोहे को सोना बनाता है, लेकिन प्रभु पारस तो परमात्म पारस बनाते हैं। उन्होंने जगत् को प्रतिबोध दिया। वे चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु महावीर के शासन में भी लोगों के वंदनीय हैं, कष्टों के हरणकर्ता हैं। महासती जी द्वारा आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष पर संकल्प लेकर मनाने की प्रेरणा दी गई। इससे पूर्व महासती सुश्री प्रभा जी म.सा. ने प्रभु पार्श्व के जीवन दर्शन को समझाया एवं गुण-स्मरण कराया। इस अवसर पर कोटा, सवाईमाधोपुर एवं विभिन्न ग्राम नगरों से श्री संघों ने पधार कर दर्शन एवं प्रवचन का लाभ लिया और त्याग-तप व्रत- नियमों के द्वारा पार्श्व जन्म जयन्ती दिवस को सफल बनाया।

जयपुर- श्री कन्हैयालाल हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में श्री जोगणिया माताजी (तह.बेगूं, जिला-चित्तौड़गढ़) में विशाल निःशुल्क नेत्र एवं शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन 17 जनवरी 2010 से किया जा रहा है। ऑपरेशन योग्य रोगियों की भर्ती दिनांक 17 व 18 जनवरी 2010 को ही होगी। इसमें आँखों के सभी प्रकार के रोगियों की चिकित्सा एवं उपयुक्त मरीजों के

निःशुल्क लैंस का प्रत्यारोपण किया जायेगा। हर्निया, मस्सा, पथरी, हड्डियों से संबंधित रोगों आदि के इलाज/ऑपरेशन एवं स्त्रियों की सभी बीमारियों के इलाज की व्यवस्था ख्याति प्राप्त महिला चिकित्सकों द्वारा की जाएगी। जो व्यक्ति ऑपरेशन योग्य नहीं होंगे उन्हें मुफ्त दवा एवं सलाह दी जायेगी। *सम्पर्क सूत्र- श्री पारसचन्द हीरावत, संयोजक, श्री कन्हैयालाल हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट, 1178, परतानियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.), फोन-0141-2578469*

हुबली- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के सान्निध्य में तपस्वी श्री विनोदमुनि जी म.सा. के 51 उपवास की दीर्घ तपस्या के उपलक्ष्य में तप अनुमोदना दिवस आयोजित किया गया। तप अनुमोदना में 21 दिनों तक चौबीसी का कार्यक्रम हुआ एवं प्रतिदिन विविध प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान हुए। आचार्य श्री के मुखारविन्द से 6 दिसम्बर को बल्लारी में मुमुक्षु सुश्री नवल चाणोदिया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

दिल्ली- यहाँ पर तीर्थंकर नगर, जैन नगर, दिल्ली में वृद्ध साधु-साध्वियों के स्थायी रूप से ठहरने हेतु श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ, दिल्ली के प्रदेशाध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश जी जैन के सत्प्रयत्नों से सिद्धालय (वृद्धाश्रम) का निर्माण हुआ है। इसी भवन में मानव सेवा हेतु औषधालय प्रारम्भ करने का भी प्रावधान है। सम्पर्क सूत्र- *श्री आनन्दप्रकाश जैन-09811383050*

भवानी मण्डी- श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन नवयुवक मण्डल, जोधपुर द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबंध का विषय है- **धर्म जीवन में क्यों जरूरी है?** इस विषय पर अपने विचार 4 पृष्ठों में लिखकर भेज सकते हैं। इस प्रतियोगिता में अधिकतम 35 वर्ष के युवा-युवती, भाई-बहिन ही भाग ले सकते हैं। निबंध प्रविष्टि के साथ अपनी उम्र का प्रमाण-पत्र भिजवाना अनिवार्य है। उक्त प्रतियोगिता में पुरस्कार- प्रथम-1101/-, द्वितीय- 501/-, तृतीय-251/- के दिए जायेंगे। निबन्ध प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2010 है। प्रविष्टि भेजने हेतु सम्पर्क सूत्र- *श्री नितेश नागोता जैन, महामंत्री, 175-जैन बोर्डिंग एरिया, भवानी मण्डी-326502 (राज.) फोन: 07433-222621, 09413101489, 09887126363*

घोड़ावट- उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी महाराज 'कमल' की 9 वीं पुण्य तिथि का भव्य आयोजन उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश', मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी 'गुणाकर' आदि सन्तों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर

प्रवचन, नवकार मंत्र जाप, विशाल जुलूस, नेत्र-दंत चिकित्सा शिविर, कंबल वितरण आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

बधाई/चुनाव

अजमेर- सुश्री अंकिता गांधी सुपुत्री श्रीमती मधु जी एवं श्री चन्द्रप्रकाश जी गांधी ने

बी.ई. (IT) 73.4 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर Accenture Ltd. Bangalore U.S.M N C) में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कैम्पस चयन के अनन्तर 11 दिसम्बर 09 को ज्वाइन किया है। सुश्री अंकिता की धार्मिक क्रियाओं में भी पूर्ण श्रद्धा एवं रुचि है।

अलीगढ़ (टोंक)- श्री पंकज कुमार जैन सुपुत्र श्रीमती विमला एवं श्री कपूरचन्द

जी जैन ने राजस्थान विश्वविद्यालय से "Bio-degradation of Petroleum compound by bactarial Population isolated from heavily polluted soil of high altitude" विषय पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है। वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नेट परीक्षा उत्तीर्ण हैं तथा मोदी विश्वविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ में बॉयोटेक्नोलॉजी के असिस्टेण्ट प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं। संघ समर्पित एवं आचार्यप्रवर की सेवा में निरत श्री सौभाग्यमल जी जैन व्याख्याता के आप भतीजे हैं।

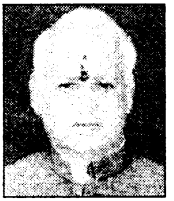

पाली- श्रीमान् केवलचन्द जी गुलेच्छा सुपुत्र श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा, पाली नगर परिषद् के दूसरी बार सभापति बने हैं। आपका पूरा परिवार रत्न संघ के प्रति समर्पित है। संघ आपके निर्वाचन पर गौरवान्वित है।

बजरिया (सवाईमाधोपुर)- श्री जितेशकुमार जैन पुत्र स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी

जैन (एण्डवा वाले) बजरिया, सवाईमाधोपुर का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) नई दिल्ली द्वारा आयोजित जून 2009 में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में लोक प्रशासन विषय में कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति (JRF) हेतु चयन हुआ है। आपने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की भी कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान-जयपुर के छात्र रहे हैं।

जोधपुर-श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें सर्व

सम्मति से अध्यक्ष-श्रीमती सुनीता जी मेहता, मन्त्री- अंजु जी भण्डारी, कोषाध्यक्ष-रेखा जी सिंघवी एवं परामर्शदाता- श्रीमती नलिनी जी भांडावत एवं श्रीमती रतन जी चोरडिया चुने गये। उपाध्यक्ष- श्रीमती प्रसन्न जी कोठारी, सुशीला जी गोलेछा एवं पुष्पा जी गांधी को मनोनीत किया गया।

चौथ का बरवाड़ा- सुश्री सपना जैन पुत्री श्री रमेशचन्द जी जैन कामदार का

यू.जी.सी. नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) जून 2009 में संस्कृत विषय में कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति (JRF) हेतु चयन हुआ है। सपना जैन ने जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. तथा एम.फिल् किया है। आप वनस्थली विद्यापीठ से बी.ए. ऑनर्स से स्वर्ण पदक विजेता भी रही हैं।

कोलकाता- श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी की बैठक में सर्वसम्मति से श्री सुमेरचन्द जी मेहता को अध्यक्ष चुना गया है। शेष कार्यकारिणी पूर्ववत् है। - *गुमानसिंह पीपाड़ा, महासचिव*

आवासनमण्डल, सवाईमाधोपुर- यहाँ 25 अक्टूबर को सम्पन्न निर्विरोध चुनाव में श्री अशोककुमार जी जैन बिलोता वाले को अध्यक्ष, श्री मोहनलाल जी जैन 'करेला' वाले को उपाध्यक्ष, श्री संजयकुमार जी जैन जुवाड़ वाले को मंत्री, श्री रमेशचन्द जी जैन 'घड़ी वाले' को कोषाध्यक्ष एवं श्री लल्लूलाल जी जैन को सहमन्त्री चुना गया है।

श्रद्धाञ्जलि

अजमेर- सुश्रावक श्री मोतीलाल जी कटारिया का 9 दिसम्बर, 2009 को

संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आप सरल, मृदुभाषी एवं धार्मिक प्रवृत्ति से ओतप्रोत थे। आपने अपने जीवन काल में 20 अठाई तप, प्रतिवर्ष चार-पाँच तेले, उपवास एवं दया व्रत किए। आप प्रतिदिन 5-7 सामायिक करते थे। रत्नसंघ में दीक्षित श्री कौशल्याजी म.सा. के आप सांसारिक चाचाजी थे। आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति आप पूर्ण आस्था से समर्पित थे। निधन के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी श्रीमती फूलबाई जी, भ्राता नेमीचन्द जी कटारिया (मंत्री) एवं सुपुत्रों के द्वारा उनके नेत्र अजमेर अस्पताल में दान किए गए। आप

अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। सम्पूर्ण कटारिया परिवार सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। *-नेमीचन्द कटारिया, मंत्री*

अहमदाबाद- वयोवृद्ध श्रावकरत्न श्री पूनमचन्द जी बरड़िया (मूल निवासी

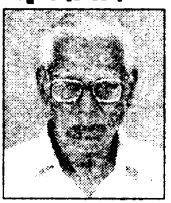

अलवर) का 88 वर्ष की वय में अरिहन्त स्मरण करते हुए संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रान्तीय अध्यक्ष थे। शान्त, मिनलसार, सेवाभावी, उदारमना सुश्रावक नित्यप्रति 7 सामायिक करते थे। प्रातः एवं सायंकाल प्रतिक्रमण, पक्खी को उपवास, आयम्बिल एवं नित्य डेढ पौरसी करते थे। सन्त-सतियों की सेवा एवं जीवदया उनकी अभिरुचि थी। राजस्थान एस.एस. जैन संघ, मणीनगर गुजराती उपाश्रय एवं राजस्थान उपाश्रय, शाहीबाग के वे संस्थापक ट्रस्टी थे। मणीनगर गुजराती उपाश्रय में कायमी आयम्बिल शाला आपके ही परिवार द्वारा चल रही है। आपने श्री घासीलाल जी पशु आश्रय गृह (पांजरापोल), सार्वजनिक दवाखाना (ओढव), आचार्य हस्तीमल वृद्धाश्रम (ओढव) प्रारम्भ किए जो मानवसेवा एवं पशु सेवा के अच्छे दृष्टान्त हैं। आप पूज्य घासीलाल जी म.सा. की शास्त्रोद्धार समिति में सक्रिय सलाहकार थे। 43 वर्ष पूर्व आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के चातुर्मास में एवं इस वर्ष संवत् 2066 के आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास में आपने खूब धर्मलाभ लिया। संघ के प्रति श्रद्धावान सुश्रावक अपने पीछे पुत्र श्री राजकुमार जी, सतीश जी, पाँच पुत्रियों एवं धर्मनिष्ठ पत्नी सहित भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गए हैं।

जलगाँव- उदारमना सुश्राविका श्रीमती प्रेमबाई जैन का 22 दिसम्बर, 2009 को

देहावसान हो गया। आप वात्सल्यमूर्ति, चतुर्विध संघ-सेवी एवं धर्म में दृढ़ निष्ठावती थीं। आचार्य हस्ती एवं आचार्य हीरा के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति निष्ठ सुश्राविका ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। 'अम्मापियरो' की उपमा से उपमित श्राविकारत्न का जीवन गुण-सौरभ से युक्त था। महिला मण्डल एवं जलगाँव में चलने वाले सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों हेतु उनका मुक्तहस्त से सदैव सहयोग रहता था। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से युक्त आपका आदर्श जीवन प्रभावशाली था। महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य श्री सुरेश दादा एवं श्री

रमेशदादा जैन की माता भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। श्री सुरेशदादा जैन ने युगमनीषी गुरु हस्ती की जैन विद्वान् बनाने की परिकल्पना को साकाररूप देकर 'श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ' को प्रारम्भ किया एवं आज भी उनका निरन्तर सहयोग मिल रहा है।

जोधपुर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री भंवरलाल जी मेहता का 1 दिसम्बर 2009 को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे तथा ज्ञान-क्रिया सम्पन्न सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तत्पर रहते थे।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ, उदारमना श्रावकरत्न श्री मोहनलाल जी

लोढ़ा का 88 वर्ष की आयु में 10 दिसम्बर, 2009 को स्वर्गवास हो गया। वे संघहितैषी श्रावक थे। उनकी सरलता, सादगी, उदारता, अनुकरणीय थी। धर्म साधना-आराधना में उनकी सदा भावना रही। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानकंवर जी धर्मपरायण हैं तथा पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित सुपुत्रों श्री उम्मेदमल जी , डॉ. सुमेरमल जी ने प्रशासनिक क्षेत्र में अच्छी ख्याति अर्जित की है।

जोधपुर- गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती किरणकंवर जी कुम्भट धर्मपत्नी स्व. श्री दीपचन्द जी कुम्भट का 1 दिसम्बर, 2009 को स्वर्गवास हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका थीं। रत्नसंघ की प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. की आप संसारपक्षीया सहोदरा बहिन थी। गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। घोड़ों के चौक स्थानक में नियमित धर्म-ध्यान करने वाली प्रमुख श्राविकाओं में आपका नाम था। संघ की प्रत्येक गतिविधि में आपका सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता था। आपकी उत्कृष्ट धर्मभावना का ही सुफल था कि जीवन के अन्तिम समय में तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 की चरण सेवा का लाभ प्राप्त हो सका। सादा जीवन उच्च विचार की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी।

शाहदा (महाराष्ट्र)- सुश्राविका श्रीमती कांताबाई धर्मपत्नी स्व. श्री संचालाल जी ललवाणी का 70 वर्ष की उम्र में 10 नवम्बर को निधन हो गया।

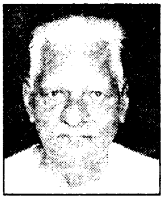

विशाखापट्टनम- सुश्रावक श्री पुखराज जी कोचर सुपुत्र श्री शिवराज जी कोचर का 30 अक्टूबर, 2009 को 83 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप नित्य पौरसी एवं प्रतिदिन 4 सामायिक करते थे। आपने जीवन में कुल 7 अठाई तप किए।

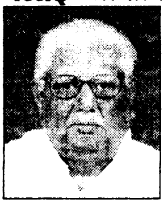

चेन्नई- श्री सागरमल जी पींचा (मरुधर में कुचेरा निवासी) का 78 वर्ष की आयु में 11 नवम्बर, 2009 को चेन्नई में स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी सुश्रावक थे। आप एक कुशल वक्ता थे। धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आपकी विशेष प्रतिष्ठा थी। आपका जीवन धर्म से ओतप्रोत था एवं सभी साधु संतों की सेवा में आप हमेशा अग्रणी रहते थे।

कोटा- सुश्राविका श्रीमती धीरज गौरी पत्नी स्वर्गीय श्री मनसुखलाल जी पतीरा निवासी दादाबाड़ी का निधन 27 नवम्बर, 2009 को संथारे सहित हो गया। आप नित्य रात्रि चौविहार-त्याग, चार-पाँच सामायिक तथा पाँचों तिथि को उपवास, एकासन आदि करती थीं। स्वर्गवास से 10-12 दिन पूर्व ही आपने अपने निवास स्थान जिसका मूल्य लगभग 50 लाख से अधिक है, को दादाबाड़ी जैन स्थानक हेतु समर्पित किया।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका दीर्घतपसाधिका श्रीमती कल्याणकंवर सिंघवी धर्मपत्नी सुश्रावक स्व. श्री छगनमल जी सिंघवी का 77 वर्ष की आयु में 14 दिसम्बर 2009 को स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं मृदुभाषी थे। सुश्राविका ने सतरह उपवास की तपस्या, अठाई की तपस्या की। जमीकन्द, रात्रिभोजन, कुशील सेवन आदि के अनेक वर्षों से त्याग थे। नित्य 5 सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी। पिछले तीस वर्षों से शीलव्रतधारी थी। आप अपने पीछे 2 पुत्र एवं 3 पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

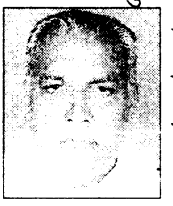

बालोतरा- गुरुभक्त युवारत्न श्री गौतमचन्द जी चौपड़ा का 25 दिसम्बर, 2009 को आकस्मिक देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित आपका जीवन धर्मनिष्ठ था। उपाध्यायप्रवर के बालोतरा चातुर्मास के दौरान आपके परिवार की अहर्निश सेवाएँ अनुकरणीय रहीं। सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान

सराहनीय है। आप चतुर्विध संघ के प्रति समर्पित थे। सम्पूर्ण चौपड़ा परिवार संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यों में अग्रणी रहा है।

जोधपुर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री महावीर जी खिंवसरा सुपुत्र श्री भंवरलाल जी

खिंवसरा का युवावय में 25 दिसम्बर, 2009 को आकस्मिक निधन हो गया। आपका जीवन वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से युक्त था। युवक परिषद् की गतिविधियों में आपका तन-मन-धन से सदैव सहयेाग रहता था। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहे। खिंवसरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत तथा सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

कोलकाता- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती कंचन जैन (चौधरी) पत्नी श्री सम्पत

राज जैन(चौधरी) (पीपाड़ सिटी-राजस्थान) हाल निवासी कोलकाता का 22 दिसम्बर, 2009 को स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्म के प्रति अगाध आस्था व भक्ति थी। आप मधुर व्यवहारी एवं निष्कपट थीं। धार्मिक प्रवृत्तियों में आपकी अगाध रुचि थी। चन्दनबाला महिला मण्डल के कार्य कलापों में आप बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती लाल कंवर धर्मपत्नी स्व. श्री हुकमचन्द जी लोढ़ा का

79 वर्ष की उम्र में 21 दिसम्बर, 2009 को देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ, वात्सल्यमूर्ति, उदार, मिलनसार होने के साथ त्याग-तपस्या में अग्रणी थीं। आपने मासखमण-उपध्यान एवं कई अठाइयाँ कीं। आपका आचार्यप्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के प्रति विशेष श्रद्धा भाव था। आप अपने पीछे तीन पुत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

जोधपुर- सुश्रावक श्री जबरचन्द जी कोठारी का 19 दिसम्बर, 2009 को स्वर्गगमन हो गया। आप दृढ़धर्मी, सेवाभावी और शालीनता की प्रतिमूर्ति थे। प्रामाणिकता के कारण व्यावसायिक जगत में आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। पीपाड़शहर में पधारने वाले ज्ञान-क्रिया सम्पन्न सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पावन प्रेरणा

से आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी बने एवं वर्षों तक पर्युषण के समय सेवाएँ दीं। सादा जीवन उच्च विचार की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थीं। आपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप अपने पीछे अपने पुत्र पदमराज, विनीत एवं नवनीत कोठारी के भरे पूरे परिवार को छोड़कर गए है।

भदेसर- सुश्रावक श्री मदनलाल जी सरूपरिया का 78 वर्ष की वय में 27 दिसम्बर 2009 को प्रतिदिन के नियमानुसार चारों आहार के त्याग प्रत्याख्यान के बाद आकस्मिक निधन हो गया। आप सदैव रात्रि-संवर करते थे और माह में 6 पौषधयुक्त उपवास, दीपावली पर तेला, प्रतिदिन 5-6 सामायिक एवं अन्य तपस्याएँ निरन्तर चलती थीं। महास्थविर श्री शान्ति मुनि जी म.सा. के आप संसारपक्षीय चचेरे भाई थे।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती विजयकंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री शिवकरण जी

मेहता का 83 वर्ष की उम्र में 22 दिसम्बर, 2009 को स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका ने गुरुदेव की प्रेरणा से 35 वर्ष की उम्र में बारह व्रत अंगीकार कर लिए थे। आचार्य हस्ती एवं हीरा के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। सुश्राविका का त्यागमय जीवन परिवारजनों के लिए प्रेरणादायक रहा। आप अपने पीछे तीन पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- गुरुभक्त सुश्रावक श्री जवरीलाल जी लोढ़ा का 64 वर्ष की वय में 28

दिसम्बर 09 को देहावसान हो गया। आप चतुर्विध सेवा में अग्रणी थे तथा आतिथ्य सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप सरल, सहज स्वभावी एवं मिलनसार थे। आप नित्यप्रति सामायिक एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेते थे।

भवानी मण्डी- श्री बापूलाल जी पामेचा का 78 वर्ष की वय में 15 नवम्बर, 2009 को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन धर्ममय एवं सादगीयुक्त था तथा सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धानिष्ठ थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

698 श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, स्वाध्याय भवन, अजमेर (राज.)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12318 श्री प्रेमचन्द जी भंडारी, सदर बाजार, आलोट, रतलाम (म.प्र.)
12319 श्री गौरव कुमार जी शाह, अमर सिंह मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन (म.प्र.)
12320 श्री ओमप्रकाश जी जैन, बर पाड़ा, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
12323 श्रीमती ममता जी गोलछा, गोलछा एण्ड कम्पनी, सदर बाजार, राजनांदगाँव (छ.ग.)
12325 श्रीमती वीनू जी जैन, पुरोहितजी का बाग, गोपीनाथ मार्ग, एम.आई.रोड़,जयपुर (राज.)
12328 श्री नेमीचन्द जी दरडा, जैन मंदिर के पास, गोटन स्टेशन, नागौर (राज.)
12329 श्री सुमेरमलजी वैद, पोस्ट–धनारीकल्ला, वाया–लवेरा बावड़ी, जिला–जोधपुर (राज.)
12330 Shri Rakesh ji Sethia, Sowcarpet, Chennai (T.N.)
12331 श्री मुकेश भाई जी कोठारी, हरिहर मंदिर के पास, लकड़गंज, नागपुर (महा.)
12332 श्रीमती प्रमिलाजी बम्ब,ताम्बी हाऊस,पितलियों का चौक,जौहरी बाजार,जयपुर (राज.)
12333 श्री आरोग्य भारती कल्याण कारकमू, महावीर पार्क, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)
12334 श्री ज्ञानचन्द जी श्री श्रीमाल, 11/169, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
12335 श्री प्रिन्स जी जैन, 33/387, सेक्टर-3, प्रताप नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)
12336 श्री सुकनराज जी धारीवाल, देव-पुष्कर, डी-97, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राज.)
12337 श्रीमती स्वप्ना जी डागा, राधाकिशन चाल,मु.पोस्ट–मलकापुर,जिला–बुलढाणा(महा.)
12338 श्रीमती पुष्पा जी सिंघवी, 8/112, दाधीच नगर, बड़ले के पास, जोधपुर (राज.)
12339 डॉ. शान्तिचन्द जी सुराणा, 17/383, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)
12340 श्री रमेशजी सेठिया, हरिओम नगर विस्तार, 18 ई चौ.हा.बोर्ड के पास, जोधपुर (राज.)
12341 Shri KamalChandji Bhandari,Plot No.303,Kolkata (W.B.)
12342 Shri M. Pawan Kumar ji, Coimatore (T.N.)
12343 श्रीमती सरिताजी जैन(मूथा),नवरंग, गोल प्याऊ के पास, पीपाड़सिटी, जोधपुर (राज.)
12344 श्री रामकिशन जी सोनी, सुनारों की बास, रियां सेठा की, जोधपुर (राज.)
12345 श्री मनीषकुमार जी जैन, सुराणा अक्षय अपार्टमेन्ट,गजानन मंदिर रोड, चन्द्रपुर (महा.)
12346 Shri L. Kewal Chand ji Vora, Bangalore (Karnataka)
12347 Shri Mahesh ji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
12348 Shri Susheel ji Dhariwal, Bangalore (Karnataka)
12349 Shri Uttam Chand ji, Coimbatur (Tamilnadau)
12350 Shri I.U.Sancheti ji,Irla Bridge,Andher(W),Mumbai (Mh.)
12351 Shri Mahendra P. Chopada ji,Goregaon(E),Mumbai (Mh.)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12321 Shri Gyan Chand ji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
12322 Shri Jawari Lal ji Lunkud, Chennai (Tamilnadu)
12324 श्री नवीन जी बैद, चित्रा आईस फैक्ट्री के पास, भीनासर, बीकानेर (राज.)
12326 श्री राजेश जी जैन, 1/176, हाउसिंगबोर्ड, काला कुआँ, अलवर (राज.)
12327 श्रीमती संगीता जी जैन, चन्द्रनगर कॉलोनी, बाल्टी फैक्ट्री के सामने,जयपुर (राज.)
12352 श्री उत्कर्ष जी धींग, बम्बोरा, जिला–उदयपुर (राज.)
12353 श्री अखिलेश जी दानी, सदर बाजार, पोस्ट–डूंगला, जिला–चित्तौड़गढ़ (राज.)
12354 श्रीमती रेखा जी जारोली, तहसील रोड, पोस्ट–डूंगला, जिला–चित्तौड़गढ़ (राज.)
12355 श्री महेन्द्र जी सिंघवी, जाटाबास, मोतीचौक, जोधपुर (राज.)
12356 श्री महेन्द्र जी बैंगाणी, पावटा, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

21000/- श्री चेतनप्रकाश जी, शान्तिलाल जी डूंगरवाल, बैंगलोर एवं शान्तिलाल जी ज्ञानचन्द जी बोहरा, चेन्नई , सौ.कां. प्रिंयका के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री मदनराजजी, पदमराज जी, पवनराज जी, सज्जनराज जी मेहता (जोधपुर निवासी) हाल निवासी हनुमन्त नगर, बैंगलोर, अपनी माताश्री श्रीमती देशान्त कंवर मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री उगमराज जी बागरेचा मेहता के 81 वर्ष की उम्र में 28 नवम्बर, 2009 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

3500/- श्री सोहनलाल जी पितलिया एवं श्रीमती सुशीलादेवी जी सपरिवार, रतलाम, चिरंजीव विक्रमकुमार जी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में पूज्य आचार्य श्री के मुखारविन्द से गुरु आम्नाय एवं पालनपुर में आध्यात्मिक चेतना वर्ष पर सप्रेम भेंट।

2100/- बसंतमल जी महावीरमल जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती कल्याणकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री छगनमल जी सिंघवी के 14 दिसम्बर, 2009 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री संदीप कुमार जी, श्री राहुलकुमार जी चौपड़ा, बालोतरा, जिला–बाड़मेर (राज.), अपने पूज्य पिताजी श्री गौतमचन्द जी चौपड़ा का दिनांक 25.12.2009 को देहावसान होने की पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री नरेशचन्द जी, प्रमोदकुमार जी, रविन्द्र कुमार जी मेहता, जयपुर, पूज्य माताजी श्रीमती विजयकंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री शिवकरण जी मेहता का 22.12.09 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री प्रकाशमल जी, सुनील कुमार जी, हर्ष जी बोथरा, चेन्नई, आध्यात्मिक चेतना वर्ष में पूज्य आचार्य श्री के पालनपुर में दर्शन लाभ करने के खुशी में भेंट।

1100/- श्रीमती केशर कंवर जी धारीवाल, संदीप, मंजु, सोनू, ध्रुव धारीवाल, जोधपुर, श्रीमान् मूलराज सा धारीवाल की 7 जनवरी, 2010 को पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री प्रसन्नराज जी, दिनेशकुमार जी बोथरा मेहता, धोबीपेट–चेन्नई, सौ.कां. सुधा सुपौत्री श्री प्रसन्नराज जी सुपुत्री श्री दिनेश जी बोथरा मेहता, चेन्नई का शुभ विवाह चि. राकेश जी

पोखरणा, चेन्नई के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री जयप्रकाश जी धर्मेन्द्र जी लोढ़ा, जयपुर, पूजनीय माता श्रीमती लालकँवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री हुकमचन्द जी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री उत्तमचन्द जी कमला देवी जी छाजेड़ (किशनगढ़ वाले) विजयनगर, आचार्य भगवन्त के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री मन्नालाल शांतिदेवी जी बोथरा, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

1001/- श्री पंकज कुमार, सरिता, पीयूष एवं भाग्यश्री बोथरा, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर *1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।*

1001/- श्री कौशल, पूर्णिमा, रजत एवं भाविका बोथरा, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

1000/- श्री सागरमल जी, अशोककुमार जी, विनोदकुमार जी, सुभाषजी कोठारी, ब्यावर (राज.), चि. प्रियंक सुपौत्र श्रीमती मीनादेवी सागरमल जी कोठारी सुपुत्र श्रीमती कमलेश जी अशोक कोठारी, जयपुर के शुभविवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री चन्द्रप्रकाश गाँधी, अजमेर, अपनी सुपुत्री सुश्री अंकिता गाँधी के B.E.-2009 उत्तीर्ण करने एवं सोफ्टवेयर इंजीनियर पद पर नियुक्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री भंवरलाल जी खिंवसरा, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री महावीर खिंवसरा के 23.12.2009 को देहावसान हो जाने पर उनकी स्मृति में भेंट।

501/- श्री केवलचन्द जी पुंखराज जी जैन (जरखोदा वाले), जयपुर चि. देवेन्द्र कुमार जी जैन सुपुत्र श्री केवलचन्द जी जैन (जरखोदा वाले) का शुभविवाह दिनांक 01/12/2009 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री प्रभुचन्द जी अंबानी सुपुत्र स्व. श्री चंचलचन्द जी अंबानी, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

501/- श्री नेमीचन्द जी नाहर, जयपुर, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री देवेन्द्रनाथ जी, कमला जी, श्री लोकेन्द्रनाथ जी, ऋतु जी मोदी-जोधपुर, पूजनीय हुकमनाथ जी एवं कृष्णा जी मोदी की क्रमशः 28 वीं तथा 7 वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप भेंट।

501/- श्रीमती विमला जी एवं श्री कपूरचन्द जी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-टोंक, अपने सुपुत्र श्री पंकज कुमार जी जैन को पी.एच्-डी की उपाधि प्राप्त होने एवं मोदी यूनिवर्सिटी लक्ष्मणगढ़ में सहायक-प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री पदमचन्द जी सुभाषचन्द जी कटारिया, पीपाड़सिटी-जोधपुर, श्रीमती लीलाबाई जी कटारिया के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री गौतम जी चोरडिया, चेन्नई, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

500/- श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, जोधपुर, श्रीमती रेणुका-सुरेन्द्र सदावत की सुपुत्री सौ. कां. डॉ. स्निग्धा का शुभविवाह चि. डॉ. रोबिन जी भण्डारी सुपुत्र श्रीमती रेखा-डॉ.

सुरेशचन्द जी भण्डारी, जोधपुर के साथ 9.11.09 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

500/- श्री मांगीलाल जी, सुरेन्द्रकुमार जी, लोकेश जी कुम्भट, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

500/- श्री दिलीप कुमार जी नागौरी, उदयपुर, प्रधानाध्यापक पद पर पदोन्नति एवं नवीन गृह में मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महावीरप्रसाद जी सुरेश कुमार जी जैन, इन्द्रगढ़, चि. पंकज जैन सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जी जैन का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री उम्मेदमल जी सुरेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर, चि. दीपक संग अंकिता का शुभविवाह दिनांक 29 अक्टूबर 2009 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रविन्द्रराज जी ज्ञानचन्द जी दुग्गड मेहता, कोयम्बटूर श्रीमती विजयलक्ष्मी दुग्गड के सुपौत्र द्वारा उपधान तप एवं भाई सुमित जी मेहता के अठाई की तपस्या का सानन्द पारणा होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महावीरचन्द जी, गौतमचन्द जी, पुष्पराज जी, दिलीप जी भंडारी सुपुत्र श्री उगमराज जी भंडारी, पीपाड़सिटी-जोधपुर, श्रीमती पुष्पराज जी भंडारी की अठाई तपस्या का पारणा सानन्द सम्पन्न होने उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री गौतमचन्द जी, नवरतनमल जी, रजत जी ओस्तवाल, पीपाड़सिटी-जोधपुर, श्रीमती आशा जी धर्मपत्नी श्री नवरतनमल जी ओस्तवाल की अठाई तपस्या का पारणा सानन्द सम्पन्न होने उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री विजयराज जी, संजयकुमार जी, खुशहाल जी पारख, पीपाड़सिटी-जोधपुर, खुशबू जी के अठाई तथा श्रीमती कौशल्या देवी जी के तेला व राखी जी के प्रथम बार बेले की तपस्या का पारणा सानन्द सम्पन्न होने उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महावीरचन्द जी, सुनयना जी मेहता, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्मदिवस पर श्रद्धासमर्पण के साथ भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु प्राप्त साभार

500/- श्री उम्मेदमल जी सुरेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर, चि. दीपक संग अंकिता का शुभविवाह दिनांक 29/10/2009 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ बजरिया शाखा को प्राप्त साभार

501/- श्री केवलचन्द जी पुखराज जी जैन-जरखोदा वाले हाल निवासी जयपुर, चि. देवेन्द्र कुमार जैन पुत्र श्री केवलचन्द जी जैन के दिनाँक 1.12.2009 को शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

अखिल भारतीय शिक्षा दीक्षा फण्ड में प्राप्त साभार

31000/- श्री सज्जनराज जी दुग्गड, चेन्नई एवं परिवारजन (श्री शान्तिलाल जी, श्री सम्पतराज जी, श्री निर्मलकुमार जी, श्री विनोदकुमार जी, श्री दर्शनकुमार जी) की ओर से श्रीमती मैनादेवी बोहरा एवं कंवर साहब श्री दुलीचन्द जी बोहरा की पीपाड़ में 28 मई, 2009 को सम्पन्न भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48,000/- गुप्तदान, चेन्नई (तमि.)

12,000/- गुप्तदान, बैंगलोर (तमि.)

12,000/- श्री प्रकाशचन्द जी रंगलाल जी झामड़, नांदूरा (महा.)

12,000/- श्री शांतिलालजी, महावीरचंदजी, सुनीलकुमारजी लोढ़ा नाडसर, बैंगलोर (तमि.)

12,000/- श्री विक्रम जी रमेश कुमार जी मोहनोत, जलगाँव (महा.)

12,000/- श्रीमती सूरजबाई हस्तीमल जी भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर, श्री चांदमल जी भंसाली के मासखमण के उपलक्ष्य में भेंट

12,000/- श्री सुभाषचन्द जी बेगानी, कोलकाता, श्री मोहित द्वारा C.A. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

माघ कृष्णा 14	गुरुवार	14.01.2010	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ला 2	शुक्रवार	17.01.2010	आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 90वां दीक्षा दिवस
माघ शुक्ला 8	शनिवार	23.01.2010	अष्टमी
माघ शुक्ला 14	शुक्रवार	29.01.2010	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8	शनिवार	06.02.2010	अष्टमी

आवश्यक सूचना

श्रद्धालु भक्तों को सूचित किया जाता है कि दीक्षा के नाम पर, पातरों की व्यवस्था के नाम पर, आचार्यश्री एवं सतों के स्वास्थ्य के नाम पर अथवा अन्य किसी कार्य के नाम पर कोई भी व्यक्ति आपसे सहयोग मांगता है तो कृपया सावधान रहें। संघ अपने स्तर पर व्यवस्था करता है एवं करने में सक्षम है। आप किसी भी व्यक्ति को संघ, संतों या दीक्षा के नाम पर कोई भी राशि नहीं दें। ऐसी किसी सूचना पर तुरन्त संघ कार्यालय एवं संघ महामंत्री से सम्पर्क करें। कृपया अपने परिचय में आने वाले सभी गुरु भाइयों एवं संघ के सदस्यों को सतर्क करें।

-पूरणराज अबानी

महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मो. 9314710985

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

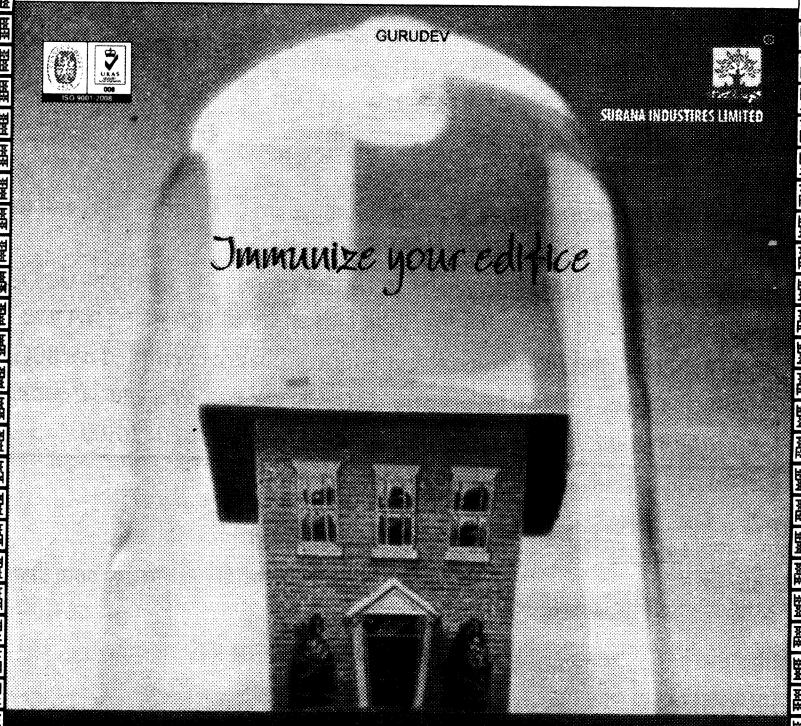

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

● Excellent Bond Strength ● Greater resistance to Corrosion ● Superior Weldability ● Excellent Ductility and High Bendability ● Uniform properties throughout length ● Enhanced Resistance to Fire ● Ability to withstand Earthquakes ● Bigger savings in steel consumption (almost 18%) ● Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

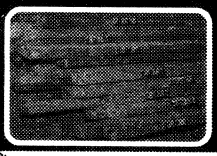

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

IS:1786

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

Prithvi Exchange®

Authorized Dealer II

BEST RATES IN INDIA

WESTERN UNION MONEY TRANSFER

* Send Money abroad
* Drafts/Swift/TT...

- We buy and sell Foreign Currencies, Travellers Cheques and Prepaid Foreign Currency Cards at attractive prices.
- We do Fund Transfer abroad - T.T.Swift etc.
- We issue Foreign Currency drafts.
- We deal in more than hundred currencies.
- Free Door Step Service.
- Western Union Money Transfers.
- Travel Insurance.

Chennai :	Bangalore :	Hyderabad :	Goa :
(044) - 4343 4242	(080) - 22103267	(040) - 2341 4333	(0832) - 2231 190
2855 3185	22103714	2341 4777	2425 212

For online rates 24x7 - www.prithvifx.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 1 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2010 ★ माघ 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।